दुःखदग्धा

गायत्री जोशी

राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

प्रकाशक
राजस्थानी ग्रन्थागार
प्रकाशक एव पुस्तक विक्रेता
सोजती गेट जोधपुर
दूरभाष (का) 23933
(नि) 32567

प्रथम सस्करण 1996

मूल्य 75 00 रुपये मात्र

टाइपसैटिंग
सूर्या कम्प्यूटर्स जोधपुर

मुद्रक
लादा ऑफसेट लि

समर्पण

अपनी सखि को, जो न जाने
दुनियां की इस भीड़ में
कहाँ खो गई।

—गायत्री जोशी

आमुख

एक लम्बे समय के उपरान्त 'दु खदग्धा' उपन्यास की नायिका मणि की झोली मे, दुनिया की हर खुशी मुस्कुराई थी। वह अपनी खुशिया समेटने मे व्यस्त थी, तभी नियति उसकी झोली की ओर लपकी। झोली पलट गई। खुशिया बिखर गई। उसे जी जान से प्रेम करने वाला उसका जीवन साथी, उसे रुला कर, सदैव के लिए बिछुड गया। उसके पतिविहीन जीवन से एक-एक सम्बन्धी कटते गये औ वह अपनो की इस भीड मे अनजानी अकेली हो गई।

यह नारी का ही दुर्भाग्य है कि जहा वह विधवा हुई, वही उसके जीवन की आवश्यकता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है। यदि बच्चे छोटे हैं तो अवश्य उसका जीवन महत्वपूर्ण है, अन्यथा युवा, विवाहित बच्चो के लिए उसका कोई महत्त्व नही है।

नारी के प्रति समाज के इस सौतेले व्यवहार को देखकर, मन मे कई प्रश्न कौंधते हैं आखिर कब तक नारी का शोषण होता रहेगा? कब तक 'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति' के भ्रम मे फसी रहेगी। कब तक अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी का लेबल नारी के बहुमुखी व्यक्तित्व पर चिपका रहेगा? क्यो नही हमारा समाज उसे बेटी, बहिन पत्नी और माँ के अतिरिक्त एक सफल मानवीय व्यक्तित्व के रूप मे स्वीकारता है?

'दु खदग्धा' उपन्यास की नायिका के चरित्र से कोई यह अर्थ निकालने की भूल न करे कि मैंने वृद्धा, विधवा जननी के लिए स्वर्ण रत्न जडित सिंहासन की माग की है। बल्कि मैंने तो उसके लिए मातत्व के सिंहासन की माग करते हुए, यह चाहा है कि वह अपने जीवन की साध्य वेला मे, अपने ही अश के द्वारा एक फालतू वस्तु न बना दी जाये।

शायद कभी हम 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जैसे भारतीय सस्कृति के मूलमन्त्र का सही अर्थ समझ सकें।

—गायत्री जोशी

दुखदग्धा

जब कभी प्रसव वेदना सी सृजन पीडा में मेरा मन आकठ डूब जाता है तो मैं खिडकी से लगी अपनी स्टडी टेबल की कुर्सी खीच लेता हूँ। आज भी ऐसा ही हुआ। कुछ लिखने का निश्चय करक मैं वहाँ बैठ गया। मैनें मज पर पडे कोरे पृष्ठों को लिखने के लिए अपनी ओर खिसकाया। उन्हे जमा कर जब मैनें अपनी लेखनी के अम भाग से पृष्ठ को छुआ तो सामने खुली खिडकी से हवा का एक तज झोंका भीतर कमरे में आया। पृष्ठों मे हलचल हुई वे कापे। मुझे लगा जैसे लेखनी के स्पर्श से पृष्ठ सिहर गये हो। लेखनी और पृष्ठ के सयोग की इस मधुर कल्पना ने मेरे मन के मरुस्थल को अनेको जल स्रोतों का उद्‌गम स्थल बना दिया। मैनें प्रसन्न मन से श्री गणेश करने के लिए अपनी लेखनी को उठानी चाही किन्तु आश्चर्य ! महान् आश्चर्य। मेरी लेखनी ज्यों की त्यों अपनी पूर्व मुद्रा में धरी की धरी रह गई। सृजन विषय भी मेरी चेतना को पगु बना न जाने किस अदृश्य की ओट में जा छुपा। अभी कुछ ही क्षणों पूर्व जहाँ मेरा मन लेखन की प्रसव पीडा से खड खड होकर लहूलुहान हो रहा था वहाँ अब पूर्णतया शाति छाई थी। मेरे मन का कैनवास चित्र की रूप रेखाआ को बनाने में असमर्थ आश्चर्य के दलदल में धसा जा रहा था। स्मृति भग से पीडित विक्षिप्त मैं मौन भाव से अपने समक्ष फैले अनन्त शून्य में देखता रहा।

धीरे धीरे मेरे कमरे में साझ का धुधलका उतरने लगा और उउसी के साथ मैने देखा धुधली धुधली रेखायें मरे कमरे में घुस रही थी। मेरी अचम्भित व

भयभीत आखे उस धुधलक में कुछ खोजने का प्रयत्न करती है। धीमें धीमें यह धुधलापन कुहासे सा परे हटने लगा और अब वे धुधली रेखाए एक आकृति के रूप में स्पष्ट दिखलाई पडने लगी। मैं भयभीत सा उस आकृति को देखने लगता हूँ। मेरे मन के असख्य प्रश्न उस आकृति विशेष के चारों ओर नर्तन करने लगते हैं। यह रहस्यमय व्यक्तित्व मेरे कमरे मे कैसे आ गया ? कही यह कोई प्रेत देह तो नही ? इस विचार के उपजते ही मैने उपनी दृष्टि उसकी ओर से हटा झुके झुके ही कुर्सी से उठने की कोशिश की। लेकिन लगा जैसे मैं कुर्सी से चिपका हुआ हूँ। गोंद की कल्पना के कारण मैनें चिपचिपाहट को अनुभव किया। अब मैं यहाँ से बाहर कैसें निकलू ? इस चिन्ता में मैं लीन था कि मुझे सुनाई पडा उठ कर बाहर जाने की सोच रहे हो ? इतना सुनते ही मैं सूखे पत्तों सा कापने लगा और मेरी जीभ तालू से चिपक गई। कुछ देर के मौन के पश्चात उसने पुन पूछा मेरे प्रश्न का उत्तर नही दिया ?

इस बार मैनें उसे ध्यान से देखा। मुझे उसके नारी होने का भ्रम हुआ। मैनें पुन भय जिज्ञासा और कौतूहल से उसे देखा। मेरा अनुमान ठीक निकला। वह एक नारी आकृति ही थी। तभी मैं चौंका लेकिन यह मेरे कमरे में क्यों आई है ? यदि मेरी पत्नी इधर आ निकली तो मैं उसकी शकाओं की लपलपाती जिह्वा का सामना कैसे कर पाऊगा कि अचानक उसके प्रश्न से मेरा ध्यान भग हुआ लेखक महोदय ! तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर नही दिया ?

तो क्या यह जानती है कि मैं एक लेखक हूँ। मैनें सोचा।

मुझसे डरते हो ?

मैं भला तुमसे क्यों डरने लगा ? अपने विचारों से बाहर निकल कर मैनें उसे पहली बार उत्तर दिया । हालाकि उत्तर देते समय मैं काप गया था।

तुम्हारे गले की भरभराहट तुम्हारे मन के भय को स्पष्ट व्यक्त कर रही है। खैर तुम डरो नहीं । उसने मुझे आश्वस्त किया ।

अब मैने निडर होकर उसकी ओर देखा। वह एक नारी आकृति से अधिक कुछ नहीं थी। मुझे अपना निरीक्षण करते देखकर उसने पूछा तुम्हारा मन मेरा परिचय पाना चाहता है ?

नही । मैं या मेरा मन तुम्हारे परिचय के प्रति कोई रुचि नही रखत है। मैनें उसके प्रति अरुचि दिखलाई।

तो भी मैं तुम्हें अपना परिचय देना चाहती हूँ। इतना कह वह क्षण भर के लिए रुकी। शायद मेरे विचार जानने के लिए । लेकिन मुझे चुप देखकर उसने आगे कहना चालू किया।

मैं एक नारी हूँ— ?

नारी हो तो मुझ पुरुष के कमरे में क्या कर रही हो ? न चाहते हुए भी मैनें बीच ही में तेजी से पूछ डाला।

मेरा प्रश्न सुनकर वह हसी।मैं चौंका। फिर धीमे से मुस्कुराते हुए उसने कहा तुम्हारा लेखकीय आकर्षण ही मुझ तुम्हारे पास खींच लाया।

मेरे प्रति आकर्षित होने का कारण— ?

तुम अच्छा लिखते हो। उसने मेरी बात को काटते हुए कहा।

मैं कोई महान लेखक अथवा प्रकाण्ड विद्वान नहीं हूँ। मैं तो मात्र स्वान्त सुखाय के लिए लिखता हूँ।

इस बार मेरे सुख के लिए लिखो।

तुम्हारे सुख के लिए ? मैनें आश्चर्य से पूछा।

हा मुझे सुख देने के लिए लिखो।

तुम्हारे सुख के लिए मैं क्या लिखू ? मेरे लिए तुम्हारा यह छद्मवेष स्वय एक रहस्य बना हुआ है। तुम्हारा यह अनाम अपरिचित धुधला सा आकार मेरे लेखन की प्रेरणा नही बन सकता। मैनें अपनी दुविधा उसे बतलाई।

लेकिन तुम्हारे से परिचय हो जाने के बाद मैं अपरिचित और अनाम नारी कैसे रह पाऊगी ?

लेकिन परिचय कैसे होगा ?

मेरी कथा के द्वारा।

तुम्हारी कथा ? मैनें उपेक्षा से हसते हुए कहा— तब तो सम्पादकजी मेरी रचना सखेद लौटा देंगे।

मेरी कथा तुम किसी पत्रिका में छपवाने के लिए मत भेजो।

तो ?

तुम मुझे अपने उपन्यास की नायिका बनाओ।

अपने उपन्यास की नायिका मैं तुम्हें बनाऊं ?

क्यों इसमें अचम्भित होने जैसी क्या बात है। मेरे आश्चर्य का अनुभव करते हुए उसने पूछा।

क्योंकि साहित्य में छद्मवेषी चरित्रों का स्थान नहीं होता। तुम्हारे अन्तस में उठती दुःख सुख की ऊंची ऊंची लहरों के साथ दौड़ने का प्रयास क्या आज का बुद्धिजीवी पाठक कर पायेगा ? नहीं नहीं मैं तुम्हें अपने सृजन का विषय नहीं बना सकता। मैंने अपनी असमर्थता दिखलाई।

मेरा निर्णय सुनकर उसने मेरी ओर देखा। फिर जैसी तुम्हारी मर्जी कहते हुए वह वहां से चली गई।

उसके यों चले जाने पर मुझे प्रसन्न होना चाहिए था।लेकिन नहीं। मैं गुमसुम हो गया। लेखन के मूल विषय के स्थान पर उसकी अनचीन्ही अनकही कथा मेरे विचारों में प्रवेश कर गई। वह मेरे पास आई थी और मैं अपने ही अहं में डूबा उसे उसके रहस्यमय व्यक्तित्व के तीर से बार बार घायल करता रहा। वह मेरे शब्दों की झुंझलाहट और मेरी हृदयहीनता को पचा सकने की असमर्थता के कारण यहाँ से चुपचाप चली गई। लेकिन कहाँ गई होगी ? किसे अपनी कथा सुना रही होगी ? आदि प्रश्नों में मैं घिर गया। उसके बारे में सोचते सोचते मेरा मेरा लेखन रुक गया। अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को यों निरर्थक बीतते देखकर मैंने वहाँ से उठने का निश्चय किया। लेकिन आश्चर्य। मैं स्थान परिवर्तन के लिए उठ नहीं सका। मैं अभी भी कुर्सी के साथ चिपके हुए था। मैं मन मसोस कर वहीं बैठा रहा फिर अपने विचलित चित्त को बुद्धि की रस्सी से जबरदस्ती बांध कर अपनी लेखनी को पृष्ठ पर चलाने के लिए टिका दी—

कुछ लिखने की सोच रहे हो ? उसकी आवाज से घबरा कर मैंने सामने की ओर देखा तो वही धुंधली आकृति अपने पूर्व स्थान पर खड़ी थी। लेकिन इस बार मैं पहिले की भांति डरा नहीं अपितु मैंने लेखक की मुद्रा धारण कर

ली। तभी मैंने पुन उसे कहते हुए सुना—

तुमने मेरी बात का उत्तर नही दिया।

क्या उत्तर चाहता हो ? बोलो।

तुम मुझ अपने लेखन का विषय बनाओगे ?

मैं तुम्हारे बारे में एक शब्द भी नहीं लिख सकता क्योंकि तुम्हारा विषय मेरी बुद्धि से परे है।

तुम प्रयत्न तो करो। एक बार हामी तो भर दो।

कैसे प्रयत्न करू ? जबकि सच तो यह है यह कि तुम्हारी उपस्थिति मेरे लेखन कार्य में बाधा पहुचाती है।

मेरी उपस्थिति ? किंचित आश्चर्य से उसने पूछा।

हा तुम्हारी उपस्थिति। इतना कहकर मैं आगे कहने लगा, कहने भी क्या उसे समझाने लगा देखा लेखन मेरी आवश्यकता है मेरे मन की विवशता है। बिना कुछ लिखे मैं जीने की सोच भी नही सकता।

तभी तो कहती हूँ कि तुम मेरे बारे में लिखो।

मैं तुम्हारे विषय में नही लिख सकता...?

ठीक है तो लिख लो यदि एक भी पंक्ति तुम लिख सको तो !

क्या यह तुम्हारी चेतावनी है ?

नहीं तुम्हें सावधान कर रही हूँ ताकि आगामी दिनों के निरर्थक बीत जाने का तुम्हें दुख नही हो।

उसकी बात सुनकर मुझे लगा उसका कहना सही है। लेखन मेरा अपना क्षेत्र था। जहाँ मैं मुक्त भाव से विचरता था। यह एक ऐसी नगरी थी जहाँ के निवासियों के सोच विचार तो मेरे देश के नागरिकों जैसे होते थे लेकिन उनका जन्मदाता मैं होता था। इसी लिए वे मेरे अपने होते थे। किन्तु इस आकृति से भेंट होने के पश्चात मैं अपनत्व से पूर्ण इस दुनिया से कट कर कुछ ही घंटों में मैं महिनों जैसी बेचैनी अनुभूत कर चुका था। अब मैं किसी भी भांति उसकी कैद के चगुल से छूट जाना चाहता था। अत उसी की सलाह को अपनी रिहाई

के लिए जमानत स्वीकारते हुए मैंने पूछा–– तुम क्या लिखवाना चाहती हो ? अपनी जीवनी ?

जीवनी और मेरी ? वह उत्तर में विद्रूपता से हँसी ।फिर कहने लगी जीवनी विद्वानो बुद्धिजीवियों मनीषियों महापुरुषों की लिखी जाती है ।क्योंकि जगत को देने के लिए उन्ही लोगों के पास कुछ विशेष होता है । मुझ साधारण नारी के चरित्र म जीवनी जैसे दुर्लभ रत्न की खोज करना तो महापुरुषों का उपहास उडाना होगा ।

तुम जानती हो एक पुस्तक को लिखने के लिए_ ?

तुम्हें कथानक के लिए चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है। मेरे पास स्मृतियो की अथाह सम्पदा है। उसने मेरी बात को काटते हुए अपना सुझाव दिया।

तुम्हारी स्मृतियों को हूबहू व्यक्त करने के लिए मेरी लखनी की सशक्तता को जाचने का कुछ समय तो दो। मैंने उसे टालने के भाव से कहा।

उसे शायद मेरे शब्दों म स्वीकृति की हल्की सी झलक मिली थी। इसी लिए वह बडी सरलता से बिना कुछ कहे वहाँ से लुप्त हो गई। उसके वहाँ से चले जाने पर मेरी विकसित बाधिकता ने मेरे भ्रम को बेबुनियाद बताते हुए मुझे सचेत किया– अब तक जो अंगुलिया हजारो पृष्ठों को लिखने पर नहीं सहमी वे क्या आज मात्र परछाई के भ्रम को सत्य मान कर सहम कर लिखना बन्द कर देगी ? इस विचार ने मुझे हिम्मत दी और मैंने सोचा—क्या अल्लाउद्दीन के चिराग को घिसते ही उपस्थित होने वाले दैत्य सी यह मेरे पुनः कलम छूते ही उपस्थित हो जायगी ? इसी बचकानी जिज्ञासा से वशीभूत मैंने कलम को पृष्ठ पर टिका दिया और क्या हुकुम है मेरे आका ? से उसके शब्द फिर शून्य में गूंज गये

तुम फिर लिखने बैठ गये ?

हाँ। मैंने निडरता से उत्तर दिया।

तो ठीक है लिखो मैं भी यहीं पर हूँ।

उसकी स्वीकृति पाकर मैंने कलम को पृष्ठ पर चलाना आरम्भ कर दिया।

लेकिन यह क्या । मेरे हाथ जड बन गये। मेरा मस्तिष्क कोरे कागज सा विचार शून्य मात्र हाड मास का एक पिण्ड बन कर रह गया।

मेरी जडता की अनदेखा करते हुए उसने पूछा— क्यों चुपचाप क्यों बैठे हो ? लिखते क्यों नही हो। यदि तुम लिखना आरम्भ करो तो मैं तुम्हारी लेखकीय मुद्रा की किसी महान रचनाकार से तुलना तो कर सकू— ।

उसकी बात को अनसुना करते हुए मैंने लगभग चिल्ला कर पूछा— क्या लिखू ? मेरा मस्तिष्क कल्पना शून्य विचार शून्य सृजन शून्य बस अथाह शून्यता समेटे मेरे शरीर से जुडा हुआ है। और तुम निष्ठुर बनी मेरे शून्य के विस्तार का दीर्घायु का आशीर्वाद दे रही हो।

तुम्हारे क्रोध का कोई अर्थ नही निकलता। क्योंकि वह निराधार है। मैनें तुमसे प्रार्थना की थी कि तुम मेरे हृदय स्थित भावों को अपनी लेखनी के माध्यम से पृष्ठों पर सजा दो। किन्तु तुम निष्ठुर बने मेरी प्रार्थना को अपने अह के प्रहारों से ठुकराते रहे। सुना था लेखक साधारण मानव से कही अधिक सहृदय होता है किन्तु तुम ? तुम तो निर्मम हृदयी निकले। अब यदि तुम्हारी लेखनी या मस्तिष्क जड हो गए हैं तो मैं क्या करू ? हाँ यदि तुम मेरा कहना मान लो तो अवश्य पहिले की भांति तुम्हारा लेखना— ?

उसे सुनना छोडकर मैनें अपनी लेखनी की ओर देखा। जो इस रहस्यमय आकृति के अनुशासन के पक्षाघात से पगु एव निष्क्रिय बनी पडी थी। तो क्या करू। इसकी बात स्वीकार कर लू ? मैनें सोचा शायद यही एक रास्ता बचा हुआ है अपनी राजकुमारी बनी लेखनी को इस अनाम आकृति रूपी दैत्य के चगुल से छुडाने का। अन्यथा लेखनी व पृष्ठ का सयोग होने से यह अनामत्रित अतिथि सा पुन उपस्थित हो जायगा और मेरे अन्तर्मन के भावों को शब्दों का आवरण नही मिल पायेगा।

क्यों लेखक । मौन धारण कर लिया है ?

नही मैं सोच रहा था कि तुम्हारी बात मानने के अतिरिक्त मेरे पास अन्य कोई उपाय नही है।

मुझे हथियार डालते देख वह बोली— तुम समझदार हो।

उसके कहने का ढग मुझे अनोखा लगा। मैं पुन सोच म घिर गया—इसे स्वीकृति दकर कहा मैंने अनेक समस्याओं को तो आमन्त्रित नही कर लिया है ?

तभी मैंने सुना वह पूछ रही थी— लेखक महोदय। किस चिन्ता में घिर गए ? क्या पुन नकारात्मक मुद्रा धारण करने की सोच रह हो ?

उसकी बात सुनकर न जाने क्यों मैंने जोर का ठहाका लगाया।मुझे हसता देखकर कुछ आश्वस्त सी वह मेरे पास चली आई। मैंने उसको ध्यान से देखा। उसका चेहरा निर्विकार था वहाँ न कोई भाव था न अनुभूति का सुख। अवश्य यह कोइ प्रेत देह ह और इस विचार क उपजते ही घबराहट क कारण मेरे चेहरे पर गगा जमुना की धाराए बह निकली ।

गर्मी लग रही है ? मुझे पसीने से नहाया देखकर उसने पूछा ।

हा अपने को सभालते हुए मैंने उत्तर दिया ।

यदि मुझे जाने की शीघ्रता नही होती तो म तुम्हें अवश्य पसीने सुखाने का समय देती लेकिन ....।

क्या तुम्हें कही जाना है ? उसके कहने के ढग मे मुझ लगा जैसे वह बहुत जल्दी म ह ।

हा उसने सक्षिप्त उत्तर दिया ।

कहा जाना है ?

मेरा जाना इस कथा का भाग नही है। मेरे आने जाने को अपने लेखन क्षेत्र स दूर रखो। अपनी बात समाप्त करते करते वह उखड गई।

इसमें उखडने जैसी क्या बात है ? न बताना चाहे तो मेरी ओर से कोई बन्धन नहा है। फिर उसे छेडते हुए मैंने कहा— हा मेरी एक शर्त है यदि तुम्हारी कथा कहानी रोचकता की दृष्टि स कमजोर रही तो मैं बीच में ही क्षमा माग लूगा। और ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर तुम चुपचाप यहा से चली जाओगी। और हा जाने से पूर्व मेरी लेखनी को भी अपने जादू से स्वतत्र करती जाओगी।

मेरी बात सुनकर वह हसी। फिर कहने लगी— लेखक। मेरी एक बात समझ लो। न तो तुम गणेश हो और न म व्यास हूँ। अत हमारे बीच किसी भी शर्त का विधान हो ही नही सकता।

वह ठीक है फिर भी ...।

फिर भी की बात यह है कि लेखक तुम मेरे दोस्त बन गये हो और दोस्तों के बीच सारव्य भाव होता है। वहाँ किसी शर्त का विधान नहीं होता।

उसके बात करने का ढग मुझे अत्यधिक लुभावना लगा। अब मैं उससे भयभीत नही था बल्कि उसकी अनकही कथा के प्रति अनजाने ही आकर्षित हो गया था। मैं उत्सुक हो गया था यह जानने के लिए कि वह ऐसी कौनसी कथा है जिसके लिए इसने मुझे अपना दोस्त बनाया है अपनी कथा का श्रोता बनाया है। उसके प्रति...।

तुम्हारा बार बार चिन्तित हो जाना तुम्हारी हृदयहीनता और भाव शून्यता की ओर सकेत करता है।

मैंने हसते हुए उत्तर दिया— *तुम भी खूब हो एक ओर मुझे भाव शून्य* और हृदय शून्य कहती हो और दूसरी ओर मेरा पीछा भी नहीं छोडती हो।

उसने मेरी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। उसे चुपचाप खडी देखकर न जाने क्यों मैं तरल हो गया। मैंने उसकी ओर देखकर कहा— आओ मेरे पास आकर बैठो। इस कुर्सी पर बैठकर तुम मुझे अपनी कहानी सुना कर अपने हृदय का बोझा हल्का कर लो। मेरी वाणी अनजान ही अपनत्व और आत्मीयता से भर गई थी।

नहीं नहीं। तुम्हारे पास मेरा बैठना सभव नहीं है। मैं तुम्हे अपने स्थान इसी कोने में खडी रहकर अपनी कथा सुना दूगी। कथन के साथ उसने अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

लेकिन तुम वहाँ क्यों चली गई? इस बार उसे अपने से दूर खडे देखकर मैं विचलित हो गया।

तुम में दो खराब आदतें हैं...।

मुझमें? मैंने आश्चर्य से पूछा।

हा तुम्हारे में। एक तो तुम प्रश्न बहुत करते हो ।'

और दूसरी खराब आदत? मैंने हसकर पूछा।

तुम सदैव नकारात्मक मुद्रा धारण किये रहते हो।

उसकी बातें सुनकर मैंने फिर एक जोरदार ठहाका लगाया। मेरी उन्मुक्त हसी आपसी अलगाव को समाप्त करने में अच्छी खासी भूमिका निभा गई। मैंने सरल भाव से पूछा— तुम पास नही आओगी ?'

नही। उसने अपने स्थान से उत्तर दिया।

ठीक है। कहते हुए मैंने कलम पकड ली।

ना ना तुम कलम नीचे रख दो। अभी तो तुम मात्र श्रोता बनकर मेरी स्मृतियों के साथ साथ चलोगे। उसने मुझे कलम उठाते देख उतावलेपन से कहा।

मैंने उसका कहा मानकर अपनी कलम एक ओर रख दी। कमरे में हम दो ही थे। वह धुधली परछाई अपने अनाम व्यक्तित्व को मुझ लेखक के समक्ष धीरे धीरे खोलने लगी। वहाँ के शान्त सन्नाटे में उसके शब्द नदी की कलकल करती धाराओं से सुनाई पडने लगे—

"मेरे पिता एक विख्यात पडित थे जिनकी ख्याति आस पास के गावों में ही नही अपितु दूर दूर शहरों तक फैली हुई थी। यदि उन्हें राज पडित कह दिया जाये तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।"

ओह। तुम राजपडित की पुत्री हो।

मेरे प्रश्न से प्रभावित हुए बिना उसने अपनी कथा चालू रखी। राजपडित की पुत्री होने के नाते मेरे घर का वैभव हमारे रिश्तेदारों के लिए ईर्ष्या का कारण बना हुआ था। ऐसे सुखी समृद्ध पिता के घर मैं जन्मा थी। मेरे भाई बहिनों में मेरा आठवा स्थान था ।

तो तुम भी श्री कृष्ण की भाति अवतारी थी।' मैंने चुहल की।

तुम मुझे अवतारी तो नही हा अभिशप्त आत्मा अवश्य कह सकते हो। मेरे हास परिहास से चिढे बिना बहुत दुखी मन से उसने मेरी बात का उत्तर दिया।

मै उसके शब्दों की पीडा से दुखी हो गया। उसने आगे बताना शुरू किया— मेरे समय में लडकियों का बचपन नही होता था अपितु गुड्डे गुड्डी के ब्याह रचाने की उम्र में ही वे भी किसी गुड्डे से ब्याह दी जाती थी।

क्या तुम्हारा ब्याह भी बचपन म हुआ था?

हा। बहुत जल्दी हा म ब्याह की भट्टी में झोंक दी गई थी।'

नहा नही ब्याह जैस पवित्र बन्धन को आग की भट्टी कहकर तुम सप्तपदी की पवित्रता को झुठला रही हा।

क्या वर वधू द्वारा अग्नि की सात परिक्रमाए करना किसी सफल ब्याह का उद्घोष है।

लेकिन तुम्हारा तर्क शास्त्रसम्मत भी तो नही है। ब्याह को एक जलती हुई भट्टी के समानान्तर नही रख सकते। बल्कि यह ता एक एसी अलौकिक अनुभूति है जिसे—।

यदि इस अनुभूनि की अलौकिकता को अनुभूत ही नही किया गया हो तो ? उसने मुझे आग बोलने से रोकते हुए बीच ही मेरी मान्यता का खडन किया।

फिर क्या हुआ? मेरी उत्सुकता ने कथा में तारतम्यता बनाये रखनी चाही।

मेरा ब्याह तेरह वर्ष की उम्र में कर दिया गया।

कवल तेरह वर्ष की उम्र में ? मैंने चौंकत हुए पूछा।

हू केवल तेरह वर्ष की अवस्था में। हा अब तुम यह मत कहने लग जाना कि आजकल तो बाल विवाह होते ही नहीं है क्योंकि बाल विवाह अपराध घोषित कर दिया गया है।

तुम कहती तो एकदम ठीक हो। आजकल बाल विवाह नही होते है। बल्कि बडी उम्र में विवाह होन पर यदि साथी से मनमुटाव हो जाये तो हमारे कानून में तलाक की भी व्यवस्था है। मैंने अपने ज्ञान की छाप उस पर छोडने के उद्देश्य मे कहा।

'तुम अपने उपदेशों को अपन तक सीमित रखो। मेरी बात से चिढ़ते हुए उसन अपना कथन चालू रखा—बाल विवाह तो अब भी धडल्ले से हो रहे हैं। क्योंकि तुम्हारे देश क लोग अज्ञानी है जड है मृत परम्पराओं के मोह में ग्रसित हैं। फिर अपनी आवाज में कडवाहट घोलते हुए तीखी वाणी में कहने लगी— तुम

किस तलाक प्रथा पर गर्व अनुभव कर रह हो ? क्या नुम जानते हो यदि तलाक के लिए आपसी सहमति नही है तो केस कोर्ट में पड सडन रहते है । युवा भावनाए अदालत की मर्जी क समक्ष कुचली जाती है । तुम अपन थोथे और लिज़लिज़े विचार अपने पास रखो । कैसे श्रोता हो तुम ? तुम आज क युग के ब्याह के अर्थो को स्पष्ट कर रह हो जबकि मैं तुम्हें अपन युग क ब्याह प्रसग की चर्चा सुना रही थी । इन दोनों युगों में ब्याह के अर्थ ही भिन्न हो गये हैं ।

अच्छा छोडो । तुम तरह वर्ष की उम्र में ब्याह दी गई थी आगे क्या हुआ ? मैंने उसके शब्दों में आई हल्की सी नाराजगी भाप ली थी और अब मैं उसे नाराज करने का इच्छुक नही था । अत उम मनाते हुए मैंने पूछा ।

मैं दो दिन ससुराल रहकर पुन मायके में लौट आई थी । उसके शब्दों में उसके मन का उखडापन साफ साफ सुनाई पड रहा था ।

देखो । मैंने उसे फुसलाते हुए कहा यदि कथावाचक रसहीन हागा तो श्राता जल्दी ही ऊब जायेगा । तुम बहुत नीरस हो गई हो ।यदि मेर प्रश्न करने पर यों उखडने लगोगी तो_।

उसने मेरी बात शाति से सुनी फिर कहन लगी तुम ठीक कहते हो मैं उखड गई थी । लेकिन मेरे उखडने का कारण_।

मेरे प्रश्न थे । मैने उसे अपनी बात पूरी करने का अवसर दिय बिना ही उत्तर दे दिया ।

हा मुझे लगा तुम मेरा उपहास उडा रहे हो ।

अरे नही नही । दरअसल आरम्भ में तो मैं तुम्हारे इस प्रच्छन्न रूप से भयभीत हुआ था । लेकिन बाद में तुम्हारे आग्रह पर मैं तुम्हारा सखा बन गया था । अब सच पूछो तो मैं तुम्हारी कथा को समझने के लिए तुम्हारे युग का पथिक बन गया हूँ । और अपनी सभी सुप्त भावनाओं को तुम्हारे चारों आर जागृत अवस्था में खडा कर दिया है । इतना कहकर मैंने उसकी ओर ध्यान से देखा । मुझे लगा वह आकृति मुस्कुरा रही है । उसे मुस्कुरात देख मैं हल्का हो गया । मैने हसकर पूछा—

तुम कितने दिनों तक मायके में रही ?

दिनों तक नही बल्कि तीन वर्षा तक_।

तीन वर्षों तक क्यों ?

क्योंकि मेरा गाना तीन वर्षों के बाद होना निश्चित हुआ था।

तब तो अवश्य इस अवधि में अपना हमउम्र सहेलियों के साथ अपने पति का ढेर सारी बातें की होगा। मैंने हसकर पूछा।

नही। मैंने इन वर्षों में खाना बनाना सिलाई कढाई करना जैसे घर के काम सीखे।

तो क्या तुम इतनी मन्द बुद्धि थी कि ये काम सीखने के लिए तुम्हें तीन वर्ष लगे।

नही नहीं इन कामों को सीखने के अलावा मैंने पढाई भी की थी।

ओह। तुम स्कूल जाती थी।

नही मैं कभी भी स्कूल नही गई। मैंने जो कुछ भी सीखा सब घर पर अपने पिता से सीखा।

इसका अर्थ तुम्हारे ज्ञान का डिग्रीयों से कोई सम्बन्ध नही है। मैंने कहा।

तुम ठीक कहते हो कि मेरा डिग्रीयो से कोई सम्बन्ध नही था। यदि सम्बन्ध होता तो शायद मेरा जीवन अधेर की काली चादर से मुक्त होता। उसका स्वर उदासी मे डूबा हुआ था।

क्या यह भीतर से बहुत दुखी है ? ऐसी कौनसी अनकही कथा इसके अर्न्तमन से बाहर निकलने को छटपटा रही है और जिसे बाहर निकालने के लिए इसे मेरे सहारे की आवश्यकता है ? अगणित लेखक लखिकाओ के अस्तित्व को नकारते हुए यह मेरे पास आई है। ईश्वर करे मैं इसकी कल्पना के अनुरूप हो निकलू नही तो_।

तुम पुन क्या सोचने लगे ?

नही मैं सोच नही रहा था अपितु तुम्हारे बोलने की प्रतीक्षा कर रहा था_।

'तुम झूठ बोल रहे हो_। खैर छोडो। कहते हुए उसने एक तरह से विषय को बदल दिया।

उसकी बातें सुनकर मैं अचंभे में पड़ गया। क्या यह मेरे हृदय के भीतर मेरी भावनाओं तक पहुँचने की क्षमता रखती है? मेरे हृदय का कोई विचार इस दुखी नारी को दुःख न दे यह निश्चय करके मैंने प्रश्नों का पूछना आरम्भ कर दिया।

तुम्हारे सात भाई बहिन। उनके लिए तुमने कुछ नहीं बताया।

वे सभी मुझ से बड़े थे।

क्या छोटी होने के कारण तुम पढ़ाई कर सकी?

नहीं मैं मन्दबुद्धि नहीं थी इसलिए पढ़ सकी। गर्वित भाव से उसने बताया।

क्या तुम्हारे भाई?

नहीं नहीं वे पढ़े हुए थे। लेकिन उनमें से एक अत्यधिक कुशाग्र बुद्धि का था। अपने पिता के पाडित्य से प्रभावित वह बनारस विद्यार्जन के लिए गया था। हाँ मेरी चारों बहिनें अनपढ़ निरक्षर थीं।

इसका अर्थ तुम छः बहिनें और दो भाई थे।

हाँ। कहकर वह शांत हो गई। लेकिन यह शांति कुछ क्षणों तक ही रही। उसके बाद वह पुनः बतलाने लगी धीरे धीरे अढ़ाई वर्ष बीत गये। एक दिन मेरे ससुरजी ने अपने पत्र में गौने की तिथि लिख भेजी। उत्तर में मेरे पिता ने स्वीकृति भेज दी। निश्चित तिथि पर मैं ससुराल के लिए अपने पति और दो तीन संबंधियों के साथ विदा कर दी गई। विदाई के समय मैं अपनी माँ के गले लगकर खूब रोई। बनारस से आये मेरे भाई ने मुझे खूब समझाया दुलराया। लेकिन मैं बार बार यह सोच कर रोये जा रही थी कि इस घर से अब मेरा वह सम्बन्ध नहीं रहा जो आँखें खोलने से लेकर आज तक था। जिस घर को स्वयं से भी अधिक चाहा उसमें ही अब अतिथि की भाँति आकर रहना पड़ेगा। मेरा पुत्री रूप अतिथि के धर्म और उसकी मर्यादा के नीचे छुप जायगा। इसी दुखी अनुभूति के साथ अपने अश्रुओं के बीच मैं ससुराल की ओर चल पड़ी।

अपने पति का अनुसरण करते हुए मैंने ससुराल की देहरी के भीतर पाँव रखे। उस समय रात हो गई थी। हम लोग घर के भीतर पहुँच कर अलग अलग हो गये। औरतें बार बार आकर मेरा मुँह देख रही थीं। कुछ देर तक वहाँ शांति

छाई रही। फिर मेरी सास के साथ तीन औरतें आई। उन लोगों के सवादों से मुझे यह समझने में देर नही लगी कि ये तीनों मेरी जेठानिया हैं । इधर उधर की बातों के पश्चात् भोजन के लिए थालिया लाई गई। दिन भर की थकान और अश्रुपूर्ण विदाई से मेरा मन बहुत दुखी था। मैंने खाने में तनिक भी रुचि नही दिखलाई। मेरे सामने परोसी थाली ज्यों की त्यों पडी रही। इसे देखकर मेरी सास ने कहा— खाना खा लो ।

मैं उत्तर में बिना हिले डुले शात बैठी रही।

खा लो बह ! खाना खा लो। मायके से आने का दुख तो स्वाभाविक है लेकिन भूखे रहने स तुम मायके तो नही भेज दी जाओगी।

सास की आत्मीयता ने मुझे रुला दिया। कुछ देर तक सास पीठ पर हाथ घुमाती रही। फिर खाना खा लो का आदेश देते हुए वे उठ गई।

मैं सास की आज्ञा का अनुसरण करके खाना खाने लगी। कुछ दर क पश्चात मैं एक कमरे में पहुँचा दी गई।

कमरे में छाये एकान्त को देखकर मैंने अपना घुघट उठा दिया। कमरा साधारण ढग से सजा हुआ था। कमर के कोन में एक टेबल रखी हुई थी। उसके ऊपर किताबें रखी हुई थी। टेबल पर एक फोटो फ्रेम रखी हुई थी।

क्या उसमें तुम्हारे पति की तस्वीर लगी हुई थी ?'

'हा।'

उस समय कौनसी कक्षा में पढ रहे थे ?

इटर की परीक्षा दे चुके थ।

तुम्हारे पति का क्या नाम था ?

माधव।

तुम्हारा ?'

मेरा नाम जानकर क्या मुझे मेरे नाम से पुकारोगे ?

हा। मैने सिर हिलाया।

जो नाम तुमने मुझे दिया है वह मुझे पसन्द है।

मनि। मैंने कव तुम्हारा नामकरण किया ? मैंने चौंकते हुए पूछा।

नामकरण तुम्ही न किया था। वह बात और है यदि तुम भूल गये हो तो।

नही नही तुम झूठ बोल रही हो। मैंने प्रतिवाद किया।

क्यों क्या तुमने मेरा नाम अस्पष्ट आकृति नही रखा था ? मुझे चुप देखकर उसने आगे कहा— तुम मेरे इस नाम को वदलना नही। तुम्हारा दिया गया यह नाम मुझे बहुत प्रिय है।

यह सुनकर मैं सकते में आ गया। क्या यह हृदय स्थित भावों को पढने में सक्षम है ? यदि है तो क्या यह कोई प्रे _। और मेरा आगे का सोच कही वह यह भी जान गई तो ? इस सशय के साथ बीच ही में रुक गया।

पात्र चयन में कुछ भूल कर बैठे लेखक ?

मैंने उत्तर में कुछ नहा कहा।

उत्तर नही दिया। किस चिन्ता में घिर गये ? यदि मेरे प्रश्नों का उत्तर नही दोगे तो मेरी कहानी आगे नही बढेगी और मेरा तुम्हार पास आकर ठहरना निरर्थक हो जायेगा।

मैं चुप इसलिए था कि तुमसे एक बात कहना चाहता था। लेकिन कैसे कहूँ ? बस इसी उधेडबुन में था कि तुमने प्रश्न पूछ लिये।

पूछो क्या पूछना चाहते हो ?

तुम अपने पति के लिए मेरे पति नही कहकर यदि उसे उसके नाम से पुकारो तो।

बस इतनी सी बात थी। कहकर वह रहस्यमय ढग से मुस्कुराई जिसे देखकर मैं भीतर तक काप गया। शायद नही बल्कि सचमुच उसे मेरा कापना दिख गया था। तभी तो उसने कथा को आगे बढाया— हा तो मैं वहाँ बैठी हुई कमरे का निरीक्षण कर रही थी_।

तभी खट से दरवाजा खुला और माधव कमरे में आ गया। मैंने परिहास किया।

तुम बहुत जल्दी आगे तक की सोच जाते हो। अभी तो माधव रगमच पर भी नही आया है और तुम दृश्य परिवर्तन की बात करने लगे। उसने मुझे उलाहना दिया।

अच्छा आगे क्या हुआ ? मैंने हँसकर पूछा।

'मेरा निरीक्षण बद हो गया लेकिन माधव कमरे में नही आया। बैठे बैठे मेरी पीठ अकड़ने लगी थी। पीठ को सीधा करने के उद्देश्य से मैं सामने बिछे हुए पलग पर लेट गई। बेलगाडी के सफर से शरीर थक कर चूर चूर हो रहा था। धीरे धीरे थकान प्रतीक्षा पर भारी पडती गई और अन्तत प्रतीक्षा पराजित हो गई-।

तुम सो गई। मैंने आश्चर्य प्रकट किया।

हा।' उसने थके स्वर में उत्तर दिया जैसे आज भी वह उस दिन की थकान को भूली नही थी।

अरे ! मैंने तो सोचा था तुम उस एकान्त में सम्मोहित माधव की प्रतीक्षा के क्षणों में उसके सामीप्य सुख की मधुर कल्पना में खोई होगी।लेकिन तुम कह रही हो कि तुम सो गई थी।' इतना कह कर मैं रुका फिर आगे कहने लगा— ठीक है प्रिय की प्रतीक्षा के बीच तुम्हारी नीद लग गई लेकिन तुम्हारा प्रियतम भी क्या बावला ही था जिसने तुम्हें नीद से उठाया नहीं ?

उसे क्या दोष दूँ ? दोषी तो मैं ही थी वरना वह रात्रि क्या यों ही अनछुयी बीत जाती। खैर रात को बीतना ही था वह ढलती रही और हम दो अनजान अपरिचित व्यक्ति अनचीन्हे के अनचीन्हे ही रह गये।'

किन्तु माधव ने तुम्हें क्यों नही उठाया ?'

उठाया ना। उसने उठाया था। जैसे कही दूर से कोई आवाज आ रही हो- ऐसी धीमी आवाज मे उसने मेरी बात का उत्तर दिया।

उसने उठाया था तो फिर क्यों स्वय के भाग्य को दोषी ठहरा रही हो ? मैंने खीझते हुए पूछा।

क्योंकि मेरी जेठानी बाहर से दरवाजा भडभडा रही थी इसलिए उसने मुझे उठाया था।अब समझे तुम कि उसने क्यों उठाया था।

मैंने उसके शब्दों में उस प्रथम रात्रि के सूनपन की गूज सुनी और मैं भी उसके दुख से दुखी होकर चुपचाप बैठ गया।

कमरे में से निकलने से पूर्व मैंने माधव की ओर देखा। वह आँखें बंद किये था। मैं निःशब्द कमरे से बाहर चली गई।

आह। कहकर मैंने भी लम्बी सांस ली।

यह उसका प्रथम सभाषण था।

उसके बाद?

उसके बाद मैंने स्वयं को ससुराल के अनुकूल ढालना आरम्भ कर दिया और सप्ताह बीतने तक मैंने अपने ससुराल की दिनचर्या समझ ली थी। कौनसा काम कब और कैसे करना है यह सब बहुत जल्दी सीख जाने पर मेरी सास मेरी प्रशंसा के पुल बांधती रहती थी। उसने गर्व से बतलाया।

जिस प्रकार सास के साथ तुम्हारी अच्छी निभने लगी थी उसी प्रकार माधव के साथ भी ?

नहीं नहीं कहते हुए उसने मेरे वाक्य को पूरा नहीं होने दिया।

तो? मैंने चिन्तित भाव से पूछा।

माधव और मैं नदी के दो किनारों की भांति बने रहे।

लेकिन दोनों के बीच यह अथाह जलराशि कैसे उमड पडी ?

उनको किताबें पढने का शौक था। अध्ययन ही उनका जीवन था—।

किन्तु तुम भी पढी लिखी विद्वान पिता की विदुषी पुत्री थी? मैंने बीच ही में अपने मन की बात कह दी।

तुम ठीक कहते हो। लेकिन मैं स्वयं को माधव के अनुरूप नहीं ढाल पाई और वह मेरी प्रतीक्षा नहीं कर पाया। दो डग भी मेरे साथ नहीं चल सका।

मैं समझा नहीं। तुम्हारा पहेलियों सा उत्तर तुम्हारे विचारों को स्पष्ट नहीं कर पाया है। तुम खुलकर बतलाओ तो शायद मैं समझ पाऊं।

माधव इन्टर की परीक्षा देकर मेरा गौना करवाकर लाये थे। वे चाहते थे कि मैं भी पढू —।

लेकिन कहाँ और किससे ?

रात को उन्हीं मे पढ़ू।

फिर क्या हुआ। तुम नहीं पढ़ी ।

मैं कैसे पढ़ती। दिन भर घर के अन्य कामों को करने के कारण रात होते होते मैं थक कर चूर चूर हो जाती थी। उस समय मेरा थका हुआ शरीर माधव के स्नेहिल स्पर्श के लिए लालायित रहता था। लेकिन वह स्वयं को किताबों के हवाले कर देता था।

तुमने उसे अपने मन की बात बतलाई नहीं ?

'नहीं।

लेकिन क्यों ? क्यों नहीं बतलाई।

क्योंकि मैं समझ ही नहीं पाई कि कैसे उसे अपने कैशार्य मन की उन्मुक्त भावनाओं से परिचित करवाऊ।

'क्या कभी तुमने अपनी जेठानियों से इस विषय में बात नहीं की ? उसकी अनूठी कथा से मैं जाने अनजाने आकर्षित होने लगा था।

नहीं। उसका सक्षिप्त उत्तर था। फिर कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद उसने पुन बोलना शुरू किया— हालाकि हम चारों औरतें भोजन एक साथ बैठ कर करती थी लेकिन हम लोग चुप रहती थी।

'तुम झूठ बोल रही हो। क्योंकि मैंने तो पढ़ा है कि औरतें कभी चुप रह ही नहीं सकती।

तुमने ठीक ही पढ़ा है। किन्तु मेरी तीसरे नम्बर की जिठानी मुझ से अकारण ही नाराज रहती थी और जब कभी मेरी दोनों बड़ी जेठानियो ने मेरे साथ माधव को लेकर हसी ठिठोली करनी चाही तो तीसरी जेठानी का मुँह फूल गया था। इसलिए हम लोग चुप ही रहती थी।

तुम्हारी तीसरी जेठानी की नाराजगी का कारण ?

'मेरा सौन्दर्य। उसे मेरे रूप से ईर्ष्या थी।'

क्या वह असुन्दर थी ?

नही लेकिन रा मर जितनी सुन्दर भा नहा था।'

क्या उसकी नाराजगी का यही कारण था ?

दरअसल वह मुझसे ईर्ष्या करती थी।

तुम से क्या ईर्ष्या करती थी ?

क्योकि वह मूर्ख थी।

यह क्या पहेली बुझा रही हो ? कभी कहती हो वह तुम्हारे रूप से ईर्ष्या करती थी कभी कहती हो वह भी सुन्दर थी और कभी कहती हो कि वह मूख थी। लेकिन उसकी नाराजगी का कारण नही बतला रही हो।

वह मूर्ख थी क्योंकि वह समझती थी कि मैंने माधव का अपने रूप के आकषण में फसा लिया है जबकि यह सही नहा था सत्य तो कुछ और ही था। कहते कहते उसकी आवाज भारी हो गई।

एक बात पूछू ?

पूछो। उसने सहज भाव से स्वीकृति दी।

क्या सचमुच विकसित पुष्प से तुम्हारे यौवन ने अपनी मादक और सुवासित बयार से उसके हृदय को महकाया नही ? क्या सचमुच पवन की चचलता स लहराते तुम्हारे अगों स उसे मौन निमत्रण नही मिला ? इतना कहकर मैंने उसकी ओर देखा सोचा शायद वह मेरी बात का प्रतिवाद करेगी किन्तु वह मौन ही रही । उसके मौन से उत्साहित मैंने आगे कहा— हा यदि तुम अपनी कथा के उस निजी एव अन्तरग पक्ष को मेरे साथ नही बाटना चाहा तो मैं तुम्हें विवश नही करूगा। इतना कहकर मै चुप हो गया।

तुम भी वही भूल कर रहे हो जो मेरी जेठानी ने की थी। जबकि सच्चाई तो यह ह कि उस समय तक मेरी देह पुरुष स्पर्श से उत्पन्न सिहरन से सर्वथा अनभिज्ञ थी। खैर इस प्रसग को यही छोड दो।' कहकर उसने कथा के क्रम को आगे बढाया।

रात को मेरे कमरे में आने पर वह मुझे पढने के लिए कहता और मेरे अनिच्छा दिखलाने पर मुँह फेर कर सो जाता।

तुमने परिस्थितियों को बदलन का प्रयास नही किया— ?

मैंने प्रयास किया था। दरअसल गाव में मेरी एक सखी थी जो दो तीन बार ससुराल रह कर आ चुकी थी और उसी से_।

लेकिन तुमने तो किसी भी सखी का जिक्र नही किया था ? मैंने उसे बीच ही में पूछ लिया।

'ओह वह। वह तो एक झूठ था। मैंने सोचा था अत तक निभा ले जाऊगी किन्तु तुमने तो आरम्भ में ही पकड लिया। लेखक हो ना। कहकर वह हसी।

'हा तो उसने कुछ बतलाया था ?

'हा उसने अपने शयन कक्ष के कई किस्से सुनाये थे। उस समय मैंने माधव के साथ ढेरों सपने भी देखे थे जो अब एक एक करके मिटते जा रहे थे।

क्या कभी भी तुमने उन मपनों को यथार्थ के साथ जोडने का प्रयत्न नहीं किया ?

हा एक बार पतझड के पेड सी पत्रविहीन मैं बसन्त को आमत्रित करने की भूल कर बैठी थी।

उसके बारे में कुछ बताओगी ? मैंने धीरे से पूछा।

'लेखक। क्या तुम समझते हो कि मैं तुमसे कुछ छिपा पाऊँगी।

नही नहीं मेरा मतलब वह नही था । कही वह नाराज न हो जाये इसलिए मैंने जल्दी से कहा।

'घबराओ मत। मैं नाराज होकर अपनी कहानी को अधूरा छोड कर जाने वाली नही हूँ। सच पूछो तो मैं अपना दुख ढोते ढोते थक चुकी हूँ। तुम्हें अपनी कथा की व्यथा सुनाकर निश्चिन्त हो जाना चाहती हूँ।' इतना कह कर वह रुक गई।मेरा मन हुआ उसे आगे बढने के लिए कहू फिर यह सोचकर कि यह मेरे हृदय की एक एक बात जानती है। मैं चुप रहा।

थोडी देर के पश्चात् उसका मौन टूटा। 'यह उस रात की बात है जब कमरे में जाने पर मुझे माधव नही दिखलाई पडा था। मैंने कमरा भीतर से बद कर लिया। सामने रखे आइने पर दृष्टि पडी। चेहरा थका थका दिखा। मैंने तत्काल अपना पूर्ण श्रृगार किया। और स्वय की साडी देखी। वह सलवटों से घिरी हुई था। मैंने ट्रक के भीतर से सुवासित नई साडी निकाली। पुरानी साडा उतारकर

ज्यों ही नई साडी पहिनने लगी तो दृष्टि पुन आइने पर टिक गई। अपने रूप पर मैं स्वय ही मुग्ध हो गई। साडी हाथ में लिए दृष्टि दूर कहीं माधव के साथ बीतने वाले मधुर क्षणों पर टिक गई। अचानक दरवाजे पर लगी अर्गला बार बार अपने अस्तित्व की घोषणा करने लगी। जिसे सुनकर मैं घबरा गई। घबराहट के कारण निष्क्रिय बने मेरे हाथ न तो दरवाजे की अर्गला ही खोल पाये और न साडी ही शरीर पर लपेट पाये। इतनी देर में अर्गला ने भी चुप्पी साध ली।

मैंने जल्दी जल्दी अपने शरीर को साडी में लपेटा। साडी पहिन कर मैंने बडी उत्सुकता से अर्गला की ओर देखा लेकिन अर्गला शान्त थी। मैं चुपचाप जाकर कुर्सी पर बैठ गई और बैठे बैठे माधव के साथ किये जाने वाले हास परिहास का अपने हाव भाव के साथ तालमेल बिठाने लगी। प्रिय ससर्ग का मादक कल्पनाओं में मैं डूबी हुई थी। अचानक दरवाजे की अर्गला ने मेरी मधुर कल्पना को तोडा। माधव के आने की आस ने मेरे चेहरे को रक्तवर्णीय बना दिया। मैं धीमे से उठकर दरवाजे के पास गई और नीची निगाहें किये दरवाजे को खोल दिया। सोचा अभी माधव बाहों में भरते हुए दरवाजा बद कर देंगे। पल दो पल की प्रतीक्षा इस लालच के आकर्षण में बीत गई कि शायद वे मेरे रूप को अपनी दृष्टि में बाध रहे हो। किन्तु प्रतीक्षा के पलों को बढते देखकर मैंने घबराकर अपना चेहरा ऊपर उठा लिया। और जो कुछ सामने दिखलाई पडा वह मुझे चौंका देने के लिए पर्याप्त था। वहाँ मेरी तीसरे नम्बर की जेठानी खडी थी।

यह क्या कर रही हो? मैंने सहमते हुए पूछा।

जो दिखलाई पडा था वही बतला रही हूँ। तभी मेरी जेठानी ने प्रश्न किया देवरजी के सत्कार की तो पूरी तैयारी कर रखी है लेकिन देवरजी हैं कहाँ?

मैंने हिम्मत करके प्रश्नकर्ता की आँखों में देखा— वे आँखें अथाह ईर्ष्या की अग्नि कुड बनी हुई थी। उन पैनी आँखों में अपने प्रति तिरस्कार के भाव देखकर मुझे लगा जैसे मेरा सौन्दर्य जेठानी के समक्ष नग्न हो गया है। मेरी कल्पना का रूमानी पक्ष खड खड होकर जिठानी के पैरों तले बिखर गया है। अपने अत्यन्त दुर्लभ क्षणों को व्यर्थ जाते देखकर मेरा मन क्षोभ से भर गया।

तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया? देवरजी कहाँ हैं?

पति के सामीप्य सुख की कल्पना को पीपल के सूखे पत्ते सा हवा में उडते देखकर मैं क्रोधित हो गई। क्या इतनी रात गये जेठजी ने आपको अपने शयन कक्ष से बाहर घूमने की अनुमति दे दी ? अपनी वाणी की तीव्रता और व्यंग्यात्मक शैली से मैं भी चौंक गई थी। किन्तु उसने बडी चतुराई से मेरे प्रश्न में छुपे व्यंग्य और आक्षेप को पचाते हुए उत्तर दिया—

कुछ देर पूर्व तुम्हारे कक्ष के सामने से निकली तो देवरजी को कमरे के बाहर चहलकदमी करते देखा। मेरे पूछने पर उन्होंने तुम्हारे बंद कमरे की ओर संकेत किया था ?

उसे छोडिये। आप तो यह बतायें कि आप इस समय यहाँ किस कारण से आई है ? मैंने उसकी बात को काटते हुए पूछा।

उसने निर्लज्जता से मुस्कुराते हुए मेरी बात का उत्तर दिया— जाते समय तुम्हारे पति को अपने कक्ष में ले गई थी। इसी समाचार की सूचना लाई हूँ। और मेरे सुसज्जित सौन्दर्य को ऊपर से नीचे तक अपनी दृष्टि से अपमानित करती हुई वह चली गई।

'और तुम्हारे जीवन के कैलेण्डर से वह दिन भी हमेशा की भांति अनछुआ और अनकहा ही बीत गया। लेकिन एक बात समझ में नही आ रही है कि तुमने इतनी सहजता से अपने अधिकारों को कैसे छोड दिया ? क्या उसके अपनी भाभी के साथ चले जाने पर तुम्हारे हृदय में दुखद या सुखद कोई अनुभूति नहीं हुई।

किसी क्षुधातुर व्यक्ति के समक्ष रखी हुई छप्पन भोगों से युक्त थाली को हटा दिया जाये तो जो अनुभूति उसे होगी ठीक वैसी ही अनुभूति मुझ अल्हड और नवपरिणता पत्नी को हुई थी।

कथा के आरम्भ में श्रोता बनना मेरी विवशता थी क्योंकि मेरी लेखनी इसकी पहल में कमी रही थी लेकिन अब इसकी वृत्ति मेरे मन में रोचकता को जन्म दे रहा है। मेरे हृदय में बार बार सूर्य की चमक सा एक ही प्रश्न चमक जाता है कि क्या इसका पति इतना मूर्ख था कि वह अपनी नवविवाहिता में आये बसन्त को भी अनदेखा कर गया। या यह नियति का एक भयानक

खेल था जिसके तहत वह कक्ष में सौन्दर्यमयी पत्नी का प्रतीक्षारत छोड अपनी भाभी के निमत्रण को अस्वीकार नही कर सका। और_।

देखो यदि श्रोता का ध्यान भग हो जाये तो कथावाचक भी_ ?

नही नही मैं पूर्ण सजग तुम्हारी कहानी के अनसुलझे धागों को ही सुलझाने में व्यस्त था। मैने उत्तर देते हुए पूछा उस रात वह कितने बजे आया ?

मुझे नही मालूम रात्रि के कौनसे प्रहर वह कमरे में आया था।

क्या तुम सो गई थी ?

हा।

लेकिन तुम्हें उस रात उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए थी ?

मैं किसके लिए और क्यों प्रतीक्षा करती ? उसका स्वर आवेश से काप रहा था।

रात्रि के कुछ घट तो पति पत्नी के निजी होते हैं। तुमने इतनी सुगमता से अपनी सम्पत्ति पर डाका पड जाने दिया। अपनी सम्पत्ति की रक्षा के लिए तुम अपने पति से किसी भी प्रश्न का उत्तर माग सकती थी।

जब सम्पत्ति ही मेरी नही थी तो डाका पड जाने का क्या दुख मनाती।

वाह। तुम्हारी समझदारी का भी कोई उत्तर नही है। तुम कैसी बातें करती हो। एक ओर तो तुम आकाश से अलभ्य पति को अपने भुजबधन में लेने को उत्कठित थी उल्लसित थी बेचैन थी और दूसरी ओर जब तुम्हारे जीवन में ऐसा अलभ्य क्षण आया तो तुम नारीजनित मान कर बैठी। कम से कम उस रात तो तुमने अपने पूर्ण श्रृगार के मध्य उसकी प्रतीक्षा की होती_ ?

हूँ। लेखक हो ना। कहकर वह व्यग्य से मुस्कुराई।

लेकिन कल्पना के पखों पर बैठकर अनिवर्चनीय लोक की सैर करने के स्थान पर तुम्हारे साथ साथ चल रहा हूँ और इसी लिए कह रहा हूँ कि यदि उस रात तुम सोई नही होती तो शायद अछूती और अपूर्ण भी नही रहती।

मेरी बात सुनकर वह उदास हो गई। मेरा आशय उसके जी को दुखाना नही था। मैं उसे दिलासा सान्तवना देने के लिए मुँह खोल ही रहा था कि सुनाई पडा—

'अनछुई और अपूर्ण रह जाने का दुख मुझे भी था। जब अगली रात को मैं कमरे में गई तो वह वही पर था। मैं उसे कुछ कह पाती पूछ पाती उसके पूर्व ही मेरी तीसरी जिठानी, 'देवरजी आपके भाई आपको बुला रहे हैं। कहती हुई कमरे में घुसी और लगभग उसे खींचती हुई बाहर ले गई। मैंने भी अपनी नियति स्वीकार ली।'

मतलब तुम्हें कमरे में छोडकर वह रोज अपनी भाभी के पास चला जाता था और तुम रो धोकर सो जाती थी।

कैसे कहू कि मैंने इसे अपनी नियति मान लिया था। उसने चिढते हुए कहा।

तुम कैसी अजीब औरत हो ? क्या कभी तुमने इस विषय पर अपनी सास से बात नही की ?

क्या कहती ? यह कि वह अपनी भाभी के साथ अपने भाई की उपस्थिति में खुली छत पर ढेरो बातें करता है।'

मैं निरुत्तर सा उसे देखता रह गया।

अपनी ओर मुझे टकटकी लगाये देख वह कहने लगी— तुम लेखक हो फिर यों हैरत में क्यों डूब जाते हो ? आसमान की उडान का मोह त्याग कर तनिक धरती की पथरीली भूमि पर नगे पाव चलो, जीवन की वास्तविकता स्वत ही समझ में आ जायेगी।

मैं चुपचाप उसके कटाक्ष को पचा गया। मुझे कुछ न कहते देखकर उसने कहना चालू रखा— ससुराल में आये हुए एक महीना बीत गया था। मेरे पिता ने मुझे भेजने के लिए चिट्ठिया लिखी। मेरी सास अपने बेटे की छुट्टियों का हवाला देते हुए मेरी मायके जाने की तिथि को आगे खिसकाना चाहती थी। लेकिन मेरे ससुर ने मेरे पिता की इच्छानुसार मुझे भेजने की सूचना मेरे मायके भिजवा दी।

जाने से पूर्व तुम्हारी और माधव की सुलह हो गई थी। मेरी जिज्ञासा ने पूछा।

सुलह के लिए किसने अवसर ढूढा। न माधव न प्रयत्न किया न मैंने ही कोशिश की। रात्रि का प्रथम प्रहर वह छत पर अपने भाई भाभी के साथ व्यतीत करता था।

उसकी बात सुनकर मैं आश्चर्य में पड गया। दो व्यक्ति—एक स्त्री और एक पुरुष—एक ही छत के नीचे रहकर भी एक दूसरे से अपरिचित ही रह गये।

लेखक। तुम क्यों आश्चर्य कर रहे हो ? इस दुनिया में कभी कभी अनहोनी घटनाए भी घट जाती है।

यह मेरे मन की बात बिना मेरे कहे जान जाती है। क्या यह अनहोनी घटना नहीं है ? मन सोचा ही था कि उसका उत्तर सुनाई पडा— इसे अनहोनी घटना नही कहा जा सकता क्योंकि तुम और मैं अलग अलग युग के प्राणी हैं।

जब तुम मेरे मन की प्रत्येक शका का समाधान कर देती हो मेरे हृदय में उठने वाले प्रत्येक भाव को जान जाती हो फिर किसलिए तुमने मेरी लेखनी को अपने बन्धन में फास रखा है ? कुछ झुझलाते हुए मैंने पूछा।

क्योंकि तुम मेरी व्यथा से अनभिज्ञ हो। मैंने तुम्हें इसीलिए श्रोता बनाया है ताकि तुम मेरी पीडा को अपने शब्दों के माध्यम से मुखरित कर दो। जिस क्षण मैं तुम्हें अपना भोगा हुआ एक एक क्षण सुना दूगी बस उसी क्षण मैं तुम्हारे से दूर बहुत दूर चली जाऊगी।

ठीक है तुम बतला रही थी कि तुम बिना सुलह किये ही अपने मैके चली गई थी। मैंने कथा को तारतम्यता दी।

'वह मैके जाने से पूर्व की रात थी। उस रात मेरे मन में एक क्षीण आशा ने जन्म लिया था और उसी आशा की डोर के सहारे मैं उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थी। किन्तु लम्बी प्रतीक्षा के बाद भी वह नहीं आया तो सशय का जो साप कुडली मार कर मेरे हृदय में बैठा हुआ था फुफकारने लगा और जब उसकी फुफकार मेरे लिए असहनीय हो गई तो मैं कमरे के उढके हुए द्वार खोलकर ऊपर जाने वाली सीढिया चढ गई।

मैं अतिम सीढी पर जाकर बैठ गई और अपने चारों ओर फैले सघन अधकार को देखकर एक बार तो स्वय के नेत्रहीनता होने का भ्रम हुआ। और इस भ्रम को तोडने के लिए ऊपर आसमान की ओर देखा तो वहा अनगिनत

तारे अपने लघु रूप में टिमटिमा रहे थ। इधर मरा षोडशी मन अधकार की लपलपाती जिह्वा से भयभीत नीचे लौट जाना चाहता था कि मेरे भीतर के सशय के साप ने पुन फुफकार मारी और मै हिम्मत करके ऊपर छत की मुडेर क पास जाकर बैठ गई। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। अचानक खर्र खर्र की आवाज से मै चौंकी। कुछ निश्चय कर पाती उसके पूर्व ही मुझ सुनाई पडा—

शायद सो गये। यह सुनकर मुये लगा जैसे मैं आसमान से धरती पर गिर पडी हूँ। यह आवाज माधव की थी।

चलो उस ओर चलते हैं। यह जठानी की आवाज थी जिसे सुनकर मरे शरीर का रक्त रुक गया। मै दम साध कर दोनों की बातें सुनने लगी—

बडी लम्बी प्रतीक्षा करवाते हैं।

तुम्हारी पत्नी भी तुम्हारी प्रतीक्षा में बेचैन होगी ?

नही वह अब तक सो गई होगी।

बच्ची है ना। वह तुम्हारे इस बलिष्ठ युवा तन को कैसे सभाल पायगी ? कह कर जठानी हसी।

उधर खिसको। और कथन के साथ जेठानी की मेखला हिली।

तुम रात में भी य सब गहने क्यों पहिनती हो ?'

यदि मैं तुम्हारे साथ रात्रि जागरण के आनन्द को अनुभूत करने की अधिकारिणी होती तो मेरा सौन्दर्य वस्त्राभूषण विहीन ही होता ? और आगे के शब्द इतनी धीमी आवाज में थे कि कुछ दूर बैठी मैं कुछ भी नहा सुन सकी।

फिर क्या हुआ ?' उसे चुप देखकर मैंने पूछा।

'होना क्या था ? मैं अपने कमरे के लिए सीढिया उतरने लगी।

क्या यह जानकर भी कि वे दोनों एक दूसरे को पाने के लिए लालायित है तुम नीचे उतर गई ?

तो क्या करती। रात के सन्नाटे में अपनी पराजय स्वीकारती ?

अपने पति के बाहुपाश में अपनी जेठानी को आबद्ध जानकर भी तुम नीचे चली गई। सचमुच यह स्थिति तो बन्ध्यापुत्र सी अविश्वसनीय है। मैंने कहा।

यकीनन बन्ध्यापुत्र सी अविश्वसनीय है मेरी व्यथा । लेकिन लेखक उस क्षण मैंने यह जान लिया था कि मेरा पति जेठानी के अश्लील निमंत्रण के सम्मोहन का बधुआ है और उन दोनों देवर भाभी के सम्बन्धों के बीच किसी भी लक्ष्मण रेखा का कोई विधान नही है । फिर मैं वहाँ रुक कर क्या करती ?

उसकी बन्ध्यापुत्र सी अविश्वमनीय व्यथा सुनकर पहली बार मेरे मन में उसके जठ की अशक्तता के प्रति सहानुभूति उमडी उसके पति के प्रति पहली बार वितृष्णा की भावना उत्पन्न हुई और उसकी जिठानी के प्रति गहरी घृणा का भाव जागा ।

लेखक । किस चिन्ता में पड गये ?

मैं विचार रहा था कि दोनों के मध्य पनपने वाले इस अश्रेयस सम्बन्ध के लिए कौन जिम्मेदार है ?

तुम लेखक हो । तुम कहो तुम्हारी लेखनी क्या कहती है ?

इसके लिए तुम दोषी हो केवल तुम।

मैं ? लेकिन कैसे ?

क्योंकि तुमने स्वय का अपने पति के अनुरूप ढालने की कोशिश नहीं की । अच्छा तुम एक प्रश्न का सही सही उत्तर देना । स्त्री भोग की तुष्टि के लिए उसने भाभी के आंचल को अपना आश्रय स्थान क्यों जाना ? भाभी सरीखे इतराते इठलाते मदमाते यौवन का स्वामिना होकर भी तुम अपने कामातुर पति को अपने आकर्षण में नही बाध पाई । तुम एक सफल भृत्या बनकर अपनी सास की सेवा तो करती रही किन्तु अपने नारीत्व को पराजित होने से नही बचा सकी । इसीलिए तुम्हारे लिए अत्यन्त दुर्लभ तुम्हारे पति उसके लिए सुलभ हो गये।

मेरी पराजय का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि माधव की आखों में वह मेरे ब्याह से पूर्व ही चढी हुई थी।

तुमने इस रहस्य को अपनी सास से क्यों छुपा कर रखा ?

यह सुनकर वह भडक गई तुम आज के युग के सन्दर्भ में अपने विचार प्रगट कर रहे हो जबकि मैं तुम्हें अपने युग की कथा सुना रही हूँ जहाँ पत्नी के पास ऐसी कोई मणि नही थी जिसके प्रकाश में वह भटके हुए पति को सही

रास्ता दिखला सकता। तब नारी का अर्थ था स्वीकृति। किसी भी दुखद अथवा सुखद घटना का उत्तरदायी केवल उसका भाग्य होता था।

वही तुमने किया। अपने भाग्य को दोषी मानते हुए माधव को अपनी ओर आकर्षित करने के स्थान पर उस जेठानी के हाथों सौंप कर अपने पीहर चली गई। खैर छोड़ो इन बातों को। तुम एक प्रश्न का सही उत्तर देना। क्या मायके के जीवन के मध्य माधव की स्मृतियों ने तुम्हें दुखी किया था?

'मेरा पूरा दिन घर के सदस्यों के साथ जैसे तैसे बीत जाता था। लेकिन जैसे ही सांझ का झुटपुटा आरम्भ होने लगता वैसे ही मेरे मन की बेचैनी भी बढ़ने लगती। फिर रात्रि में सघन अंधकार के बीच मेरी कल्पना शक्ति एक दूसरे में गुथे हुए उन दोनों को मेरे समक्ष खींच कर ले आती। जेठजी के खर्राटे और उन दोनों की फुसफुसाहट मुझे व्याकुल बना देती थी और मेरी व्यथा अश्रुकणों के रूप में मेरे मुखमण्डल पर ढुलक जाती थी।

तुमने पत्र के द्वारा अपनी व्यथा की चर्चा माधव

क्यों? क्यों माधव को पत्र द्वारा अपनी व्यथा की सूचना देती? मेरे वाक्य के बीच में ही उसने क्रोधित वाणी में पूछा।

कितने दिनों तक पीहर रही? विषय बदलने के उद्देश्य से मैंने पूछा।

एक वर्ष तक।

इतने लम्बे समय तक? फिर हसते हुए मैंने कहा तुम्हारा उत्तर सुनकर मुझे ऐसा लग रहा है मानो पुरानी स्मृतियां तुम्हारे मानस से ओझल होने लगी है।

नहीं नहीं मेरी जिन्दगी का बीता हुआ एक एक क्षण मुझे डायरी के नियमित लिखे जाने वाले पन्नों की भांति स्मरण है। दरअसल तुम्हें आश्चर्य हो रहा है कि मैं एक वर्ष तक अपने पीहर में रह पाई?

तुमने मेरे मन के संशय को ठीक पकड़ा। माधव और अपनी जिठानी की काम लीलाओं से परिचित तुम एक वर्ष तक अपने पीहर में रह गई। मैंने पुन आश्चर्य व्यक्त किया।

आरम्भिक दिनो में मा यह कहती रही कि लडकी नादान है यह वहाँ जाकर क्या करेगी ? चार माह बाद जब ससुरजी ने पुन बुलाने का पत्र भेजा उस समय मा का स्वास्थ्य बहुत खराब था। मा की बीमारी को ठीक होते होते चार पाच महिने बीत गये। मा के स्वस्थ हो जाने पर मेरे ससुरजी का पुन पत्र आया जिसमें मेरी तीसरी जेठानी के प्रसवकाल का जिक्र था। उस नकचढी जेठानी की सेवा करने के लिए मैं तैयार नही थी अत इस बार मैंने अपनी दोनों बडी जेठानियों का हवाला देते हुए ससुराल जाने की अनिच्छा व्यक्त की। समय लेखक महोदय। फिर किंचित व्यग्य से मुस्कुराती हुइ बोली मेरी स्मृतियों की बेचैनी ही मुझे तुम्हारे पास खीच लाई थी।

मैं उसकी अतिम पक्ति का आशय समझ कर भी चुपचाप सुनने की मुद्रा धारण किये रहा। मेरी यह श्रोता की मुद्रा देखकर वह पुन मुख मुस्कुराती सी प्रतीत हुई। मैने सोचा— क्या यह अस्पष्ट आकृति सचमुच मुस्कुराती है या मैं कल्पना करता हूँ ?

तुम्हारा सोचना ठीक है । कभी मैं सचमुच मुस्कुराती हूँ तो कभी तुम्हारी कल्पना मुझे हसा देती है।

उसके शब्द सुनकर मेरे विचार ठहर गये। समझ गया कि मेरे मन के भाव स्वत ही प्रगट हो जाते हैं। कुछ देर के पश्चात मैंने मौन तोडा —

ससुराल से कौन लेने आया था ?

मेरे पति।

तुम्हारे पति ?

हा। लेकिन इसमें हेरत जैसी क्या बात है ?

जिस व्यक्ति ने क्षण भर के लिए भी तुम्हे पत्नी रूप में स्वीकार नही किया वही किस अधिकार से तुम्हें लेने पहुँच गया ?

यदि पति अपने अधिकार का प्रयोग अपनी पत्नी पर नही करेगा तो क्या उसका पुरुषत्व नपुसक नही हो जायेगा ?

"उसके व्यग्य ने मुझे भी भीतर तक तिलमिला दिया और जब तक मेरा जख्मी पौरुष उसे फटकारता तब तक वह आगे बढ गई थी— मेरे घटना चित्रण

को मात्र काल्पनिक आख्यान का एक अश मत समझो इसमें जीवन की सत्यता का जहर घुला हुआ है और थोडा विषपान तुम भी मन से कर लो ताकि मेरे आकुल व्याकुल मन को सही न्याय दे सको।

उसकी सीख को मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

हा तो मैं अपने पति के साथ ससुराल पहुँच गई।

क्यों रास्ते में कोई बातचीत नही हुई ?

हमारे गाव क दो परिचित भी हमारी बैलगाडी में साथ थे। अत हम दोनो क बीच कोई बात नही हो पाई।'

ओह। कह कर मैं चुप हो गया।

"घर पहुँचने पर ससुराल का जीवन आरम्भ हो गया। मरी सास और जेठानियों के चरण स्पर्श करन क उपरान्त मैं पीढे पर बैठ गई। तभी मैंने सुना मेरी सास मेरी बडी जिठानी स कह रही थी— जा मुन्ने की मा को बुला ला।

मुन्न की मा कौन है ? मैने अपनी दूसरी जेठानी से पूछा।

तुम्हारी तीसरी जेठानी उसे हम सब मुन्ने की माँ कहते हैं।

हम दोनों की बातचीत आगे बढ भी नही पाई कि मेरी बडी जठानी मुन्ने की मा को ले आई। मैंने उठकर जिठानी के पाव छुए।

आशीर्वाद मिला ? मैंने हसी की।

हा आशीर्वाद तो दिया किन्तु उसकी मुखमुद्रा मुझे देखते ही विकृत हो गई। लेकिन इस बार मैंने उसकी कुपित मुद्रा की चिन्ता किये बिना उसको घूघट की ओट में से देखा। उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था कि सास ने पूछा—

मुन्ना कहाँ है ?'

सो रहा है।

ठीक है। कहते हुए मेरी सास उठकर बाहर चली गई।

सास के चले जाने पर हम चारों ने अपने अपने घूघट सरका दिये। मेरी दृष्टि तीसरी जिठानी पर पडी। वह आग्नेय नेत्रों से मेरी ओर देख रही थी। मैं

उस तीक्ष्ण दृष्टि का पचा नही सकी। मैंने व्यग्यात्मक शैली का सहारा लिया आपकी तो पहलोठी में ही काया पलट हो गई। एक मुन्ने को जन्म क्या दिया आपने तो अपना सौन्दर्य ही खो दिया।

यह सुनकर वह चौंकी। उसने मेरे अनछुए सौन्दर्य की ओर देखा उसे ईर्ष्या हुई। उसने भी ताना मारा लेकिन तुम्हारी सुन्दरता द्विगुणित हो गई?

तुम भी कैसी बचकानी बातें करती हो? अरे इसके रसिक भ्रमर ने साल भर से तो इसे छुआ भी नही है। तभी तो देखो इसका सौन्दर्य मर्यादा की अवेहलना करता हुआ इसके अगों से फूट रहा है। मेरी सबसे बडी जेठानी ने परिहास किया।

इसके प्रत्युत्तर में मेरी तीसरी जेठानी ने अपनी जिह्वा से गरल उगला— एक वर्ष पूर्व तो रसिक भ्रमर ने अवश्य रसपान किया होगा। या फिर हमारी देवरानी जैसी आई थी वैसी ही चली गई। यह सुनकर मेरी दानों बडी जेठानिया हस पडी किन्तु मैंने उसकी गर्वोक्ति में छुपे व्यग्य आर तिरस्कार को समझने में भूल नही की। अपमान से मेरा मन दुखी हो गया। मेरे पति की बाहों में झूलती जिठानी मेरे हृदय में शूल की भाति पीडा पहुँचाने लगी। दोनो की फुसफुसाहट मेरे कानों को दग्ध बना गई।

क्या हुआ? कहाँ खो गई? अभी से माधव की प्रतीक्षा सताने लगी। दो तीन घटों की प्रतीक्षा के बाद ही अपने रसिक भ्रमर के दर्शन कर पाओगी। मेरी जिठानी ने पुन चुहल की।

मैं कुछ उत्तर देती उसके पूर्व ही मेरी सास के शब्द सुनाई पडे— देख बहू, मेरे माधव के बाल रूप को।

मैंने ऊपर की ओर मुहँ उठाया तो सास की गोदी में एक बच्चा दिखाई पडा। मैं चौंकी। तब तक तो मेरी सास ने बच्चा मेरे हाथों में सौंप दिया। मैंने बच्चे को अपनी गोदी में सुलाया उस पर दृष्टि डाली। माधव कभी भी मेरे निकट नही आया था लेकिन इसे देखकर लगा जैसे माधव ही मेरी गोद में लेटा हुआ है। न जाने किस प्रेरणा से वशीभूत मैंने मुन्ना के गालों को अपने गालों से सटा लिया। मैंने उस स्पर्श में माधव के स्पर्श का अनुभव किया मेरा हृदय स्पन्दन बढा। मैं उस सुख को अनुभव कर पाती उसके पूर्व मेरी पत्थर हृदया जेठानी

ने लाओ दूध पिला दूँ। करते हुए मुझसे मुन्ना ले लिया। उस क्षण मैंने अनुभूत किया जैसे किसी ने मेरी अथाह सम्पदा छीन कर मुझे अकिंचन बना दिया हो।

'देखिये माजी छोटी भी मुन्ना को देखकर सोच में पड गई है।

अरे इसमें सोचना कैसा। घर में सब एक साथ रहते हैं। बच्चा किसी की शक्ल पर तो जायगा ही। मुन्ना बाप की सूरत पर नहीं गया तो अपने काका की सूरत पर चला गया। सरल हृदया सास ने सहज भाव से कहा।

अच्छा हुआ बाप की सूरत पर नहीं गया वरना सावला होता।' मेरी दूसरी जिठानी ने ठिठोली की।

तुम्हारी तीसरी जेठानी ? उसने कुछ नहीं कहा ?

'वह फीकी हसी हस कर रह गई।

'शायद उसके अन्तर्मन ने उसे धिक्कारा होगा ? मैंने कहा।

उसके अन्तर्मन की बातें तो वह जाने। हा उस समय मुझे अवश्य अपनी तीसरी जिठानी और एक परायविलासिनी के बीच अधिक अन्तर नहीं जान पडा।

परायविलासिनी ? मैं यह सुनकर चौंका।

जिस बच्चे के जनक का नाम छद्म रखा गया हो वह परायविलासिनी की सतान ही तो कहलायेगी। मेरी कोख में पलने का अधिकारी किसी अन्य की कोख में साधिकार प्रवेश कर जाये तो मैं परित्यक्ता ही कहलाई गई ना।

उसके मुह से 'परित्यक्ता और परायविलासिनी शब्दों की विवेचना सुनकर मैं क्षुब्ध हो गया। यद्यपि अब मेरा मन भी कुछ-कुछ दुखी हो गया था किन्तु लेखनी को बन्धन मुक्त करवाने के लिए कथा में तारतम्य बनाये रखना आवश्यक था। अत कथा को आगे बढाने की दृष्टि से पूछा— माधव के साथ रात में सुलह हो गई...?

'नहीं।'

लेकिन क्यों ?' उसके सक्षिप्त उत्तर से असतुष्ट मैं पूछ बैठा।

'जब मैं कमरे में गई तब माधव कोई किताब पढ रहा था। मेरे पावों की आहट से उसका ध्यान भग हुआ। मुझे देखकर वे बैठ गए। मैंने भी हिम्मत

करके अपनी आखें उन पर टिका दी—वे साक्षात कामदेव सरीखे लगे। उनकी दृष्टि भी मेरे सौन्दर्य पर टिकी हुई थी—शायद मेरे अनछुए रूप का आकर्षण उन्हें सम्मोहित कर गया—मैंने उन्हें कहते हुए सुना—पिछली बार तुम एक बच्ची सी दिखलाई पडती थी लेकिन इस बार का तुम्हारा यह षोडशी रूप—? और अपना वाक्य अधूरा छोडकर उन्होंने अपनी बाहें मेरी ओर बढा दी। लेकिन मैं उस निमंत्रण को अनदेखा करके टेबल पर रखी किताबों की ओर देखने लगी।

यह क्या कहती हो तुम ? तुम उस निमंत्रण को अनदेखा कर गई। अरे! आकाश कुसुम सा दुर्लभ अलभ्य प्रेम जब स्वयं तुम्हारे पास आया तो तुम स्त्री सुलभ मान कर बैठी। लेकिन क्यों ?

क्योंकि जिसे तुम आकाश कुसुम सदृश अलभ्य कहकर पवित्रता के आसन पर बिठला रहे हो वह मुझे मेरी जिठानी की जूठन लगा था। मैं अथक प्रयास के उपरान्त भी मेरी जिठानी की कामान्धता के साथी के निमंत्रण को स्वीकार नही कर पाई थी क्योंकि मुझे डर था कि उसके घिनौने स्पर्श से कहीं मैं भी अस्पृश्य नही बन जाऊ ?

शायद तुम्हारा सोचना ठीक हो क्योंकि तुमने अपनी अमूल्य सम्पदा हरण की वेदना को सहन किया था। मैं किस आधार पर तुम्हारी एकान्तिक मनोव्यथा को अनदेखा करके यह कह दू कि यदि उस क्षण तुम अपने पति के निष्ठुर एवं अमानवीय व्यवहार को भुला कर उसके समक्ष अपने हृदय के समस्त प्रेम को उडेल देती तो वह भी अपने प्रेम के अथाह सागर में तुम्हें नहला देता।

कैसे कह दूँ ? कैसे कह दूँ ? की रट के बीच सब कुछ कह भी गए। इतना कहकर वह अस्पष्ट आकृति मुस्कुराकर आगे का कथा सुनाने लगी—तुम्हारा कहना भी सही है और मैंने इस विषय पर तुम्हारी भांति सोचा विचारा भी था लेकिन—।

लेकिन क्या ? बोलो ? मैंने उतावलेपन से पूछा।

मैं असफल रही क्योंकि मैं अपने हृदय से अपनी जिठानी को बाहर नहीं निकाल पाई। मैं प्रत्येक आने वाली नई सुबह से वादा करती कि आज की रात को मैं एक रसमयी रात के रूप में बदल दूगी किंतु सांझ ढलने के साथ साथ

भोर की प्रथम किरण के साथ किये गये वायदे जेठजी के खर्राटों के मध्य तो कभी जिठानी की खनकती हँसी की गूज के बीच में खो जाते। और माधव के साथ रात्रि का एकान्त बासी और अर्थहीन लगता।

तुम्हारा यह उपेक्षणीय व्यवहार__?'

'उसे उसी रात स्तब्ध बना गया था जब मैंने उसके निमत्रण का अपमान किया था।' वह बीच में बोली।

'तुम्हारा उपेक्षणीय व्यवहार क्या उसे पुन जिठानी के पास ले गया?'

नही नही क्योंकि रात्रि के गहन सन्नाटे के बीच पुत्र रुदन ही उसकी कामुकता का कठोर प्रहरी बन गया था। इसलिए वह इच्छा रहने पर भी माधव के साथ सम्बन्ध नहीं रख सकती थी। और माधव। मेरे से उपेक्षित रात में बाहर के एक दो चक्कर अवश्य काट लेते थे फिर निराश पलग पर आकर पड जाते थे।

'तुम्हारा मन उस प्रेम__।

मैं तो उसे प्रेम करती ही थी किन्तु मन ही मन में।

लेकिन ऐसे समय में जब तुम्हारी जिठानी अपने पुत्र के रुदन के कारण अपनी ममता को नही त्याग पाती थी तो क्यों नही तुमने एक कदम आगे बढकर माधव को अपने प्रेम का स्पर्श दे दिया। तुम्हारा स्नेहिल स्पर्श उसके चरित्र को निखार देता।

हाँ शायद स्वय को उसके अनुरूप बनाने की कोशिश करती तो उस काली घिनौनी रात के दुख दर्द से मैं अपरिचित रहती।

उस रात क्या हुआ था? क्या माधव और तुम्हारी तीसरी जिठानी के अनैतिक सम्बन्ध पुन अकुरित होने लगे थे?

नही, बल्कि उस दिन उसका पुत्र मेरी गोदी में था। उसने मेरी साडी को गीला कर दिया था। मैं अपने कमरे में आकर अपनी साडी बदलने लगी थी। दरवाजा उडका हुआ था और मैं अपने विचारों में लीन थी। अचानक किसी हल्की आहट ने मुझे चौकाया। आँखे ऊपर उठाई तो सामने माधव को अपलक दृष्टि से अपनी ओर निहारते देख लाज से मेरे नेत्र नीचे झुक गये। अपनी अधखुली

देह की कल्पना मात्र स ही मेरा मन लज्जित हो गया। क्या करू ? कैसे करू ? के ऊहापाह में फसी मैं अपनी दह को ढक पाती तब तक ता माधव की बलिष्ट बाहों न मुझे अपन घर में लपट लिया। अहनिर्श जिस बन्धन क स्वप्न देखे थ उसी में स्वय को आबद्ध देख मैं अपने भाग्य पर गर्व कर उठी। मेरा मन उस चौडी छाती पर सिर टेकने के लिए व्याकुल हो गया और ज्यों ही मैंने अपना सिर टिकाया त्यों ही जिठानी मरे कानों क पास फुसफुसाई—तुम पति द्वारा परिरंभित आलिंगत अपने भाग्य पर गव करने स पूव यह सत्य अवश्य जान लेना कि यह सब मेरा भोगा हुआ है यह मरी उतरन है जिससे तुम अपना श्रृगार कर रही हो। और मै उस भुजवेष्ठन से छिटक कर दूर जा खडी हुई। अपने कपड ठीक करके माधव को विस्मित सा छोडते हुए मैं कमरे से बाहर चली गई।

जब रात को सोने के लिए कमरे में आई तो ? तो क्या तुम अपनी जिठानी को भूल पाई ?

जब मैं कमर म आई तब कमरा खाली पडा था। मैं द्वार उडका कर कटे पेड की भाँति पलग पर पड गई।

माधव का युवा आकर्षक बलिष्ठ शरीर बार बार आँखों के सामने आकर निमत्रण दे रहा था और मैं इस बासी समझकर ठुकरा रही थी। मेरी मुदी हुई आखें इस हा ना के द्वद्व में फसी हुई थी कि दो बाहों ने मुझे गर्दन के पास स उठा लिया। मैंने घबराकर आखें खोल दी। सामने माधव को देखकर मरे नेत्र स्वत मुद गए। माधव के युवा तन की महक से पुलकित मैं उस भुजवेष्ठन में समा गई। मैं भुजवेष्ठित उस भुजवेष्ठन को अनुभूत कर पाती तब तक तो उसकी क्षुधातुर भगिमाओं ने मेरे शरीर को जहाँ तहाँ से पाडित करना आरम्भ कर दिया। उस मधुर पीडा से सम्मोहित में समाधिस्थ होने की प्रक्रिया में लीन हुई तब तक तो वह पलग के दूसरी ओर आ गया था।

तुम्हारी इच्छा अनिच्छा की चिन्ता किये बिना उसने अपना पुरुषत्व तुम पर लाद दिया ? लेकिन मैं इसे प्रथम परिचय कहूँ या बलात्कार। मैंने विवश भाव से पूछा।

और यह बलात्कारी पुरुष छुट्टियाँ खत्म होने तक इसी भाँति मेरा शोषण करता रहा।

'तुमने प्रतिरोध नहीं किया?'

नही क्योंकि मैं उसकी पत्नी थी।

'जब तुमने उसके भुजवेष्ठन को छिटका था तो क्या उस समय तुम पत्नी नहीं थी ?' मैंने किंचित उपहास करते हुए पूछा।

अपनी इस भूल को मैंने घटना सुनाने से पूर्व ही स्वीकार कर लिया था। अस्पष्ट आकृति ने कहा।

यदि तुम्हारे में अह...?

नही नही। मुझमें अह नही था मैं चाहती थी कि वह मुझे प्रेम करे। खैर प्रेम की चाह तो वही रह गई और मेरा वह बलात्कारी पुरुष मुझे गर्भवती बनाकर अपन अध्ययन के लिए चला गया।

वाह! तुम माँ बनने वाली थी।

लेखक । जानते बूझते कम से कम तुम तो मेरा उपहास मत उडाओ । जानती हूँ यह मेरा समर्पण नहीं था लेकिन मा बनने के लिए पति के साथ किसी आत्मीय या अन्तरग सम्बन्ध की आवश्यकता नही होती है। यदि मेरा गर्भ मेरे पति प्रेम की निशानी होती तो क्या मेरी जिठानी इन शब्दों को कहने का साहस जुटा पाती।

हाँ तुम्हारे गर्भवती की सूचना पर उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई?'

'कुछ लोगों का जन्म जूठन खाने के लिए ही इस धरती पर होता है।

तुम इन शब्दों को सहन कर गई?'

क्या करती? क्योंकि मैं जानती थी यह जो कुछ भी कह रही है वह सत्य है। मेरी सौतिन बन कर मेरे पति के साथ काम केलि तो इसी ने भोगी थी। मैं तो केवल उसके बलात्कारी स्वरूप से ही परिचित थी।'

तुमने भूल की। तुम्हें उसी क्षण उसके और माधव के अनैतिक सम्बन्ध के रहस्य को खोल देना चाहिए था।' कथन के साथ मैंने उसे देखा तो वह रहस्यमय ढग से मुस्कुराती दिखाई पडी। मैं उसकी ओर अपलक देखता रहा।

धीर धार मरा गर्भावस्था काल पूरा हुआ आर मैंने एक पुत्र को जन्म दिया। इस खुशी के अवसर पर माधव का भी बुलाया गया।

अपने पुत्र को देखकर बहुत खुश हुआ होगा ?

उस पुत्र से अधिक रुचि भाभी में थी। यों भी मर जच्चाघर में रहने के कारण मरा कमरा उसकी भाभी के लिए भी सुलभ हो गया था। कुछ दिन रहकर वह पुन परीक्षा देने चला गया।

आह। के साथ मैंने लम्बी सास भरी।

लेखक ! मेरा अपूर्ण पत्नीत्व अथाह व्यथा स परिपूर्ण था किन्तु पुत्र प्राप्त करक मेरे मातृत्व ने सार्थकता प्राप्त कर ली थी। मेरे जच्चाघर से बाहर आने पर मैंने अपनी सौतिन से बातचीत बद कर दी थी। घर भर में खेलता चौकडी भरता उसका पुत्र मुझे उसके और माधव के अनैतिक सम्बन्धों का स्मरण करवाता रहता। मन ही मन घुलने के कारण मरा स्वास्थ्य गिरता गया। मेरी सास मुझे माधव की छुट्टिया खत्म होने के बाद मैके भेजना चाहती थी लेकिन उसने मेरे गिरते स्वास्थ्य को देखकर छुट्टिया शुरू होने से पहले ही मुझे मैके भिजवाने का प्रबन्ध कर दिया।

हमेशा की भाति माधव छुट्टिया होन पर घर आया। यद्यपि मेरी उपस्थिति या अनुपस्थिति उसके लिए कोई महत्त्व नही रखती थी तो भी मैं उन दोनों के अनैतिक सम्बन्धों के लिए ढाल बनी हुई थी। इस बार मेरी अनुपस्थिति की प्रसन्नता से आह्लादित माधव और मेरी तीसरी जिठानी मर्यादा के सभी नियमों का उल्लघन करने लगे। मर्यादा के निरावरण होने पर उन दोनों के अनैतिक सम्बन्धों को मेरी सास की अनुभवी दृष्टि ने पकड लिया। अपनी अस्वस्थ पुत्रवधू की सम्पत्ति पर डाका पडते देखकर मेरी सास ने मर रक्षार्थ अपनी कमर को कस लिया। अब मेरी सास की चौकादारी ने मेरी जिठानी को मेरे पति के निकट भी नही फटकने दिया। जिस प्रकार एक बिल्ली अपने नवजात बच्चे को दूसरों की दृष्टि स छुपाये रखती है उसी प्रकार मेरी सास ने मेरे पति को मेरी तीसरी जिठानीसे छुपाये रखा।

मेरे पति की छुट्टिया खत्म होने में एक सप्ताह बाकी था। मेरी सास ने जबरदस्ती माधव को मेरे स्वास्थ्य की खबर लेने के लिए मेरे मैके भेज दिया।

मैं कल्पना कर सकता हूँ माधव को अपने पीहर में देखकर तुम कितनी प्रसन्न हुई होगी ?' फिर मैंने हसकर उसे छेडते हुए आगे कहा वहाँ तुम्हारी तीसरी जिठानी का भूत भी तो नही था जिसकी चिन्ता करके तुम अपने ससुराल में गीली लकडी की भाति सुलगती रहती थी।

मेरी बात सुनकर वह चुप रही फिर कहने लगी मेरे पति रात में जिस समय मेरे पीहर पहुँच उस समय मैं गहरी नींद में सोई हुई थी। अचानक अपने माथे पर किसी का स्पर्श अनुभव करके मैंने अपनी आख खोली और सामने माधव को देखकर मैं चौंक गई। फिर मैंने यह सोच कर अपनी आखों को मसला कि कहा यह कोई स्वप्न तो नहीं ?किन्तु नहा बार बार आखे खोलने पर माधव को सामने देखकर यह पक्का विश्वास हो गया कि यह कोई स्वप्न नही अपितु यथार्थ है। किन्तु मैं प्रसन्न होने के स्थान पर उनके बलात्कारी स्वरूप का स्मरण करके भय के कारण कापने लगी। मुझे कापते देखकर उन्होंने आगे बढ़कर मेरे माथे को छुआ मेरा माथा ठडा था। अत उन्होने आश्चर्य व्यक्त किया तुम्हारा माथा ठडा है फिर तुम काप क्यों रही हो ?' कहकर वे थोडी देर मेरी ओर देखते रह फिर आग बढकर उन्हाने मर हाथ को छुआ

नहा नही। कहत हुए अपना हाथ छुडाकर मैं पलग क दूसरे किनार से जा लगी। माधव से दूर हटकर बैठन पर भी मेरा मन काप रहा था। मेरी कपकपाहट कपकपी देखकर वे पुन आश्चर्यमयी वाणी में बोले 'न तुम्हारा शरीर गर्म है न तुम्हें सर्दी लग रही है फिर भी तुम काप रही हो लेकिन क्यों ?' क्यों काप रही हो ?

'क्योंकि__क्योंकि आप__? और मेरे आगे के शब्द रुलाई में खो गये।

मुझे रोते हुए देखकर माधव मेरी ओर बढे। मैं भयभीत हरिणी सी शिकारी को अपनी ओर बढते देखकर जोर जोर से कापने लगी। भय के कारण मेरे नेत्रों से आसू टपक रहे थे। वे मुझे इस तरह बिलखते देखकर हक्के बक्के रह गये।उन्हें यों असमजस की स्थिति में खडे देखकर मैं बाहर जाने के लिए पलग से नीचे उतर गई। किन्तु अपने निर्बल अस्वस्थ शरीर के कारण मेरी आखों के सामने अधेरा छा गया और मैं वही बैठ गई। मुझे गिरते देखकर वे मेरी ओर लपके अपनी भुजाओं के सहारे उठाकर उन्होंने मुझे पलग पर सुलाया और

स्वय मेरे पास बैठ गये। उन्हें अपने पास बैठे देखकर मैंने स्वय को चारों आर से समेट लिया और मैं गुडमुड हाकर वहीं गुदडी सी पडी रही।

अब इन्हें मेरे कापने का अर्थ समझ में आया। मन ही मन स्वय को धिक्कारते हुए ये मरे पास से उठकर कुर्सी पर बैठ गये। इन्हें वहाँ से उठा जानकर मैंने राहत की सास ली और मैंने अपने हाथ पैर फैला दिये।

तुम यह कैसे कह सकती हो कि कुर्सी पर बैठकर ये स्वय को धिकारते रहे—।

क्योंकि कुर्सी पर बैठने के पश्चात ये एक बार भी मेरी ओर न तो बढे और न ही फिर काई सवाल किया। बस चुपचाप अपराधी भाव स मरी आर देख लेते थे। मेरे प्रश्न का उत्तर देकर वह आगे कहने लगी— मुझ ध्यान ही नही रहा कि कब इनको चौकसी करते करते मरी आख लग गई। सुबह नींद खुली दृष्टि सामने पडी कुर्सी पर गई वह खाली थी। खाली कुर्सी को दखकर मन अनजानी पीडा से भर गया। रात के बारे में मैं सोचती रही। फिर उठकर बाहर गई तो दखा मेरे पति मेरे पुत्र को गोद में लिए खडे थे। मैं प्रसन्न मन से पुन अपने कमरे में चली गई। वहाँ पहुँचने पर मेरा मन माधव की पिछली भूलों को माफ करके उसक पास जाने के लिए छटपटा उठा। मैंने उन्हें देखने के लिए द्वार से बाहर झाका तो अपने पुत्र को मरी मा की गोद में थमाते माधव से मेरे नेत्र मिले—हालाकि यह दृष्टि मिलन क्षण भर का ही था लेकिन बहुत कुछ कह गया था।

तुमने यह रात्रि भी आँसुओं के बीच और नींद के मध्य गवा दी। इसे तुम्हारा पागलपन कहूँ या ?

लेखक। तुम कुछ भी मत कहो तुम केवल सुनों। कुछ कहना चाहो भी तो समय आने पर कहना। लेकिन अभी कुछ मत कहो। अभी तो मेरी सुनो—। इतना कहकर वह चुप हो गई। कुछ देर चुप रहने के पश्चात बोली—

लेखक। तुम मुझसे नाराज मत होना क्योंकि इस दृष्टि मिलन में मैंने उनका दूसरा रूप देखा था और मैं नही चाहती थी कि तुम इस अहसास को अपनी बुद्धि की डोर से इधर-उधर खीच करटुकडे टुकडे कर दो। उसने मुझे समझाया। दो पल रुकी उसके बाद अपनी कथा क साथ साथ आगे बढने

लगी—"जाते जाते माधव मेरी माँ से मुझे कुछ महीनों तक पीहर रखने के लिए करता गया।"

तुम यहाँ कब तक रही ?

'करीब डेढ वर्ष तक।

'तुम्हारा बेटा भी बड़ा हो गया होगा ?

हां जब मैं अपने ससुराल आई तो मेरा बेटा दो वर्ष का हो गया था।

तुम डेढ़ वर्ष तक पीहर रही तो तुम्हारे ससुराल में तुम्हारी जिठानी और माधव के बीच ?

नहीं नहीं माधव इन डेढ वर्षों में घर गया ही नही अपितु छात्रावास में रहकर अपनी पढाई करने के साथ साथ उसने अपने मित्र के साथ एक लघु व्यवसाय चालू किया। माधव के मित्र के पास अपार धन राशि थी और माधव के पास भगवान की दी हुई बुद्धि। दोनों के परिश्रम से व्यापार कुछ ही महीनों में फलने फूलने लगा।

मैं जब अपने पीहर थी तब इस आशय का पत्र उसने मेरे पिताजी को लिखा था। मुझे आज भी स्मरण है अपने पिता की वह मुख मुद्रा जो दामाद के व्यापारी बन जाने पर प्रसन्नता से चहक उठी थी। अभी इस प्रसन्नता को हम लोग पचा भी नहीं पाये थे कि माधव के पास होने की खबर आई। घर भर में खुशी की लहर छा गई।

मुझे आये डेढ वर्ष हो गया था। मेरे ससुर के मुझे भेजने के लिए पत्र आने लगे थे। अन्तत मुझे अपने भाई के साथ ससुराल के लिए विदा कर दिया गया।

मैं ससुराल पहुँच गई थी लेकिन माधव वहाँ नही था। मैंने पहिली बार माधव की अनुपस्थिति को अनुभव किया । उसकी अनुपस्थिति ने मेरे मन में खिन्नता और रिक्तता भर दी। अपने मन की परिवर्तित अवस्था से मुझे प्रसन्नता और क्षोभ दोनो हुए। वरना_?

क्यों दोनों भाव क्यों ?

क्षोभ इसलिए कि मैं उदास थी और अपने मन की खिन्नता से मैं इसलिए प्रसन्न थी क्योंकि यह माधव के प्रति मेरे प्रेम को व्यंजित करती थी।

यह स्थिति कितने माह तक रही।

करीब छ माह की प्रतीक्षा के बाद माधव घर आया। मुझे याद है उस दिन साझ की मटमैली चादर सम्पूर्ण पृथ्वी को धीमे धीमे ढाप रही थी। हम लोग रसोई घर में व्यस्त थी अचानक बाहर खेलते बच्चों में शोर मच गया। हम लोगों ने जिज्ञासा वश रसोई की जालीदार खिडकी से बाहर झाका तो बच्चों से घिरे हुए माधव की छवि दिखलाई पडी। मैं उसकी बलिष्ठ कद काठी को देखकर ऊपर से नीचे तक काप गई। अपने शरीर की थरथराहट को मिटाने के लिए मैंने आखे बद कर ली। मुझे यों आखे बद किये देखकर मेरी बडी जिठानी ने ठिठोली की। बहिना। अभी सुध बुध मत खो। अभी तो कमरे में जाने के लिए चार पाच घटे शेष है।

मैंने लज्जित होते हुए मुस्कुरा कर धत् कहा। जिसे सुनकर मेरी तीसरी जिठानी ने मेरी खिल्ली उडाते हुए कहा कमरे में जाकर भी क्या कर लेगी ? बच्चा पैदा करने से ही कोई_।

देखो। यह बच्ची थी तब बच्ची थी अब बेटा जन कर यह भी बडी हो गई है। इसे अब बच्ची समझने की भूल तुम मत करना। उसके अधूरे वाक्य को पूरा करती मेरी दूसरी जिठानी कमरे से बाहर निकल गई।

इन तीनों की आपस की बातचीत ने मेरे मन से माधव के आने की खुशी को बाहर निकाल दिया। मेरा मन अनजानी पीडा से भरने लगा। यह कैसा भाग्य अपने लिए विधाता से लिखवाकर लाई हूँ ? जब भी मेरे जीवन में खुशी का अवसर आता है तभी दुख भी कही से भागता हुआ आकर मेरे भाग्य से चिपट जाता है। मेरे हाथ रसोई के कामों को सलटा रहे थे लेकिन मेरा मन उलझे तानों बानों को सुलझाने का प्रयत्न कर रहा था। ऐसे में धीर गम्भीर स्वर सुनाई पडा— भाभी। एक पानी का गिलास देना।

मेरी दृष्टि ऊपर उठी माधव रसोई की चौखट पर खडा मेरी ओर देख रहा था। मेरी दृष्टि लाज से नीचे झुक गई। तभी माधव खासा। खासने की आवाज सुनकर मैंने पुन अवगुण्ठन की सीमा रेखा को लाघते हुए माधव की

आर दखा। उसका दृष्टि स मेरी दृष्टि का सयाग होते ही मेरे प्रेम के समस्त सुप्त तार एक एक करके अगडाई लेने लगे। मेर अगों की अनजानी हलचल से आश्चर्यचकित मैं माधव के नेत्रों की परिधि से अलग हट गई। हमारे तृषित नेत्रों की इस आख मिचौनी से प्रसन्न बडी जिठानी कब रसोई से चली गई यह हम जान भी नही पायें। मर नत्रों क नीचे झुकते ही माधव का ध्यान बटा। सामने मेरी तीसरी जिठानी के पानी से भरे गिलास को परे हटाते हुए बाला बडी भाभी कहाँ गई ?

यदि मैं पानी का गिलास तुम्हारे हाथ में रख दूगी तो क्या तृषित हा रह जाओगे? अभी तो पानी पी लो बाकी रात ?

भैया को यह गिलास पकडा दना कहता हुआ माधव रसोई से बाहर चला गया।

मरी तीसरी जिठानी क हाथों में पानी से भरे गिलास को देखकर मेरा मन मीरा की भाति दीवाना हा गया। पहली बार जा में आया भागकर माधव से चिपट जाऊ लेकिन सयुक्त परिवार की मर्यादा ने मेरे पावों में जजार डाल दी। मैं विवश अपना कार्य पूरा करने में जुट गई।

माधव द्वारा उपेक्षित वह विष उगलने लगी "तुम माधव क इस उपेक्षित व्यवहार से यह समझने की भूल मत कर बैठना कि मेरे रूप का लोभी भ्रमर, अब तुम्हारे यौवन पुष्प से आकर्षित गुनगुनाने लगेगा।" इतना कहकर वह तो चली गई।

लेकिन मरा हृदय कापने लगा। मीरा की सी दीवानगी मेरे मन के पल्लू को छोडने लगा। क्या यह रात में माधव का अपने साथ ले जायेगी ? क्या पिछले दो वर्षों की प्रतीक्षा व्यर्थ ही चली जायेगी ? आदि आदि प्रश्न मरे दिमाग को मन को मथने लगे।

रसोई का काम निपटा कर हम औरतें आपस में बैठ कर बतियाने लगी। तभी मास ने खबर दी कि पुरुषों का खाना लगा दिया जाये। मेरी बडी जिठानी ने थालिया परोसनी शुरू की। मेरी सास पुरुषों के समक्ष थालिया रखने लगी। रसोई के सामने बने दालान में वे लोग खाना खा रहे थे। बीच बीच में माधव की बुलन्द आवाज मेरे हृदय के मन्द द्वार को खुडखुडा जाती थी। पुरुषों के

भोजन कर लेने के उपरान्त हम स्त्रियों ने खाना आरम्भ किया। भोजन के बीच में बड़ी जिठानी ने परिहास किया— क्या हुआ। छोटी आज खाना नही खा रही हो ?

माधव के आने की प्रसन्नता ने इसकी भूख ही छीन ली।' दूसरी जिठानी ने हसते हुए उत्तर दिया।

माधव के आने की खुशी या गम यह तो मुझे नही मालूम। पर हा माधव के आने की खबर ने अवश्य इसकी भूख छीन ली है। तीसरी जिठानी के मन्तव्य को समझने के लिए मैं अब पर्याप्त समझदार थी। मैंने भी अपने भय को हसी के कवच में छुपाते हुए कहा—दो वर्ष बाद मिलूगी कही ज्यादा खा लेने पर नींद आ गई तो ?

इसका अन्दाजा जब रात आयेगी तब स्वत ही हो जायगा।

मुँह बिचकाते हुए मेरी तीसरी जिठानी ने मेरी खिल्ली उडाई। जिसे सुनकर मेरे नेत्र धरती से चिपक गये। मेरे उदास चेहरे से प्रभावित मेरी दूसरी जिठानी ने तीसरी जिठानी स पुन कहा— यह बच्ची थी तब थी, अब इसे बच्ची समझने की भूल मत करना। लेकिन इन सब बातों के कारण मेरे मन से माधव के आने का उत्साह गायब हो गया था। मैं चुपचाप खाना खाने लगी। मेरी दोनों जिठानिया भी खाना खाने लगी।

और जब रात्रि का एकान्त हुआ तो ? मैंने चुटकी ली।

मैं चुपचाप अपने पति के कमरे में घुसी लेकिन मेरी पैंजनियों की मधुर ध्वनि ने मेरा साथ नहीं दिया। माधव ने तुरन्त पलट कर दरवाजे की ओर देखा। मुझे आया देखकर वे पलग से उठे। तब तक मेरे अभ्यस्त हाथों ने द्वार को उढका दिया था। यह देखकर माधव आये और द्वार पर अर्गला चढाने लगे। इन्हें दरवाजे पर अर्गला चढाते देखकर मैं सकुचित सी वही ठिठक गई। ये जानबूझ कर पलग की ओर बढ गये। पलग पर बैठकर इन्होनें कहा— वही क्यों ठिठक गई हो ? पीछे मुडकर मेरी ओर तो देखो।

रात्रि का एकान्त और माधव का यह सम्बोधन। मैं सोच में पड गई। कहीं यह कोई स्वप्न अथवा मिथ्याभ्रम तो नहीं ?

'तुम्हारी तपस्या सा एकाग्रता को भग करन क लिए मर हृदय को गहराई स निकल य निष्पाप शब्द क्या पर्याप्त नही है ?

दोबारा माधव को सुनने पर मुझे विश्वास हो गया कि यह सम्बोधन यह मधुर सभाषण यह याचना मेरे लिए ही है। सचमुच मेरे लिए ही है। रात्रि के इस एकान्त में माधव ने यह सब मुझ कहा है । हा मुझे कहा है और मैं विह्वल सी पीछे मुडकर इनकी ओर बढा तब तक तो इनकी बाहों न मुझे अपन हृदय स लगा लिया। प्रिय क आलिंगन में इतने बरसों बाद समाते ही मेरे नेत्र सावन भादो बन गय। इन्होंने मुझ अपनी छाती स चिपटाय रखा। धीर धीर जब बरसात का वेग कम हुआ तो य अपना अगुलियों स मेरे आसू पोंछन लगे। इस प्रक्रिया में इनका भुजबन्धन ढीला हुआ। मैं पुन इनकी छाती से चिपट गई। यह देखकर इन्होंने अपनी बाहों को मेरे चारों ओर लपट दिया। मैं रात्रि के एकान्त में माधव की भुजवेष्टिता बनी सोच रही थी कि आज मेरी बरसों की मूक तपस्या पूर्ण हुई। आज माधव सौभाग के लिए लालायित नहीं है अपितु मेरे प्रति अपन अगाध प्रेम को दर्शा रहे है। मेरा यह प्रेम छिन तो नहा जायेगा ना ? और इस विचार से भयभीत मैं उनके भुजबन्धन में और भी अन्दर तक सिमट गई। इन्होंने पुन अपने बन्धन को कसते हुए पूछा 'क्या बात है मुझसे डर लग रहा है ?

'नही। कहते हुए मैंने इनकी छाती में अपना मुँह छुपा लिया।'

इन्होंने हसते हुए और अपने पास खीच लिया। हम दोनों मूक भाव से इन अन्तरग क्षणों को अनुभूत कर रहे थे कि द्वार पर लगी अर्गली धीरे से हिली। जिसे सुनकर मैं भय स कापन लगी। मैंने अपना भुजाओं को इनक चारों ओर लपेट कर कहा—'नहीं तुम कही मत जाना।

मैं कहीं नहीं जाऊगा। तुम डरो नहा। देखो मैं तुम्हारे पास हूँ ना।' कथन के साथ इन्होंने मेरे माथे को चूम लिया।

अर्गला फिर हिली। मैंने विकल भाव से इनकी ओर देखा। इन्होंने नेत्रों द्वारा मुये आश्वस्त किया। लेकिन अब अर्गला का बजना बद नहीं हो रहा था। यह देखकर मैंने पुन इन्हें कस लिया। हम दोनों यों ही खडे रहे। अब अर्गला का शोर ऊचा होने लगा था। इन्होंने मुझे अपने से अलग नही किया। मैं भी उस भुजवेष्ठन से मुक्ति नहा चाहती थी। अत उसी भुजवेष्ठन मे छुपी रही।

इस बार किसी की आवाज सुनाई दी। ये चकि। ये मुझे शीघ्रता से अपने से अलग करके दरवाजे की ओर बढ गये। तुम यहा। दरवाजा खोलने पर ये बोले—

हा मैं। उसने निर्लज्जता से कहा।

लेकिन क्या बात है ?

आपके भाईसाहब बुला रहे हैं।

आज नही आज बहुत देर हो गई हैं। कल आऊगा। माधव ने उसे टालना चाहा।

तुम भूल गये क्या कि तुम रात बीतने पर ही आया करते थे। फिर धीरे से बोली मैं कितनी देर तक तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही। जब तुम नहीं आये तो मुझे तुम्हें बुलाने के लिए आना पडा।

यद्यपि उसने बहुत धीरे से कहा था तो भी ये शब्द मेर कानों में पड गयें। जिन्हें सुनकर मैं सोचने लगी कि क्या माधव पुन इस पण्य सुन्दरी के आकर्षण में बधें इसके साथ चले जायेंगे ? बरसों बाद मिला पति सुख क्या यह पुन छीन लेगी ? इस सशय से भयभीत मेरी आखे इनकी ओर उठ गई। उधर मेरी तीसरी जिठानी के मुंह से निर्लज्ज निमत्रण पाकर माधव ने मेरी ओर देखा। हम दोनों की दृष्टिया मिली। न जाने माधव ने मेरी आखों में क्या भाव देखे कि वह उस दरवाजे के पास छोड कर तुरन्त मेरे पास आ गये। और मुझे सहारा देकर मेरे कापते शरीर को पलग पर बिठला दिया।

तुम्हारी तीसरी जिठानी के सामने ? मैंने अचम्भे से पूछा।

हा उसी के समक्ष मेरे माधव ने मुझे अपनी बाहों का सहारा दिया। जिसे देखकर वह ईर्ष्या से दग्ध हा गई और उसने मुझे सहारा देते हुए माधव को पकड कर अपनी ओर घुमा लिया। फिर उसकी बाह को अपने हाथ से पकड कर खींचने लगी।माधव तीसरी जिठानी की ज्यादती देखकर आपे से बाहर हो गया। उसने एक झटके से अपने हाथ को छुडा लिया। किन्तु इस छीना झपटी में न जाने कैसे पलग पर रखा हुआ एक पैकेट नीचे गिर गया। उसके जमीन पर गिरते ही माधव ने उस पैकेट को उठाकर मेरी ओर उछाल दिया। यह देखकर वह मेरी ओर बढी और मेरे हाथ से पैकेट को छीन कर माधव के समक्ष खडी

होकर व्यग्य से कहने लगी— वाह डेढ वर्ष बाद तो कोई उपहार लाय वह भी इस मरियल बीमार को दे डाला।

हम दोनों उसके इस अप्रत्याशित और अनहोन व्यवहार से स्तब्ध रह गये। माधव और उसका अनैतिक व अमर्यादित सम्बन्ध था, लेकिन गोपनीय था। आज इस रहस्य को उसने स्वय ने ही उद्घाटित कर दिया। माधव अपनी विवशता को कोस रहे थे और मेरी देह उसके भय से काप रही थी लेकिन वह शेरनी की भाति माधव को उठा ले जाने के लिए तत्पर दिख पडती थी।

माधव उसके हाथ से पैकेट छानने के लिए आगे बढे तब तक जागते रहो चौकीदार के शब्द सदृश मेरी सास की लाठी के टेके सुनाई पडने लगे। जिन्हें सुनकर वह तुरन्त बाहर की ओर मुड गई।

वह हमारा कमरा खुला ही छोड गई थी। मेरी सास की लाठी क टेके अब हमारे कमरे के बहुत पास सुनाई पडनें लगे थे। हम दोनों प्रस्तर की भाति अपने अपने स्थानों पर सास रोक कर खडे हुए थे। अब क्या होगा का भय हम दोनों को डरा रहा था। तभी रात्रि की निस्तब्धता को उन्होनें भग किया माधव। किन्तु ये चुप रहे। एक क्षण के बाद उन्होनें पुन आवाज लगाई। इस बार ये कमरे से बाहर निकले। सामने खडी हुई मा स बोले तबियत तो ठीक है ना। क्यों बुला रही हो?'

यह दरवाजा क्यों खुला छोड रखा है। माधव के प्रश्न की उपेक्षा करते हुए उन्होनें प्रश्न किया।

चलो तुम्हें तुम्हारे कमरे तक छोड आऊ।' माधव ने अपनी बात कही।

नहीं। मैं स्वय चली जाऊगी। लेकिन तुमने इस समय दरवाजे को क्यों खुला छोडा हुआ है। तुम दरवाजा बद कर लो देर रात तक दरवाजा खुला नही रखना चाहिए। लेकिन माधव माजी की बात सुनकर भी वही खडे रहे। उन्हें चुपचाप खडे हुए देखकर माजी ने आदेशात्मक स्वर में कहा तुमने सुना नही जो मैने कहा।

हा मा दरवाजा बद करता हूँ। कहकर माधव न दरवाजा बद कर दिया। दरवाजे के बद होने के बाद ही माजी की लाठी के टेके पुन सुनाई पडने लगे।

रात में की गई तुम्हारी सास की चौकसी केवल तुम्हें सुखी देखने के लिए

थी। वे माधव और उसकी तीसरी भाभी के बीच पनप रहे अनैतिक सम्बन्धों को समूल मिटा देना चाहती थी।

तुम ठीक कहते हो यदि मेरी सास ने अपनी जिम्मेदारी नही निबाही होती तो मेरी झोली में जो थोडे सुख मिले थे उनसे भी खाली रह जाती।

कमरा बद करके मेरे पति एक अपराधी की भाति मेरे पास पलग पर आकर बैठ गये। कुछ देर तक हम दोनों चुप रहे। फिर मेरे पति मेरे हाथ को अपने हाथ में लेते हुए कहने लगे— वह साधिकार तुम्हारे कमरे में घुसी और पलग से पैकेट उठा कर ले गई। इस घटना से तुम्हारा जी नही दुखा।

यह तो कवल एक पैकट था उसने तो आपका_ ? और मेरा गला अवरुद्ध हो गया।

मेरे अधूरे अपूर्ण रुधे वाक्य में उन्हें मेरी व्यथा के दर्शन हुए। और वे छटपटा उठे— मैं भी कितना अभागा हूँ कि मैंने तुम्हारा अधिकार उसे दे दिया_?

नही नही आप मेरे आराध्य है। शायद मेरी पूजा अर्चना में ही कही खोट रह गई होगी जिसके कारण एक अन्य औरत आपके जीवन में साधिकार प्रवेश कर गई। अभागे आप नही बल्कि अभागिन तो मैं हूँ तभी तो मेरा जीवन कवल अमावस्या की काली रात्रि में सिमट कर रह गया और मेरी जिठानी का जीवन शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान_?

यदि अब मैं तुम्हारे आगन में छाई अमावस्या को पूर्णिमा में बदलने की कोशिश करू तो क्या तुम मेरी मदद करोगी ?

और वे ? मैने किंचित घबराहट से पूछा।

कुछ क्षणों तक वे चुप रहे। मैं भी उस सन्नाटे में मूर्ति बनी उनके उत्तर की प्रतीक्षा करती रही। कुछ देर पश्चात मैंने सुना। वे कह रहे थे— यह एक ऐसा ग्रहण था जिसने तुम्हारे आँगन के चाद को ग्रस लिया था।

एक प्रश्न पूछू ?

पूछो।

सही सही उत्तर देंगे ?

मेरे प्रति इस बदलाव का कारण...?

न पूछो तो अच्छा है। मुझ आनी बात पूरी कहने का मौका दिय बिना ही ये बोल पडे।

इन्हें उदास देखकर मैनें भी इस विषय में कुछ नही पूछा। कुछ दर तक हम दोनों चुपचाप बैठे रह। फिर ये कहन लगे उस रात तुम्हारे मैके में जब मुझे तुम्हारे कमरे में भेजा गया तो तुम सोयी हुई थी। मं कुछ देर तक तुम्हारे चेहरे पर छाई शाति को देखता रहा था। और तुम्हें दखते देखते अनजाने ही मैंने अपन भीतर तुम्हार प्रति एक लगाव महसूस किया। फिर तुम्हारे सुप्त सौन्दर्य से मत्रमुग्ध मैं तुम्हारा स्पर्श कर बैठा और तुमने चौंक कर आख खोल दी। मैंने सोचा था मुझे अचानक आया देखकर तुम मुझसे लिपट जाओगी लेकिन अपनी आशा के विपरीत तुम्हारी शात आकृति भय के बादलों से ढक गई और दूसर ही क्षण बादल बरसन लग। तुम्हें रोत देखकर मुझ अपने आप स घृणा हो गई। उन क्षणों में मैनें समझा कि मैनें तुम्हारे साथ कितना अभद्र व्यवहार किया था। तुम्हारे आसुओं में छुपी तुम्हारा वदना का तुम्हारे अधूरे शब्दों में छुपे तुम्हारे व्यथित हृदय को मैं उसी दिन समझ पाया था। उस रात कुर्सी पर बैठे बैठ मुझे अपनी पाशविकता का अनुमान हो गया था और दूसरे दिन का नेत्र मिलन तो तुम्हार स छुपा नहीं है।

इतना कहकर वे शात हो गये। लेकिन मैनें हिम्मत करते हुए अपने मन के भय को उनके सामने उगल दिया— मुझे उनसे डर लगता है।'

'मैं हूँ ना।' माधव ने हिम्मत बधाई।

आप तो चले जायेंगे। और वह पीछे स...?

लेकिन तुम्हें यहाँ छाड कर ही कौन जा रहा है ?

क्या मतलब ? मैनें आश्चर्य से पूछा।

तुम मरे साथ चलागी।

मैं और तुम्हारे साथ ? माधव के शब्दा पर विश्वास न करते हुए मैनें पूछा।

तुम नही तो फिर और कौन ? उन्होंने शरारती अदाज से पूछा।

मैं नहीं जानती कहने स क्या सच्चाई छुप जायगा। अनायास ही ये शब्द

मेरे होठों पर आ गये।

रात बहुत हो गई अब सो जाते हैं। और कथन के साथ माधव सो गये मैंनें भी उनका अनुसरण किया।

और वह रात भी बीत गई। मैंनें हसते हुए उसका उपहास उडाया।

लेकिन उसने मेरी हसी का बुरा नही माना और आगे की कथा सुनाने लगी दूसरे दिन हम देवरानी जिठानिया दोपहर में बैठी बातें कर रही थी लेकिन मेरा मन पिछली रात हुए प्रिय के सवादों को स्मरण करके बार बार पुलकित हो जाता था। मेरी बडी जिठानी की दृष्टि में मेरा मुदित चेहरा आये बिना नहीं रह सका। उन्होने हसते हुए कहा— देवरजी ने कल रात ऐसा क्या पिला दिया जिसका नशा तुम्हारे चेहरे को बार बार पुलकित कर देता हैं।

कल डेढ वर्ष बाद प्रिय से मिली है तो कल की रात भी सुहागरात से भिन्न क्या रही होगी ? दूसरी जिठानी ने बडी जिठानी की उक्ति का उत्तर दिया।

मैं मुदित मन से दोनों की ठिठोलियों का उत्तर देने वाली थी कि तीसरी जिठानी की व्यग्यात्मक प्रतिक्रिया सुनाई पडी—

अरे। एक मा की सुहागरात भी कही सुनी है क्या ? सुहागरात मनाने के दिनों में ही जब सुहागरात नही मनाई तो अब क्या सुहागरात मनायेगी ?

देवरजी से पूछना पडेगा कि हमारी देवरानी का सौन्दर्य ?

अछूता है या _? बडी जिठानी की बात को काटते हुए तीसरी जिठानी ने व्यग्य से हसते हुए पूछा।

तुम एक काम करों आज तुम ही हमारे देवरजी से हमारी देवरानी के बारे में पूछ लो। सरल हृदया बडी जिठानी ने बात को टालते हुए कहा।

हा आज रात पूछूगी। मेरी ओर आग्नेय नेत्रों से घूरतें हुए मेरी तीसरी जिठानी ने कहा।

चलो शाम का काम करते है। कहते हुए मरी दूसरी जिठानी ने उठने की मुद्रा बनाई।

तुम फिर घबरा गई होगी ? मैंनें पूछा।

हा लेखक। मैं तो कल रात प्रिय के साथ हुए अधूरे सभाषण को आज पूर्ण करना चाहती थी। लेकिन इस जिठानी के रहस्यमय सकेत से मेरा मन घबराहट से भर गया। मेरे चेहरे पर छाई मुर्दनी को दखकर मेरी बडी जिठानी ने मुझे वहा से उठा दिया।

रात का खाना पीना हो गया। बच्चे भी ऊधम करके सास के कमर में थक कर सो गये लेकिन पुरुषों की गोष्ठी जारी ही रही। हम औरतें भी अपनी सास के पास बैठी बातें कर रही थी। लेकिन जब मेरी सास ने देखा कि आज घर के मर्दों की बातें खत्म ही नहो हो रही है तो उन्होने हम सभी को अपने अपने कमरों में भेज दिया।

मैं सबसे पहिले उठी और जल्दी से अपने कमरे में जाकर मैनें दरवाजे को भीतर से बद कर लिया।

'इतना डर गई थी ?

हा मुझे डर था कि कही वह मुझ अकेली समझ कर मेरे कमरे में आकर मुझे तग नही करे। मेर सौन्दर्य के विषय में कही गई उसकी कटूक्तिया बार बार मुझे विघ्वल कर रही थी। जब मुझसे रहा नहा गया ता आइने के सम्मुख खडी हो गई। कुछ देर तक अपनी छवि को मैं देखती रही फिर अपने सौन्दर्य का अवगुण्ठन में छुपा लिया। घुघट से छन छन कर आते अपने सौन्दर्य को देखकर मैं जिठानी द्वारा प्रदत्त हीनभावना से उबर गई। मन ने उडान भरी। प्रिय के साथ हुए कल के अपूर्ण सभाषण को आज पूर्णता दूगी। पति सुख की कल्पना से आह्लादित मैं दरवाजे पर हिलती अर्गला को देख कर चौंक गई। कही जिठानी तो नही है। के सशय ने मेरे मन की समस्त कोमल भावनाओं को भस्म कर दिया। मैं वही खडे खडे भयभीत सी अर्गला का नर्तन देखती रही। जब अर्गला ने रुकने का नाम ही नहो लिया तो मैनें हिम्मत करके दरवाजे को खोल दिया। देखा सामने माधव खडे थे। मैं उनसे चिपट गई।

क्या हुआ ? मेरी घबराहट देखकर उन्होंने पूछा।

'आप उसके पास ?

तुम घबराओ नही मैं यही तुम्हारे पास रहूगा पर चलो भीतर तो चलो। कमरे की चौखट पर कोई देखेगा तो।

मुझे कमरे के भीतर जाते देखकर उन्होंने कमरे का बंद कर दिया। फिर मुझे अपने गले से लगाते हुए बोले— ऐसा लगता है मानों आज अपने मिलन की प्रथम रात्रि हो। माधव के सरल हृदय से कहे गये शब्दों में मुझे जिठानी के शब्द सुनाई पडने लगे कही मा की सुहागरात होती है। और माधव के आलिंगन में आबद्ध मैं जिठानी के आग्नेय नेत्रों को स्मरण करके काप गई।

क्या हुआ ? मुझे अपनी बाहों में पकडते हुए माधव ने पूछा।

मुझे डर लगता है।

डर किससे ? मुझसे ? तुम्हें मुझसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अब तुम मेरे बलात्कारी_ ?

नही नही आपसे नही उससे। मैंनें बीच में ही टोका।

इन्होंने मेरी बात का कुछ उत्तर न देकर मुझे अपने से चिपटा लिया। न जाने क्यों मेरे नेत्रों से जल बहने लगा। मैं चुपचाप इनके वक्षस्थल से लगी रही। अपनी तीसरी जिठानी के भय से आक्रान्त मै आलिंगन सुख को अनुभूत नही कर पा रही थी तभी दरवाजे पर लगी अर्गला हिली। इस समय जिठानी के अतिरिक्त कौन होगा ? इस विचार के जन्मते ही मैंनें इन्हें कस कर पकड लिया। मेरे नेत्रों से पानी बराबर निकल रहा था। मेरे आसुओं ने इन्हें विचलित कर दिया। लेकिन दरवाजे की खट खट से विवश ये मुझें जबरदस्ती हटा कर दरवाजे की ओर मुडे। दरवाजा खोलने पर सामने मेरी जिठानी दिखलाई पडी।

सोचा तुम्हें साडी दिखलाती जाऊ। माधव को सबोधित करते हुए उसे एक हाथ से परे हटाकर वह भीतर पलग पर आकर बैठ गई।

दरवाजे की चौखट पर खडे माधव ने मुझे नेत्रों से हिम्मत रखने का सकेत दिया। फिर मेरे पास आते हुए बोले— खडी क्यों हो आओ पलग पर बठो।

मैं हिम्मत करके बैठने लगी। तभी उसने नागिन सी फुफकार मारी— तुम मेरे और माधव के बीच में बैठोगी ? अरे माधव तुम्हारा था ही कब ?

यह सही है कि वह इसका था नही किन्तु आज इसी का है। मेरे कधे पर हाथ रखकर ये बोले।

इस बार अपने मैके से तुम्हारे लिए यह ऐसी कौनसी जादू की डडी बनवा लाई है कि तुम मेरी ओर देखते भी नही हो। यहाँ मैं तुम्हे यह पूछने आई थी

कि इस साडी में मैं कैसी दिखता हूँ ? और तुम मेरे साथ कितनी दर के बाद चलोगे ? इस बीमार के साथ बैठने के लिए मैं यहा नही आइ हूँ—

उत्सर्ग और समर्पण नाम की दो जादू की डडिया बनवा कर लाई है। है दोनों तुम्हारे पास ? रही बात तुम्हारे साथ चलने की ता अब तुम भूल जाओं। क्योंकि अब मेरी सुप्त आत्मा कामान्धता का नीद स जाग गई है। यह साडी जा तुमने पहिन रखी है, उस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। दूसरों की वस्तुओं को चोरी से उठा ले जाना कोई नैतिकता नहा है।

'रात्रि की गहन कालिमा के बाच देह सम्बन्ध बनाना ?

'तुमन नैतिकता का उल्लघन किया था मैंने नहा । इसका चर्चा करना व्यर्थ है। हा अब मैं अपनी नैतिकता को तुम्हारे आकर्षण में बाध कर नही गवा सक्ता। माधव ने उसे अपनी बात पूरी नहा कहने दी।

तुम एक बार मेरे साथ चलो। एक बार चलकर तो देखों मैंनें किस तरह—?

मैं नही जाऊगा।' बीच में ही माधव फिर बाला।

देखती हूँ तुम कैसे इसके साथ—?' और उसकी बात अधूरी रह गई। मेरी सास की लाठी के टके कल की भाति सुनाई पडने लगे थे। जिन्हें सुनकर वह बिना एक क्षण गवाये तुरन्त वहाँ से चली गई। उसके जाने के बाद माधव ने आगे बढकर दरवाजा बद कर दिया। माजी की लाठी ठक ठक करती हमारे दरवाजे के सामने स चली गई। इन्होनें अब मुझे अपनी बाहों में ले लिया। मै कुछ देर चुप रही फिर मैंने धीरे से कहा मेरी एक बात मानेंगे ?'

हा बोलो।'

आप एक बार उससे मिल लीजिये।'

यह तुम कह रही हो ?

हा ताकि वह आपके हृदय परिवर्तन को समझ सके। अन्यथा वह यों ही रात को—?

नही उससे मिलना मूर्खता होगी क्योंकि वह मेरी बात को समझने के स्थान पर अपना जाल फैलाने की कोशिश करेगी और क्या तुम चाहोगी कि मैं पुन उसके जाल में फस जाऊ ? इतना कहकर माधव न मरी ओर देखा कुछ

दर तक वे मुझे देखर्त रहे फिर अपने अगों से सटार्ते हुए बोलें सचमुच तुम वहुत भोली हा।

तब भोली थी अब भोली नही हूँ। अपने नेत्रों को आकर्षक ढग से नचाते हुए मैनें कहा।

देखू। कहत हुए माधव ने मुझे अपनी आर खीचा और लेखक न जाने उस बन्धन में क्या जादू था कि मैं मत्रमुग्ध सी उस में फसती गई। जब उस आकर्षण से बाहर निकली तो मुझे मालूम चला कि मैं पुन मा बनने वाली हूँ।

इस खबर से तुम्हें प्रसन्नता हुई होगी ? मैंने पूछा प्रसन्न तो पहिले पुत्र जन्म पर भी हुइ था लकिन तब जिठानी का भूत हर समय मेरे सिर पर मडराया करता था। इस बार मैं उस भय से मुक्त थी। माधव करीब एक माह रहा था। इस बीच वह एक बार भी मेरी जिठानी से नही मिला। माधव के जाने के बाद मैं पुन दुखी हो गई। किन्तु इस बार मेरे दुख की अवधि बहुत छोटी थी। दो माह बाद ही मैं भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए अपने पीहर चली गई। वहाँ जाने पर मेरी तबियत पुन बिगडने लगी यह देखकर मेरी मा ने लिखवा दिया कि मै प्रसव के बाद ही आऊगी और लेखक। तुम आश्चर्य करोगे जब मैं अपने छ माह के पुत्र के साथ अपने ससुराल पहुची तो माधव प्रतीक्षा करते हुए मिला।

क्या माधव आया हुआ था ?

हा।

इस बार तीसरी जिठानी ने कोई कुचक्र चलाया था या सब कुछ सामान्य था।

इस बार नियति ही अपना कुचक्र चला गई।

क्या मतलब ? उसकी धीमी आवाज से अचम्भित मैर्न पूछा।

जब अपने छ माह के पुत्र के साथ माधव से मिली तो उसने दोनों पुत्रों क साथ मुझे अपनी बलिष्ठ भुजाओं में थामते हुए कहा मै इस बार तुम्हें अपने साथ ले जाऊगा।

क्या ? मैं खुशी से चिल्लाई।

'हा । लेकिन अभी किसी से कहना नहीं । मैं स्वय ही मा से बात करूगा । उसकी बात सुनकर मैं प्रसन्नता से उससे चिपट गइ ।

मुझे स्वय से सटाते हुए माधव न अपने व्यापार की बातें बतानी आरम्भ की । हम दोनों देर तक ढेर सी बातें करते रहे और अन्त में माधव ने मुझे अपनी ओर खींच लिया ।

हम दोनों रोज तीसरी जिठानी के भय को भूलकर बातें करते और रात ढलते ढलते माधव मुझे अपनी ओर खीच लेता मैं भी उसके आकर्षक, लुभावने निमंत्रण को अस्वीकार करने के बजाय उसकी बाहों में खिंचती चली जाती_ ?

यह नियति का क्रूर चक्कर ? नही नही इस नियति का कुचक्र नही कहा जा सकता बल्कि ये तो वे घडिया थीं जिनकी प्रतीक्षा तुम्हें और शायद माधव को भी सदैव रही थी । मैंनें कहा ।

लेखक । माधव की उपस्थिति में मेरी तबियत ढीली रहने लगी और कुछ दिनों बाद अस्वस्थता का कारण भी सामने आ गया— मै पुन मा बनने वाली थी ।

'ओह ।

माधव को काम पर जाना था वह चला गया । उसके जाने के बाद, उसकी अनुपस्थिति में मेरी तबियत अधिक बिगडने लगी । मुझे अपने घर में बीमार उदास देखकर मेरी सास ने मुझे पुन मायके भिजवा दिया । मा के पास रहने पर मेरी बीमारी में थोडा ही फर्क पडा लेकिन बिस्तर पर पडे पडे मेरे छ माह और बात गये । अब मेरे प्रसव का समय निकट आ रहा था इस बार मेरी माँ भी चिन्तित हो गइ । उसने मेरे पिता से कहकर माधव को बुला भेजा । लेखक । सयाग देखो जिस दिन मैंने तीसरे पुत्र को जन्म दिया उसी दिन माधव मेरे पीहर आया ।

तुम बहुत खुश हुई होगी क्योंकि तीसरी बार भी तुमने पुत्र को जन्म दिया था ।

हा लेखक । तीन तीन पुत्रों की माँ बनकर मैं अपने सौभाग्य पर इठलाई थी । दो दिन माधव वहाँ रुके ।

तुमसे मिले ?

नही।

क्यों ?

उस समय यही परिपाटी थी। माधव के जाने के वाद मरा मन पुन उदास हो गया।

क्या वह तुम्हारे ससुराल गया था ?

हा।

ओह। मैंने सहानुभूति जताई।

नही नहीं अब उसका मेरी तीसरी जिठानी से किसी भी भाति का अनैतिक सम्बन्ध नही था_?

फिर तुम्हारी उदासी का कारण।

माधव के बिना एक क्षण भी रहा नही जाता था।

इतना प्रेम इतनी तडप वह भी उस व्यक्ति के लिए जो पहिले तुम्हारा था ही नही जिसने तुम्हारे हक को बडी सुगमता से अपनी भाभी की झोली में डाल दिया था ।

तुमने ठीक कहा लेखक। लेकिन मैं माधव को भूल नही पाई और इस बार माधव मेरे प्रसव के ठीक चार माह बाद बिना किसी पूर्व सूचना के मुझे लेने के लिए मेरे पीहर पहुँच गया। मेरी मा ने प्रसन्नता से मुझ विदा कर दिया।

माधव के साथ मुझे आया देखकर मेरी सास बहुत प्रसन्न हुई। यह सब इतनी जल्दी और नाटकीयता के साथ धट गया कि मैं भी_?

क्या घट गया।

मेरे ससुराल पहुँचन के दूसरे ही दिन माधव ने मेरी सास को बता दिया कि इस बार वह मुझे अपने साथ ले जायेगा। इस खबर से मेरी सास बहुत प्रसन्न हुई और उसने इसकी सूचना घर में ही नही अपितु आस पडौस में भी दे दी।

वह पूर्णिमा की रात थी। मैं अपने प्रिय के साथ बैठी अपनी सोई सतानों पर दृष्टि डालते हुए माधव से उसके घर के बारे में पूछ रही थी। माधव वडे

अपनत्व से मुझे बतला रहा था। ऐसे निजी अन्तरंग क्षणों में अर्गला पुन हिलने लगी मैं माधव से चिपट गई—माधव ने भी बडे आश्चर्य से उस हिलती अर्गला की ओर देखा। थोडी देर तक हम दोनों असमजस की स्थिति में एक दूसरे से चिपटे रहे लेकिन अर्गला थी कि रुकने का नाम ही नही ले रही था कहीं माँ न आ जाये' कहते हुए माधव उठे। मैं भयभीत सी अर्गला की ओर दृष्टि जमाये हुए थी। माधव के दरवाजा खोलते ही मेरी तीसरी जिठानी ने भीतर आकर दरवाजे को अदर से बद कर दिया।

उसे यों भीतर देखकर घबराये माधव मेरी आर बढे मैं अपना जगह से उठकर उनके गले से चिपट गई। यह देखकर वह क्रुद्ध सिंहनी की भाति मेरी आर लपकी और अपनी सुपुष्ट बाहों से मुझे एक कोने में धकेल कर माधव के सीने से लग गई। यह देखकर मैंने अपना मुहँ घुमा लिया। मुझे मुँह घुमाते देखकर माधव ने मेरी जिठानी को अपने से परे करते हुए फटकारा— तुम औरत हो या_?

यह सवाल तुम मुझसे पूछ रहे हो ?

यह सुनकर मैंनें तुरन्त गर्दन घुमाते हुए माधव से कहा— आप। इसे साथ लेकर बाहर चले जायें यहाँ बच्चे सो रहे हैं यदि जाग गये तो _? और मैंनें अपने मुँह को अपनी हथेली में छुपा लिया।

तुम यहाँ से चली जाओ वरना मै माँ को बुला लूगा। वह चुपचाप बिना कुछ कहे माँ के डर से चली गई।

'फिर ?'

दूसरे दिन ही हम लोग ससुराल से रवाना हो गये।'

'तुम्हारी जिठानी ?'

उसे मैं अपने साथ लेती गई।

'क्या कह रही हो ?' मै ऐसे चौंका मानों मैंनें किसी कंकाल को चलते हुए देख लिया हो।

चौंको मत। वह मेरी स्मृतियों में मेरे साथ थी। अब समझे तुम कि मैं कैसे उसे अपने साथ लेकर गई थी। अपना प्रश्न पूछ कर वह कुछ क्षण ठहरी

फिर रहने लगी अब मैं अपने पति के साथ रहने लगी थी। लेकिन ससुराल के सात वर्षीय जीवन ने मेरे स्वास्थ्य को पूरी तरह खोखला कर दिया था।जब मेरे पति मुझे मिले तब मैं तन से कम और मन से अधिक अस्वस्थ था। ऐसी अवस्थता में मैं अपनी सास की कोशिश मे पति के साथ चली तो आई किन्तु कहीं से दुखी मेरा मन अब भी पूर्णतया सुखी नहीं हो पाया था। मेरे पति की बाहों में आबद्ध मेरी तीसरी जिठानी कभी भी मेरे चित्त से ओझल नही हो पायी था। बस इसीलिए सभी सुख सुविधाओं के बीच मेरा स्वास्थ्य गिरने लगा। और अत में मैं खाट से लग गई।

तुम्हारे पति की झुझलाहट क्या पुन चालू हो गई ?

नहा वे कभी नही झुझलाये अपितु उन्होंने मेरी बीमारी को बडे प्रेम से थामा। घर में नौकर नौकरानी रख दिये गये। मेरी पलग मेरे पति की रौनक से भर गई। तो भी मेरी दशा सुधारने के बजाय गिरती गई। डॉक्टर परेशान था उसे मेरी बीमारी समझ में नही आ रही थी। मैं अपने तीनों बच्चों को देखती तो मेरा मन दुख से फटने लगता मेरी ममता विह्वल हो उठती। लेकिन क्या करती मेरी तीसरी जिठानी मुझे बार बार व्यथित कर देती थी।

एक दिन इन्होने मेरे हाथ को बडे प्रेम से पकड कर पूछा एक बात बतलाओगी ?

तुम मुझसे अभी भी नाराज हो ना ? यह सुनकर मैं चुप रही तो कहने लगे— मैं अपने पिछलें दिनों को सोच सोच कर व्यथित हो जाता हूँ। मै जानता हूँ कि मैनें तुम्हें सात वर्ष तक बहुत सताया है। इतनी छोटी अवस्था में तुम्हें तीन बच्चों की मा बनाकर मैनें बहुत बडा अपराध किया है। क्या तुम मुझे मेरी इन गलतियों के लिए माफ नही कर सकती ? बोलों क्या मैं माफी मागने लायक भी ...?

और मैनें बीच ही में उनके हाथों को पकड लिया।

मेरे द्वारा अपने हाथों को पकडे जाने पर उन्होंनें अपना मुहँ मेरे हाथों पर रख दिया। मैनें सोचा शायद यों ही मुँह रख दिया होगा लेकिन दूसरे ही क्षण तो मैं काप कर रह गई मेरा हाथ गीला हो गया था। उनके अश्रुओं का स्पर्श उनके निष्पाप हृदय की वेदना का स्पर्श करवा गया। मैनें उनके आसू पौंछतें

हुए चुप हो जाने क लिए कहा। कुछ देर तक हम दोनों उसी स्थिति म डूब एक दूसर का दुख अनुभव करते रह। फिर इन्होंने पूछा एक बात पूछू सच सच उत्तर दोगी ?

मैने गर्दन हिलाकर स्वीकृति दे दी।

इन्होनें बिना पूर्व भूमिका के सीधा प्रश्न किया तुम्हें क्या दुख है ? क्या अभी भी तुम अतीत की_?

नही नही मैं तो यहाँ नौकर चाकरों क बीच बहुत खुश हूँ। आप मुझे ऐसा सुखी जीवन देंगे इसकी ता मैंनें कल्पना भा नहा की था।

लेकिन उन्होनें मेरे झूठ को पकड लिया और पूछने लगे यदि तुम बहुत खुश हो तो तुम्हारी एक ही स्थान पर टिकी स्थिर दृष्टि क्या कहती है ? तुम यहाँ खुश तो नही हो इतना तो मैं जानता हूँ। लकिन तुम्हें कैसे खुश करू यह मैं नही समझ पा रहा हूँ। इतना कहकर वे चुप हो गय।

उनके चेहरे की व्यथा ने मुझे भीतर ही भीतर हिला दिया और मुझ में चुप रहने की हिम्मत नही रही। मैनें धीरे से कहा तुमने ठीक जाना मैं कभी कभी उदास हो जाता हूँ।

लेकिन क्यों ?अब क्यों उदास हो जाती हो ? उन्होनें अधीर वाणी में पूछा।

अपनी तीसरी जिठानी के बारे में सोचकर। मुझे लगता है जैसे मैनें उनकी सम्पत्ति छीन कर उन्हें कगाल बना दिया है। आपको अपनी ओर खीच कर जैसे मैने बहुत बडा पाप किया है। इतना कहकर मैं रोने लगी।

मुझे रोता देखकर उन्होंने अपना हाथ मेरे कधे पर रख दिया। फिर अपने हाथ से मेरा कधा थपथपाते हुए मुझे समझाने लगे—"देखो मैं सम्पत्ति ता तुम्हारी ही था। लेकिन यह तुम्हारी मूर्खता थी कि अपनी सम्पदा को लुटते देखकर भी चुप रहा। मैं अपनी नासमझी के कारण पराई औरत के आकर्षण में फसा। लेकिन वह तो ब्याहता थी, अपनी देह के अधिकारी भैया के प्रति विश्वासघात उसने किया था। तुम उस औरत की व्यथा को अपने अस्वस्थ स्वास्थ्य का कारण मत बनाआ क्योंकि मैंने उसे काम कलि म इतना आनन्द दिया है जिसका एक भाग भी तुम्हें नही मिल पाया है। अत दय के समभ प्राप्य नगण्य है।

उन्होंने अपना हृदय मेरे सामने खोल कर रख दिया। मैं समझ नही पाई थी कि मैं क्या करू तभी उन्होंने पुन कहना चालू किया। उस रात तुम्हें तुम्हारे पीहर में मुझसे भयभीत देखकर मैंने सोचा था—यदि मेरे बलात्कारी पुरुष की आखों में धूल झोंककर तुम भी कही देह तुष्टि का अवलम्बन खोज लेती तो। बस इस विचार के जन्मते ही उसी क्षण मैं तुम्हारा आराधक बन गया था। अब तुम अपने मन को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करो ताकि मैं तुम्हारे जीवन में आये पतझड में पुन बसत खिला सकू। और हाँ अब तुम अप्रसन्न भी रहो तो भी मैं तुम्हारे जीवन में खुशियाँ भरे बिना पीछे नही देखूगा। इतना कहकर वे मूक भाव मे अपने स्नेहित स्पर्श से मुझे भिगोने लगे।

तुमने उस स्पर्श की अनुभूति की या पहिले की भाँति ?

नही लेखक। नही इस बार मैंने वह गलती नही दोहराई। उसने बीच ही में अपनी बात कहनी आरम्भ कर दी। "बल्कि उस दिन सही अर्थों में मैंने स्पर्श शब्द के अर्थ को जाना। इनके हाथों के स्पर्श ने मुझे जीवित होने की अनुभूति से परिचय करवाया। सच पूछो तो लेखक। इस अलभ्य स्पर्श सुख को प्राप्त करके मेरा हृदय तरगिनी सा उछाले मारने लगा था। जब तब मेरे होठों को अपने होठों का स्पर्श दे मुझे पुन षोडशी कपकपाहट से भर देते थे। फिर उस कपकपी से अनुभूत वे मुझे बार बार अपनी बलिष्ट भुजाओं में थाम लेते थ। उस अस्वस्थता के दौरान पति सामीप्य सुख दवाओं से भी अधिक श्रेयस्कर सिद्ध हुआ। पति प्रेम से अछूता मेरा मन इस सिद्धि को प्राप्त करके नव पल्लव सा खिल उठा।

उसने अपने मन की एक एक पर्त मेरे सामने खोल कर रख दी थी लेकिन मेरा जिज्ञासु मन उससे पूछे बिना नही रह सका— क्या अब भी तुम्हारा मन अतीत की गहरी खदकों में जाता था?

कई बार जाता था। क्योंकि पर्वत की उत्तुग शिखर की अतल गहराईयों में छाये सूनेपन सा ही मेरा विगत जीवन भी सूना था और यह सूनापन मेरी स्मृतियों का कैदी था_?

तो क्या तुम पुन स्मृतियों के पिंजरे की कैदी बन गई?

नहीं नही। ये भाव तो पानी के बुलबुले से आते थे और मिट जाते थे।

इस बार मैंने उन लोगों की भाँति आचरण नहीं किया जो अतीत की वेदना व्यथा पीडा के चक्रव्यूह में फस कर अपने वर्तमान को भी अथाह पीडा से भर लेते हैं। बल्कि मैंने अपनी कटु स्मृतियों के पिंजरे को खोल कर इस कैदी पक्षी को सदैव के लिए मुक्त कर दिया। मैंने अपने पति को छिटका नही अपितु अपने मन का उन्मुक्त तरंगों की भाँति पति प्रेम की पावन गंगा में विचरने को मुक्त छोड दिया।

इसका अर्थ अब सही अर्थों में तुम और माधव एक दूसरे के पूरक बन गये थे। मैंने पूछा।

हाँ हम दोनों एक दूसरे के पूरक बन कर अपनी जीवन नैया को खै रहे थे। हमारे तीनों बेटे बडे हो रहे थे। धीरे धीरे तीनों बेटों ने परीक्षाएँ दी डिग्रियां हासिल की और एक दो वर्ष के अंतर से नौकरी करने लगे। अच्छा घर अच्छा वर किसी भी पुत्री के पिता को अपने आकर्षण में बाधने के लिए पर्याप्त थे, अत ब्याहने योग्य कन्याओं के पिता हमारे घर की चौखट पर मडराने लगे।

वहीं एक दो वर्ष के अंतराल से मेरे तीनों बेटे ब्याहे गये। बहुए भी आ गयी। लेकिन इस प्रक्रिया में एक घटना अजीब घटी कि मेरी तीनों बहुओं को मेरे पति ने शादी से पूर्व नहीं देखा था।

क्या मतलब ? मैं चौंका।

"तीनों बहुओं का चयन मेरे पति ने नही किया था। बल्कि मैं ही अपने पुत्रों के साथ लडकियां देखने गई थी।

"किन्तु तुम्हारे पति की इस विरक्ति का कारण ?"

वे सदैव एक ही सिद्धान्त पर जोर देते रहे यदि लडके को लडकी पसंद आ गई है तो फिर मेरे निर्णय का क्या महत्व होगा ?

'इसका अर्थ है तुम्हारी तीनों बहुओं में से एक भी बहू तुम्हारे माधव द्वारा पसंद नही की गयी थी ?

नही। उसने संक्षिप्त उत्तर दिया।

तुम सब लोग एक साथ ही रहते थे ?

नहीं। बेटों की नौकरी दूसरे शहरों में थी अत बहुए भी उन्हीं के पास रहती थी। बस हम दोनों ही घर पर साथ रहते थे। कुछ दिनों के लिए हमारे

वह वह आते थे तो लगता था जैसे जीवन रसमय हो गया हो। उनके जाने के बाद जब मैं उदास हो जाती थी तो माधव प्रेम से संभाल लेते थे।

इसके मायने तुम माधव के साथ अपना सुखी दाम्पत्य जीवन भोग रही थी।

हाँ क्योंकि माधव मुझे दुखी देखना पसंद नहीं करते थे। तुम तो जानते ही हो कि यह प्रकृति का नियम है, बीजारोपण होता है अंकुर फूटता है यही हमारे घर में भी हुआ। हम दादा दादी बन गए। तीनों लड़कों के दो दो लड़के व एक एक लड़की थी। मुझे आज भी माधव के वे शब्द ज्यों के त्यों स्मरण हैं जो व पोते पोतियों के साथ मेरी बढ़ती आत्मीयता को देखकर कहा करते थे— क्यों इन बच्चों में जी डाल रही हो ? कुछ दिन रहकर ये लोग तो चले जायेंगे और तुम बिना कारण के स्मृतियों में खोयी रहोगी। यों ही क्या जीवन कम कष्टप्रद रहा है ? और ऐसा कहते कहते वे पुरानी स्मृतियों के बादलों से ढक जाते थे।

इसका अर्थ तुम्हारा अपने बच्चों के प्रति लगाव माधव से अधिक था ? मैंने पूछा।

तुम ठीक कहते हो। माधव उन लोगों के साथ रहते हुए भी निर्लिप्त रहते थे। उनका अपने पुत्रों से न तो दुराव था और न लगाव।

क्या उनकी नौकरी अच्छी थी ?

नौकरी नहीं वे व्यापार करते थे । दोस्त के साथ शुरु किया गया साझे का व्यापार अब उनका अपना था । सरस्वती और लक्ष्मी की अपार कृपा थी । अब वे एक कोठी के मालिक भी बन गये थे ।

ओह। तुम एक सुन्दर कोठी की स्वामिनी भी बन गई थी। मैंने हँस कर कहा।

इतना ही नहीं लेखक मैं मेरे पति के लिए मंगल कलश सी पूजनीया थी। अहर्निश अपने पति प्रेम से सम्पृक्त मैं जीवन की विषमताओं एवं विसंगतियों का वमन कर चुकी थी। मैं अपने पति की बलिष्ठ भुजाओं में निश्चिन्त जीवन के समस्त दुखों को भूलकर जीवन सुखमय जीवन जी रही थी। अचानक भाग्य ने पलटा खाया। मेरे पति की हृदय गति रुक जाने से मृत्यु हो गयी। और मुझे लगा जैसे मेरा जीवन ठहर गया हो।

तुम्हार पति की मृत्यु हो गयी ? इतनी जल्दी ? मैंने दुखी स्वर में कहा।

हाँ। मेरे पति की मृत्यु से मैं स्तब्ध जड प्रकृति के क्रूर परिहास को देखती रह गयी। मैंने सोचा यदि नियति को ऐसा हास परिहास मेरे साथ करना था तो मेरे पति क स्वभाव में आमूल परिवर्तन क्या किया ? विषैला जीवन जीते जीते मेरी काया भी विषैली हो गयी थी। सांपों से फन फैलाते दुख मुझे प्रताडित नही करते थे। फिर पति द्वारा यह अमृतपान क्यों करवाया ? जो कभी नितान्त परिचित लेकिन बेगानों से भी बढकर अनजान और दुखदायी था वही बाद में मेरे अपने अगों से भी बढकर परिचित मेरे सुख दुख जरा व्याधि का साहचर्य बन गया था।उसी को नियति ने मुझसे क्यों छिन लिया ? क्यों मात्र पचास वर्ष की आयु में ईश्वर ने यह नारकीय वैधव्य मेरी झोली में डाल दिया ? क्यों ? बस इसी क्यों के बीच में उलझ कर रह गई।

'ओह। ईश्वर ने तुम्हारे जीवन में व्यथा पूरी उदारता के साथ बाटी थी। कहकर मैंने लम्बी सास ली।

तुम ठीक कहते हो। ईश्वर ने मेरे जीवन में व्यथा बाटने में पूरी उदारता बरती थी । यदि कही उसने कृपणता की थी तो बस सुखों की ओर से ...?' इतना कहकर वह चुप हो गयी।

कुछ देर तक मैं इस आशा से उसकी ओर देखता रहा कि शायद यह आगे कुछ बोलेगी—किन्तु प्रतीक्षा लम्बी होती गयी। उसके मौन से निराश मैं आगे की कथा में अपनी कल्पना से अनेक रग भरने लगा—उसके पति के शव को विशाल कोठी के दरवाजे से बाहर ले जाया जा रहा है। उसका क्रौंच पक्षी सा कारुणिक क्रदन सभी को व्यथित बनाये हुए है। मृतक की परलोक यात्रा को सफल बनाने के लिए पडित मत्रोच्चारों के बीच पिंडक्रिया विधिपूर्वक कर रहे हैं। जन समुदाय सवेदना प्रगट करने आ रहा है । लेकिन चुपचाप बिना कुछ बोले क्योंकि मृतक प्रौढ व्यक्ति था वृद्ध नही। मैं मृत्यु के पश्चात घटने वाली घटनाओं को अपनी कल्पना में देख रहा था—दत्त चित्त। तभी उसके शब्दों ने मुझे मेरे कल्पना लोक से बाहर निकाला।

'यह मेरे पति की पन्द्रहवा वाले दिन की बात है। मैं अपने कमरे में मौन व्यथित बैठी थी। पति की मृत्यु से मेरे मन में एक साय साय करता सूनापन भर

गया था।

मेरे तीनों पुत्र अपनी अपनी पत्नियों के साथ मेरे कमरे में आकर मेरे पास बैठ गए। कमरे का वातावरण स्वत ही बोझिल हो गया। हम सभी निस्तब्ध और नि शब्द थे। यह चुप्पी हृदयस्पर्शी थी। कुछ देर पश्चात मेरे बडे पुत्र न मौन तोडा—माँ। अब तुम इस घर में अकेली मत रहो। तुम मेरे साथ चलो।

उत्तर में मैं क्या कहती ? मुझ पतिविहीना की स्थिति तो उस गूंग के समान हो गयी थी जो बोलने का इच्छुक होने पर भी स्वय को बोलन क लिए असमर्थ पाता है। लकिन मेरी वाणी की जडता को मेरे बडे पुत्र ने मेरी स्वीकृति समझी। मुझ आगामी स्थिति स अवगत कराता हुआ समझाने लगा— यहाँ अकेली रहोगी तो किससे बातें करोगी ? मन ही मन में घुट जाओगी। कभी बीमार हो गयी तो तुम्हें कौन सभालेगा ? मेरे साथ चल कर मेरे पास रहो। वहाँ तुम्हारी बहु पोते पोती हम सभी होंगे ?

अपन पुत्र क कथन की समाप्ति पर मैंने पास ही बैठे अपन दोनों बेटों पर दृष्टि डाली। वे दोनों बडी तन्मयता से अपने बडे भाई की बात सुन रहे थे।

एक बात पूछू। तुम्हारे बडे बेटे का नाम क्या था। क्योंकि तुमने उसका नाम नही बतलाया। नाम जानने से मुझे सुविधा होगी।' मैंने अपनी समस्या उसके सामने रखी।

मेरे जीवन में जिस नाम का कोई अर्थ था महत्त्व था उसे मैंने तुम्हें बतला दिया है। पुत्रों के नाम मेरे लिए अर्थहीन है महत्वहीन है। हाँ तुम्हारी सुविधा के लिए मैं इन्हें बडका मझला और छुटका नाम दे देती हूँ।

मैंने मझले और छुटके की ओर से अपनी दृष्टि हटा ली। तभी बडके ने मेरी बाह को हिलाया। मैंने उसकी ओर देखा। उसने एक बच्चे की भाँति पूछा— चलोगी ना मा। मेरे साथ ?

और ? और ? मैं इस अपनत्व भरे आग्रह को अस्वीकार नही कर सकी।

अपने बडके पुत्र के साथ तुम उसके घर चली गई। क्या इसके पूर्व भी गई थी ? मैंने पूछा।

नहीं मेरे पति ने क्षणभर के लिए भी मुझ अपन घर से कही दूसरी जगह नहीं भेजा था।

'तब तो पुत्र गृह तुम्हारे लिये सर्वथा नई जगह थी।

हाँ यह मेरा नया अनुभव था। उसका घर बहुत ही सुन्दर था। उसे बगला कहो तो उचित होगा। उस बगले में चारों ओर सीमेंट की छोटी दीवारें बना हुई थी। उसके लॉन की घास इतनी मुलायम और रेशम सी नर्म थी कि मुझे उस पर पैर रखते हुए घास के पीडित होने का भय होता था। इसीलिए मैं उसे बिना घायल किये बरामदे में रखी हुई कुर्सियों पर बैठ जाती थी। शाम को काम से लौटकर मेरा पुत्र भी कुछ देर तक मेरे पास बैठकर घर क भीतर चला जाता था__?

'इसका अर्थ तुम्हारा मन लग गया था?'

मेरी उत्सुकता का उत्तर उसन गहरी उदासी में दिया— अब मन जैसा कोई महत्वपूर्ण अग मेरी दह में शप नहीं था। वहाँ रहना था इसलिए मैं वहाँ रह रही थी। मेरा मन इतना व्यथित और क्षुब्ध था कि मैं किसी से कोई बात नही करती थी। बहु की गृहस्थी में झाकने का ता प्रश्न ही नही था। अक्सर मैं अपना काम निपटा कर बाहर बरामदे में बैठ जाती थी ?

'तुम्हारी बहु? क्या वह भी तुम्हारे पास ?

आती थी। उसे बहुत जल्दी से मेरी बात का उत्तर दिया। मैं कुछ समझा नही। तभी मैंने सुना वह कह रही थी—इसी भाँति वहाँ पुत्र के घर रहते हुए तीन माह बीत गय।

'चलो यह अच्छा रहा। कम से कम यहाँ ता भाग्य ने परायापन नही दिखलाया। वरना अब तक तो तुम्हें भाग्य छलता ही रहा है।

'लेकिन कितने दिनों तक? केवल नब्बे दिनों तक।

क्यों क्या नियति ने तुम्हारे जीवन क्षेत्र में प्रवेश करने का टिकट पुन प्राप्त कर लिया था? इतना कहकर मैं हँसा।

लेखक! तुम हस सकते हो क्योंकि तुम अपनी दुनिया में सतुष्ट हो। तुम हास परिहास कर सकने हो क्योकि तुमने कभी किसी विधवा की एकान्तिक

व्यथा या अनुभूत नहा किया है_?

तुम्हें लश मात्र भी पीडा पहुँचान का उद्देश्य मरा नहीं था।

किन्तु उसने मरी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। शायद मरी हसी ठिठाली से उसका जी दुख हो गया था। मैंने माचा उसने अपना मन ताप कम करने के लिए मौन का आश्रय लिया है। अत उसकी चुप्पी का मैं उसकी आवश्यकता समझत हुए उसक मौन क टूटन की प्रतीक्षा करन लगा। किन्तु जब प्रतीक्षा सीमा लाघन लगी तो मैंने उस पुकारा लेकिन मेरा पुकारना व्यर्थ रहा। हमारे बीच मौन पूर्ववत् बना रहा। थाडी दर के बाद उसका मौन मुझे व्यथित करने लगा। मैंने विहलता स कहा क्या हुआ सखि। बुरा मान गई ?

मरे सखि सम्बोधन से वह चिहुकी क्या कहा ?दोबारा कहना ?

मैंने कहा। सखि बुरा मान गई ?

यह सखि सबोधन क्यों ? मैं मात्र कथावाचक हूँ। तुम मेरी मन स्थिति से परिचित हो सम्बन्धों क प्रति_? आगे बोलते बोलते वह रूक गई।

कहीं यह पुन चुप नहीं हो जाये इस डर स मैंनें तत्काल कहा तुम तीन माह की बातें बतला रही थी_?

नहा नही मुझे वहाँ रहत रहते तीन माह पूरे हो गये थे और चौथा माह आरम्भ हो गया था। मेरी गलती सुधार कर वह आगे कहने लगी एक रात को जब मैंनें अपने कमरे का नाईट बल्ब जलाया तो वहाँ प्रकाश नहीं हुआ। यह देखकर मैंनें ट्यूब लाईट जलाई फिर उसके प्रकाश में बल्ब का स्थान खाली देखकर मैं आश्चर्य में पड गई कि बल्ब कौन उतार कर ले गया। मुझे अंधेरे से बहुत डर लगता था। मैंनें अपने कमरे का दरवाजा खोला। ठीक मरे कमरे के सामने मेरे पुत्र का कमरा था। उसमें से प्रकाश आ रहा था। मैंनें सोचा शायद जाग रहे हो और मैं आगे बढी। किन्तु अगले ही क्षण द्वन्द्व में फस गई जगाऊ या नही जगाऊ ? फिर सात घण्टे की दीर्घरात्रि को अंधेरे में कैसे काट पाऊगी की चिन्ता लिए मैं उनके कमरे के पास पहुँच गई। दरवाजे को खटखटाने के लिए अपना हाथ आगे बढाया ही था कि बहू की आवाज सुनाई दी—

तुम्हारी माँ यहाँ कब तक रहेगी ?

क्यों पूछ रहा हो ? पुत्र ने पूछा।

उन्हें यहाँ आये हुए तीन महिने पूरे हो गये है_?

ता ?

तो क्या सम्पूर्ण जीवन इसी घर में बितायेगी ?

पिताजी नहीं है इसलिए यदि माँ हमारे साथ रहती भी है तो इसमें हर्ज क्या है_?

पिताजी नहीं है तो यहीं हमारे घर का चौखट पर क्यों ? इनक दो बेटे और भी है_?

मै मा का ज्येष्ठ पुत्र हूँ। माँ के प्रति मेरा कर्त्तव्य_?

'और मेरे प्रति अपनी पत्नी क प्रति तुम्हारा कोई कर्तव्य नही_?

'तुम साफ साफ कहो कि मै कहाँ तुम्हारे प्रति अपने कर्तव्य से विमुख हुआ हूँ।

'मैं वह सब नही जानती। अब तुम्हारी माँ इस घर में नहीं रह सकती। वह कुछ उत्तेजित हुई।

इस तरह क निर्णय के पीछे तुम्हारा कोई ठोस कारण तो होना चाहिए ? बेटे ने बहू को समझाने की कोशिश की।

'तुम्हारी माँ मेरा स्वतत्रता पर रोक लगाती है।

वह सारे दिन या तो अपने कमरे में रहती है या फिर बाहर कुर्सी पर बैठी रहती है। मेरे ख्याल से तुम्हारे दैनिक कार्यों के बीच वह किसी भी तरह की कोई अडचन पैदा नहीं करती है। और जब तुम्हारे काम काज के बीच उसका कोई हस्तक्षेप ही नही है तो तुम्हारी स्वतत्रता_?

अरे। यही तो रोना है कि वह अपने कमरे से निकल कर बाहर बरामदे में जाकर बैठ जाती है-- बहू ने जल्दी से कहा।

'माँ क इस व्यवहार स तुम्हें क्यों रोना आता है ?

तुम सोचो यदि वह एक समय का खाना बनाना शुरू कर दे तो काम में मुझे कितनी मदद मिल जायेगी_।'

यह तुम क्या कहती हो ? अभी पिताजी को स्वर्गवासी हुए तीन माह ही व्यतीत हुए है। तुम माँ की मानसिक स्थिति को समझो उससे समझौता करने का प्रयास करो फिर तुम देखोगी कि माँ के प्रति तुम्हारे मन में गहरी सहानुभूति जागने लगी है।

मैं नहीं समझती तुम्हारी मा के प्रति मेरे मन म कभी सहानुभूति जागेगी। खैर। सवेदना और सहानुभूति को भविष्यवाणी के रूप में मैं अपने पास रख लेती हूँ ...?

क्या मतलब। मेरे पुत्र ने बीच ही में पूछा।

मतलब साफ है तुम कल ही इस यहाँ से भजन का प्रबन्ध कर दो और यदि ऐसी व्यवस्था करने में असमर्थता अनुभव कर रहे हो तो तुम अपनी माँ के साथ यहाँ रहो। मैं अपने बच्चों को लेकर अपने पीहर चली जाती हूँ।

इतनी कथा सुनाकर वह चुप हो गई। उसे चुपचाप देखकर मैंने पूछा क्या हुआ चुप क्यों हो गई ? तुम्हारे पुत्र ने उत्तर में क्या कहा ?'

लेखक। मैंने अपने बेटे का उत्तर सुनने के लिए बहुत प्रयत्न किया। अपने कान को दरवाजे से चिपका कर रखा तो भी अन्दर छाई हुए खामोशी के अतिरिक्त मैं कुछ भी नही सुन पाई। मैं चुपचाप उन लोगों का दरवाजे खटखटाये बिना ही अपने कमरे में लौट गई।

पुत्रवधू के निष्ठुर एव अमानवीय व्यवहार को जानकर मैं सोचने लगी कि इसने मुझे तो कभी भी रसोई में खाना बनाने की जिम्मेदारी नही सौंपी। यदि यह मुझे कहती तो क्या मैं ना करती ? फिर इसने मेरे प्रति इतना कडा रूख क्यों अपना लिया है। जहाँ पुत्रवधू का अशोभनीय व्यवहार मुझे आश्चर्य में डाल रहा था वहाँ पुत्र की पुरुषार्थ विहीनता मुझे क्रोधित बना रही थी। दुःख क्रोध क्षोभ इन सब मिले जुले भावों के बीच तीन माह पूर्व दिवगत हुए पति से मैं अश्रुओं के बीच अपन पास बुला लेने की प्रार्थना करती रही। रात देर तक मै रोती रही। फिर न जाने कब सिसकियों के बीच मेरी आख लग गई। देर से सोने के कारण आख भी देर से खुली।

तुम्हें कोई जगाने नहीं आया ?

मुझे ? भला मुझ विधवा से किसी का क्या काम था ? उसके शब्दों

में छाई रिक्तता को मैनें अनुभव किया किन्तु कुछ पूछा नही। कुछ देर के बाद उसी ने कहना शुरू किया मैं अपन कमरे से बाहर निकली तब दिन खूब चढ आया था। मुझे बरामदे में आया देखकर मर पुत्र नें अपनी पत्नी से चाय लाने के लिए कहा। मैं चुपचाप उसी क पास जाकर बैठ गई। थोडी देर बाद मेरी बहू चाय लेकर आई। मैनें बडे ध्यान से उसके चहरे की ओर देखा लेकिन वहाँ कोई भाव दिखलाई नही पडा। मैनें मन ही मन उसके नाटक की प्रशसा की। उसक हाथ से कप लेकर मैं चाय पीने लगी। मुझे चाय पीते देखकर मेरी पुत्रवधू न खास कर मेरे बेटे को ध्यान अपनी ओर खीचा। बडके न चाय का कप उठाते हुए उसकी ओर देखा फिर गर्दन को स्वीकारात्मक ढग से हिलाया। उस हिलती गर्दन को देखकर न जाने क्यों मैं व्यग्य से हस पडी। मुझे हसते दखकर मेरे बडे पुत्र ने आश्चर्य व्यक्त किया क्यों हस क्यों रही हो मा ?

मैनें रात को एक अनोखा सपना देखा था। अभी उसी का ध्यान आ जाने क कारण हसी आ गई।'कहकर मैं हसने लगी। लेकिन मेरी हसी से मेरी पुत्रवधू कुढ गई। उसने बिना किसी दुराव छुराव के सहज भाव से कह दिया 'ये आज शाम मझले भैया के यहाँ जा रहे है_?

'कुछ काम है क्या ? मैनें भी अपनी अनभिज्ञता जतलाई।

हा। ये आपको वहाँ ले जा रहे हैं।

बहू क्या कह रही है ?' मैनें अपने बेटे से पूछा।

'कुछ दिन वहाँ रह कर आ जाओंगी तो तुम्हारा मन भी ठीक हो जायेगा_।

'लेकिन मेरे मन को कुछ नही हुआ, यह तो ठीक है_?

यहाँ आये हुए तीन माह बीत गये। थोडे दिनों के लिए दूसरे बेटों के घर भी तो जाना चाहिए वरना वे लोग हमारे से शिकायत करेंगे कि हमने आपको उन लोगों के पास नहीं भेजा। बेटे के स्थान पर बहू ने उत्तर दिया।

कब आई चिट्ठी ? मझले ने बुलाया है या छुटके ने ? मैनें भी अपने बेटे की आत्मा जगाने में कसर नही छोडी।

लेकिन मेरा बेटा चुपचाप चाय पीता रहा। उत्तर दिया मेरी बहू ने— आप इस भ्रम में न रहे कि आपको बुलाने के लिए आपके किसी पुत्र ने कोई चिट्ठी भेजी है।

पुत्रवधू क तेज धार सरीखे शब्दों ने मर हृदय को लहूलुहान कर दिया। कुछ देर तक मैं अपने कायर बेटे को चाय पीने देखत रही। फिर उसी को सबोधित किया मझले को सूचना दे दो।

चार स्टेशन की दूरी पर तो देवरजी का घर है क्या सूचना भेजनी है। हा आप तो इनके साथ जाने की तैयारी कर लें। गाडी चार बजे जायेगी।'

तुमने प्रत्युत्तर में क्या कहा ?

लेखक। मैनें देखा कि मेरा पुत्र मौन श्रोता बना हुआ है और उसकी बहू मुझे अपने घर में चार बजे के बाद एक मिनिट के लिए भी रखने को तैयार नही है तो ऐसी स्थिति में बोलो मैं किससे क्या याचना करती ? यदि सच पूछा ना लेखक तो उस समय यह सोच सोच कर कि यह कायर बेटा मेरी कोख से पैदा हुआ है मैं ग्लानि से भर गई थी।

यह सुन कर मैं गद् गद् हो गया कि यह अपने भविष्य की अनिश्चितता के बीच भी पुत्र के कायरजन्य वर्ताव के लिए स्वय को दोषी ठहरा रही है।

मझले का घर चार पाच स्टेशन की दूरी पर था। अत जब मझले की स्टेशन पर उतरे तो आकाश में सध्याकालीन हल्की सी कालिमा छाने लगी थी। प्रकृति के उस धुधलक म मैनें अपने वैधव्य को जीवन्त देखा। मुझ लगा जैसे मेरे वैधव्य के दुखों की काली चादर ने मेरे जीवन का ढक लिया है वैसे ही प्रकृति भी अपने साथी सूर्य के अस्ताचलगामी होने पर अधेर की काली चादर से ढक गई है। मैं अनजाने ही सहम गई। सहमी २ सी मं रिक्शे की ओर घिसटती जा रही थी। लेकिन मेरा विवेक मुझ बार बार आगाह कर रहा था कि क्या बिना बुलायं मेहमान की भाति अपने स्वाभिमान की हत्या करवान के लिए अपने मझल बेटे के घर जा रही हो ? क्यों नही लौट जाती अपने पति के घर में ?जहाँ की एक एक ईट में अपनत्व है पति का प्रेम है उसकी स्मृतिया है... ?

अचानक पुत्र ने ध्यान बाटा रिक्शा में बैठो माँ।

मैं चुपचाप रिक्शे में बैठ गई। बडका भी मेरे साथ बैठा कुछ कुछ बोले जा रहा था। लेकिन मैनें हा हूँ क अतिरिक्त अपनी ओर से बात करने में कोई रुचि नही दिखलाई।

कुछ देर के पश्चात् हम दोनों मझले के घर के पास उतर गय। बडके ने

दरवाजे पर लगी घंटी बजाई।

मझले ने स्वयं ने आकर दरवाजा खोला। हमें वहाँ खड़े देखकर चौंक गया। 'बड़े भैया आप? माँ तुम? न कोई चिट्ठी न कोई सूचना?

मझले का आक्षेप सुनकर मैंने बड़के की ओर देखा। उसने अपनत्व प्रदर्शित किया क्यों अपने ही घर में बिना सूचना दिये नहीं आ सकते?

क्यों नहीं? क्यों नहीं? अपनी झेंप मिटाते हुए मझले ने मेरे चरण स्पर्श किये। जब वह अपने भाई के चरण स्पर्श कर रहा था तब कौन आया है के प्रश्न के साथ मेरी मंझली बहू भी वहाँ आ गई। हमें अचानक सामने देख कर वह चौंक गई। फिर स्वयं को संयत करते हुए उसने हमारे चरण स्पर्श किये। आशीर्वाद देते समय मैंने बहू की वक्र भृकुटियों की भाषा समझने में तनिक भी विलम्ब नहीं किया। तभी बड़के ने हिम्मत दिखलाई—

'चलो भीतर चलते हैं।

'हाँ हाँ भैया, चलो माँ भीतर आओ। कहते हुए पुत्र ने रास्ता दिया। फिर पत्नी की ओर उन्मुख हुआ—

जाओ चाय तो लाओ पति की आज्ञा को भारी मन से स्वीकारते हुए वह भीतर चली गई। आप चलिये भैया मैं सामान लाता हूँ, कहकर पुत्र ने मेरी सूटकेस और टोकरी को उठा लिया। हम लोग ड्राइंगरूम में बैठ गये। पुत्र ने सामान लाकर मेरे पास रख दिया।

घर छोटा था? मैंने प्रश्न किया।

लेखक। बहुत उतावले हो। मैं तो पहली बार अपने मझले बेटे के घर आई थी मुझे भला घर के नक्शे का...?

ठीक है। ठीक है। मैं समझ गया हूँ कि तुम अपने सामान के पास ड्राइंगरूम में बैठी थी। इतना कहकर मैं अपनी हँसी को नहीं रोक पाया। वह भी मुझे हँसता देखकर चुप रही। मैं चौंका कहीं यह बुरा मान गई तो और मैंने गंभीर वाणी में पूछा फिर क्या हुआ?

मैं अपने सामान की ओर देखकर सोचने लगी कि यह अनामंत्रित अतिथियों की अभ्यर्थना कर पायेगी या यहाँ से भी विस्थापितों की भाँति किसी अन्य

शरणस्थली को खोजना होगा ? देखे इन हाथ की लकीरों में क्या लिखा है ? मै अपनी खुली हथेली में अपने भविष्य को देखने की असफल चेष्टा कर रही थी कि मैंने सुना माजी। चाय लीजिये।

मैने हाथ बढाकर चाय ले ली

यह क्या। केवल चाय। कुछ और नही है तो बिस्किट ही ले आती। पुत्र को बहू का केवल चाय लाना अच्छा नहा लगा।

माजी के आन का समाचार भाईसाहब न दे दिया होता ता स्वागत सत्कार में कोई कमी नहीं रहती लकिन बिना बताये आने पर तो_?

ठीक है ठीक है अब चुप रहो। मझले ने अपनी पत्नी को आगे बोलने से रोक दिया।

तुम्हारा बडका बेटा ? मैनें पूछा।

मेरा बडका बेटा नीचा मुहँ किये बहू के तीर की चोट को सह गया। क्योंकि उसके सामने मुझे छोड कर जाने की विवशता थी वरना उसकी पत्नी उसे चैन से नही रहने देती। कुछ देर तक वह चुपचाप चाय पीता रहा। फिर चाय के खाली कप को टेबल पर रखते हुए बोला— पिताजी के स्वर्गवासी होने के बाद से माँ मेरे साथ ही रह रही थी। एक ही स्थान पर रहने के कारण माँ ऊकता गई है। इसलिए स्थान परिवर्तन की दृष्टि से मैं माँ को तुम्हारे पास लेकर आया हुँ। थोडे महीनों तक तुम माँ को अपने पास रखो फिर मैं आकर ले जाऊगा। हमारे आने की सूचना देनी चाहिए थी। लेकिन क्या करू मैं जल्दबाजी के कारण तुम्हें_?

'इसीलिए आप माँ को यहाँ ले आये। मझले की पत्नी मोर्चा सभालते हुए आगे कहने लगी यदि आपने माँ के प्रोग्राम को पहिले सूचित कर दिया होता तो मैं अपने माँ बाबूजी के प्रोग्राम को कुछ महीनों के लिए टाल देती। मैं तो बडे धर्म सकट में फस गई हूँ कल शाम को ही वे लोग आ रहे है_?

ओह तब तो मुश्किल हो गई। बडके ने दुखी स्वर में कहा और कथन के साथ खडा हो गया।

'भैया। आप बैठिये तो सही प्रोग्राम भी बना लेंगे। आखिर आप इतने दुखी क्यों होते है ?' मझले ने बडके से कहा।

दुखी या सुखी होने का सवाल नही है सवाल है माँ को छोड कर जाने का। तुम्हारे सास ससुर आ रहे है तो माँ यहाँ कैसे रहेगी ? उसे तो हर हालत में यहाँ से जाना पडेगा। बडके ने अपनी चिन्ता व्यक्त की।

तुमने कुछ नहीं कहा ? मैंने पूछा।

नही। उसने सक्षिप्त उत्तर दिया।

लेकिन तुम चुप क्यों रही ? क्या तुम नही जानती थी कि वे तुम्हारे बारे में कोई निर्णय लेने वाले थे ?

'क्योंकि मैं ? मैं अपने पुत्रों की लाचारी देख रही थी। सोच रही थी मेरे हाड मास से निर्मित मेरे ये पुत्र कितने कायर और नपुसक बन कर रह गये है। अपनी अपनी पत्नियों की बचकाना जिद्द के कारण अपनी मा को गठरी बनाकर उसका बोझा एक दूसरे के कधे पर लाद देने के लिए ताक लगाये बैठे हैं। मैं निशब्द उन दोनों की ओर देखती रही। तभी मैंनें मझली बहू को कहते सुना क्या करू भाईसाहब। मेरी विवशता है वरना यह घर भी तो माजी का ही है। और इस वाक्य ने मुझे भीतर ही भीतर दहका दिया। यदि यह मेरा ही घर हैं तो मेरा सामान अभी तक ड्राइगरूम में क्यों पडा हुआ है ? क्यों नही भीतर पहुँचाया गया ? मेरी अपनी विचारणा चालू थी कि मैंने उसे पुन कहते हुए सुना— भाईसाहब। आज रात को माजी के साथ यहाँ ठहरिये। कल सुबह छोटे भैया के घर के लिए रवाना हो जाइयेगा। शाम तक वहा पहुँच जायेगे। दिन भर की यात्रा रहेगी इस लिए रिजर्वेशन का भी कोई झझट नही रहेगा।

हा भाईसाहब। यह प्रोग्राम ठीक है। मझले ने उत्साहित होते हुए कहा।

बडका भी यह सुनकर आशवस्त हो गया। वरना वह मुझे वापस अपने घर ले जाने की बात सोच सोचकर चिन्तित हो रहा था।

अब मेरे दोनों बेटे मुझे तीसरे बेटे के यहाँ पहुँचाने का निश्चय करके निश्चिन्त हो गये। इस निश्चिन्तता ने उनकी बातचीत के विषयों को दूसरी ओर मोड दिया। मेरी बहू आत्मीयता के साथ मुझे भीतर लिवा ले गई।

दूसरी सुबह मैं बडके के साथ मझले के घर से छुटके क घर जाने के लिए रवाना हो गई।

तुम्हारे पाते पोती ?

वे दर्शकगण थे। कहकर उसने बात खत्म कर दी।

बडके ने गाडी में मरे साथ कई बार बातें करन की कोशिश की लेकिन मैं सिर दर्द का बहाना करके अपना मुँह ढापे पडी रही।

नही बोलना तो तुम्हारी पुरानी आदत है। कहकर मैं हसा।

आदत की बात नही है। मैं जानती थी कि यह पत्नी का गुलाम अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में अपनी माँ से ढेर सी बातें कर सकता है लेकिन पत्नी के सामने केवल काम की बातें करगा। ऐसे दोगले चरित्र से मुझे घृणा होने लग गई थी।

उसने प्रयत्न नही किया ?

हा शुरू शुरू में कुछ कह रहा था फिर मेरी ओर से निराश होकर कोई पत्रिका पढने लगा।

सूर्य ढलने के साथ साथ हम दोनों छुटके के दरवाजे पर पहुँचे गये। बडके द्वारा घटी बजाने पर दरवाजा छुटके की बहू ने खोला—

अरे माजी आप। भाईसाहब आप। कहते हुए उसने अत्यन्त सस्कारी ढग से हमारे चरण स्पर्श किये। आशीर्वाद देते समय मेरा हृदय भी भाव विह्वल हो गया। आइये भीतर आइये। कहती हुई वह हमें भीतर ले गई।

बैठिये माजी कहते हुए उसने मुझे कुर्सी पर बिठला दिया। भाईसाहब। सामान वही रहने दीजिये नौकर आकर उठा लेगा। आप तो बैठिये। फिर देखिये तो कौन आया है। उसने ड्राइगरूम से ही आवाज लगाकर मेरे पास की कुर्सी पर बैठती हुई बोली— आप लोगों को देखकर तो वे खुशी से पागल हो जायेंगें। मैं उत्तर में मुस्कुराई और मैनें मन ही मन चैन की सास ली कि चलो रहने का ठिकाना तो मिला। मैं सोच ही रही थी कि छुटका अपने तीनों बच्चों के साथ आ गया। हम लोगों को देखकर अत्यन्त प्रसन्न भाव से पूछने

लगा 'अरे। आप लोग कब आये ? कैसी हो माँ ? के प्रश्न के साथ उसने मेरे पाव छुए। उस आशीर्वाद देते समय मैं गद् गद् हो गई_।

छोटी संतान पर मा बाप का विशेष स्नेह होता है शायद इसीलिए तुम्हारी आँखें आर्द्र हो गई।'

'शायद तुम्हारा कहना सही हो। मेरी आखों की आर्द्रता छुटके से छुपी नहीं रही। उसने मेरा कधा थपथपाते हुए मुझे हिम्मत बधाने की चेष्टा की। फिर उसने बडके के पाव छुए। उसके दोनों बेटों ने भी मेरी चरण वन्दना की। कुछ देर तक हम चुपचाप बैठे रहे। कुछ देर के बाद उसने अपनी पत्नी से चाय लाने के लिए कहा। वह उठकर भीतर चली गई। थोडी देर तक बडका छुटका औपचारिकता पूरी करने में लगे रहे तब तक चाय आ गई।

'इस बार भी केवल चाय थी या ? पूछकर मैं हसा।

'नहा नही इस बार चाय के साथ मीठा और नमकीन दोनों थे। उसने मेरी हसी से चिढे बिना बतलाया।

क्या प्रोग्राम है भैया आपका ? बातों में दौरान छुटके ने पूछा।

'बडका पहिले तो क्षण भर के लिए हिचकिचाया फिर हिम्मत करके बोला— दरअसल माँ पिताजी के स्वर्गवासी होने के पश्चात मेरे साथ ही थी। लेकिन एक जगह रहते रहते माँ ऊब गई है। अब वह बदलाव चाहती है इसीलिए मैं इसे यहाँ ले आया हूँ_?

'लेकिन तुम्हारा बडका बेटा तो झूठ बोला। तुमने कब स्थान परिवर्तन की बात की थी ?'

लगता है लखक तुम मुझे ध्यान से नहा सुन रहे हो ?'

'क्यों ?

'यदि तुम्हें याद हो तो ऐसा ही कुछ बडके ने मझले के घर पर भी कहा था।' अपनी बात समाप्त करके वह मेरी ओर देखने लगी।

मैंने हसकर अपने कानों को अपने हाथों से पकड कर उसकी ओर देखा। और न जाने मुझे ऐसा क्यों लगा कि वह मेरी मुख मुद्रा देखकर मुस्कुरा रही है। थोडी देर तक हम दोनों एक दूसरे की ओर देखते रहे फिर मैंने अपने हाथों

को कानों के ऊपर से हटा लिये। मुझे पूर्व मुद्रा में देखकर वह आगे कहने लगी—

वह तो ठीक है भैया। लेकिन ऐसे प्रोग्राम बनाने से पूर्व सूचना अवश्य द देनी चाहिए। ताकि हम लोग भी स्वय को मानसिक रूप स तैयार कर ले_? छुटके ने कहा।

तुम्हारा कहना सही है लेकिन माँ की जल्दबाजी का क्या उपाय किया जाता ? यह तुम्हारे पास आने की रट लगाए हुए थी। क्या करता ?अपना सब काम बीच ही में छोड कर इसे तुम्हारे पास पहुँचाने आया हूँ_?

मझल भैया स नही मिल ?

नही। बडके ने झूठ का सहारा लिया।

लेकिन तुम्हारा बडका बेटा बडा झूठा व्यक्ति था। उसन प्रत्येक बात कहने के लिए झूठ का सहारा लिया। तुम उसके पास सुख और चैन से रह रही थी। तुमने ठकताने की बात का जिक्र ही नही किया। यह तो उसकी पत्नी थी जिसे तुम्हारा वहाँ रहना अच्छा नही लगा और उसी के कहने पर वह बिना किसी पूर्व सूचना के कभी मझले के तो कभी छुटके के द्वार पर तुम्हे भिखारिन बना कर ले गया।

लेखक। तुम ठीक कहते हो। गलती मेरी ही थी क्योंकि अपने पिता की मृत्यु क पश्चात मेरे प्रति अपने कर्त्तव्य को निबाहने के लिए बडके बेटे को कटिबद्ध देखकर मैने उस पर विश्वास कर लिया और उसके साथ उसके घर म रहने लग गई थी। यदि मुझे इसके भीरु और कायर स्वाभाव का आशिक भी ज्ञान होता तो मैं इसका कहा मानकर मेरे पति के घर को छोडने की भूल कभी भी नही करती।

अच्छा फिर हुआ क्या ?

बडके के नही कहने पर छुटकी बोली— वे हमसे बडे है। यहाँ आने से पूर्व वहाँ कुछ दिनों के लिए रह आती तो अच्छा रहता_?

पहिले यहाँ रहने से क्या फर्क पडता है। मेरे पास तीन महीनें तक रही थी अब तीन महीने तुम्हारे पास रह जायेगी फिर यहाँ से मझले के यहाँ चली जायगी।

यह कहकर तुम्हार बडक बट ने स्वय को अगले छ माह तक तुम्हारी जिम्मेदारी से मुक्त कर लिया ? मेरी बात का उत्तर दिये बिना ही वह आगे बताने लगी।

दूसरे ही दिन बडे तडके बडका मुझे छुटक क यहाँ छोडकर अपने घर के लिए रवाना हो गया। वह तो चला गया और मैं उन लोगों के साथ रहन लगी। यद्यपि छोटे की बातों से यह स्पष्ट हो गया था कि उसे मेरा आना बहुत अच्छा नहीं लगा है तो भी मन में आशा की एक किरण थी यदि बताकर हम लोग आते तो शायद वह हमारी खातिरदारी ठीक से कर पाता और इसी किरण की डोर को पकडे पकडे मैं स्वय को वहाँ ढालने लगी। मेरे तीन सप्ताह बहुत आनन्द से बीते। उसक बाद मेरी बहू साप की कैंचुल सी बदलने लगी—

माजी पूरे दिन चुपचाप बैठी रहने से आप उकता जाती होगी।

'हा। मैंने कहा।

आप मेरे दो तीन काम करवा दीजियेगा इसम आपका तो मन लग जायेगा और मुझे मदद मिल जायेगी।

ठीक है। मैंने हामी भर ली।

सुनू जरा कौन कौन से कामों में तुमने अपनी बहू की मदद की।

उसकी बाई बर्तन माज कर जब चली जाती तब मैं उन्हें पौंछ पौंछ कर जमाती यदि पानी की एक बूद भी मेरी बहू की दृष्टि की पकड में आ जाती तो वह मेरे ऊपर बहुत चिल्लाती थी। खाने के कमर में एक वाश बेसिन लगा था जिसे मैं ही साफ करती थी। इसके अलावा दोनों समय की सब्जिया तराशती थी, दाल चावल साफ करती थी। इसक___

अरे अरे तुम्हारे ये सब काम तो नौकरों वाले थे और इन्हें तुम अपने स्वाभिमान का खून करके___।'

उसने मुझे पूरा सुने बिना हा बीच में दृढता स कहा हा हा मैं अपने स्वाभिमान की हत्या करके ये सब नौकरो वाले काम इसलिए करती रहा कि कल को कोई यह न कह दे कि वाह एक विधवा। और नखरे_?

तुम मुझे एक बात समझाओ क्या इस दुनिया की कोई भी नारी विधवा

का जीवन जीना चाहती है ?नहीं ना। फिर तुम क्यों उसकी गलत बातों को मानने लगी ? क्यों तुमने उसको इतना चढावा दिया कि वह तुम्हें एक नौकरानी मानने लगी ?

बतलाती हूँ सब कुछ बतलाती हूँ। आगे की कथा सुनकर तुम भी यह स्वीकार करने में नही हिचकोगे कि व्यक्ति का ज्ञान उसकी बुद्धि धरी की धरी रह जाती है और परिस्थिति अहम् हो जाती है। जहाँ तक उसके बताये गये कामों का प्रश्न था मैं नियम से कर देती थी। लेकिन दोपहर को मुझे नीद नही आती थी तो मै चुपचाप आकर ड्राइगरूम में बैठ जाती थी।

चुपचाप क्यों ? बातें करने के लिए तुम्हारे पोते पोती बहू सभी तो रहते थे_?

वे तीनों दोपहर में सो जाते थे। मेरे प्रश्न का उत्तर देकर वह आगे बोली एक दिन मैं ड्राइगरूम में अकेले चुपचाप बैठी हुई थी कि मेरी बहू आ गई—

माजी। यहाँ कैसे बैठी है। मै अपने कमरे म गई तब तो आप अपने कमरे में चली गई थी फिर यहाँ कब ?और क्यों आई है ?

दोपहर को नीद नही आती है इसीलिए अपने कमरे से उठकर यहाँ आकर बैठ गई।

यहाँ आइये। कहते हुए उसन बाल्कनी खोल दी। मेरे वहाँ पहुँचने पर बोली आप यहाँ दोपहर में बैठा करे सडक पर आते जाते लोगों को देखकर आपका मन भी लग जायेगा। इतना कहकर वह बाल्कनी का दरवाजा बद करने लगी।

नही नही तुम दरवाजा बद मत बद करो। यहाँ बाहर मैं कैसे बैठी रहूगी ? लोग क्या सोचेंगें ? दोपहर की गर्मी में तुम मुझे बाहर बैठने के लिए कह रही हो। इतनी गर्मी लू में मैं प्यासी बाहर बैठी रहू। नही नहीं बहू। ऐसा अनर्थ मत करो_?

एक मिनट रुको मैं अभी आती हूँ। इतना कहकर वह घर के भीतर चली गई। मैं विस्मित दुखी आश्चर्य चकित वही खडी की खडी रह गई। वह जब भीतर से लौटी तो उसके हाथ में पानी का जग और गिलास था। उन्हें टेबल

पर रखते हुए वह बडबडाने लगी कोई भी वस्तु ताले के भीतर नहीं रखा गइ है। पूरा घर खुला पडा हुआ है। न जाने पूरी दोपहर घर में क्या ढूढती रहती है।' मै जब तक उसके आक्षेप का कुछ उत्तर दे पाती उसक पूर्व तो वह धडाम से दरवाजा बद करके भातर चली गइ।

उसक जाने पर मुझे अपने अकलपन का अहसास हुआ। मैनें पीछे मुडकर दूर दूर तक फैली लम्बी सडक को देखा— सडक सूनी थी। गर्मी की दोपहर में कौन टहलता ? उस सूनेपन से घबराकर मैंने बाल्कनी के दरवाजे को खटखटाया आवाजें दी मिन्नत की लेकिन सब व्यर्थ रहा। वे पत्थर ह्दय लोग घर के भीतर पडे रहे। उन तीनों में से किसी ने भी आगे बढकर दरवाजे को नही खोला। कुछ देर तक मैं दरवाजे के पास खडी रही। फिर अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गई। मर नत्र गील हान लगे और मै वहाँ बैठे बैठ माधव क बार में सोचने लगी_?

'तुमने अपने पुत्र को नही बतलाया ?

कैसे कहती और कब बतलाती। वह राक्षसी सारे समय उसे घेरे रहती थी। अवसर ढूढ कर जब मैं अपने पुत्र के पास बैठती तो न जाने कैसे और कहा से वह आधी सी हमारे पास चली आती थी। और मुझे पुत्र से बातें करते देख जोर से खासती। उसकी इस आवाज से घबराकर जब मैं अपने नेत्रों को उसकी आर उठाती तो वह अपने नेत्रों की क्रोधाग्नि से मुझे झुलसाने लगती। मैं सहमकर अपने कमरे की ओर चल पडती थी।

'ओह यह जीवन तो जल क जीवन से भा अधिक कष्टदायी था। मैंने अनमने भाव से कहा।

इस जीवन के लिए जेल' शब्द बहुत छोटा है। यदि इस जीवन की तुलना नर्क से भी करो तो शायद नर्क का जीवन भी इस जीवन से सुखद होगा। उसने दुखी मन से अपने मन की सच्ची बात कह दी।

यह सुनकर मैं सोचने लगा कैसे इसने इस नारकीय जीवन को जिया होगा सहा होगा ?

लेखक। जब मेरा पुत्र ऑफिस के लिए जाता था तब मैं अपने कमरे के

भीतर रहती थी क्योंकि सुबह शाम मुझे अपने कमरे से बाहर निकलने की मनाही थी।

लेकिन क्यों ?

क्योंकि यह उसका घर था वह इसकी स्वामिनी थी। मेरा क्या अस्तित्व था?

तुम माँ थी ?

नही। मैं एक विधवा थी— केवल एक विधवा! और विधवा का भी कोई घर होता है । खैर। मैं अपने कमरे में पडी रहती थी। मेरे कमरे के दरवाजे मोटे पर्दों से ढके रहते थे।

तुम्हारा दम नही घुटता था ?

घुटता था। सच पूछो तो वह कमरा ही घुटन से भरा हुआ था। चारों ओर से बद कमरा दरवाजे पर लगे मोटे पर्दों की घुटन मेरे मन की घुटन और धीमे धीमे रेंगते से पख से उत्पन्न घुटन— बस उस कमरे में घुटन ही घुटन थी।

रेंगता सा पखा क्यों ? मुझे आश्चर्य हुआ।

क्योंकि मेरी बहू की आज्ञा थी कि मैं पखे को तीन से अधिक रफ्तार पर नही रखू।

क्यों

क्योंकि पैसे ज्यादा लगते थे ना।

तुम पर्दों को हटा कर रखती ताकि घर में होने वाली चहल पहल से ही तुम्हारा मन बहल जाता।

यह भी किया था और जानते हो क्या हुआ ?

क्या हुआ ? मैनें पूछा।

कमरे में छाई घुटन से घबराकर मैंने अपने कमरे के पर्दे को सरका कर झाका तो मेरा पोता चिल्लाया— क्या है ? पर्दे को क्यों सरकाया है। पर्दे को बदकर दो। मैने सहम कर पर्दे को वापस फैला दिया और अपनी खाट पर जाकर बैठ गई। लेकिन गर्मी की शाम में अपने बदन की चिपचिपाहट से

परेशान मैं उस कमरे में स्वय को कैद नही रख पाई और कमरे स बाहर निकल आई। मेरा कमरे स बाहर निकलना था कि मेरा पोता मम्मी कहकर चिल्लाया। लेकिन मैं उस समय घबराई नही, मुझे विश्वास था कि अब तक मेरा बटा भी ऑफिस स आ गया होगा। निडर मन स मैं आग ड्राइगरूम तक चला गई— वहाँ मेरा बटा अपनी बहू और अपनी लाडली बेटी क साथ नाश्ता कर रहा था। मैं मन ही मन लज्जित अपमानित वापस अपने कमरे की ओर मुड गई। लेकिन मेरे इस व्यवहार से मरी बहू का चैन नही मिला। वह अपने स्थान स उठकर मरे पास आई और मुझे लगभग खींचती सी अपने पति के सामने ले गई—

'देखों।' पत्नी की आवाज सुनकर मेर पुत्र ने मुँह ऊचा किया और मुझ सामने देखकर बोला—

'कुछ काम है मॉं ?

इसे क्या काम होगा। काम तो मुझे है।

हा हा बोलो। उसने मिमियाते हुए कहा।

तुम्हारी माँ है इसीलिए मैं इसे यहाँ सहन कर रही हूँ। किन्तु इसका अर्थ यह नही है कि यह मेरे निजी जीवन में ताक झाक करे हस्तक्षेप करें।

अपने बेटे को उपस्थित देखकर म भी साहस में आ गई और ऊची आवाज में पूछ बैठी— दिन भर तो मैं अपने कमरे में पडी रहती हूँ..?

'जबान लडाती है मुझसे। उसने मेरे कधों को पकडत हुए कहा।

मैंने अपने पुत्र की ओर दखा वह नीची गर्दन किये शात भाव से नाश्ता कर रहा था। उसकी निश्चिन्तता ने आग में घी का काम किया ओर मेरी क्रोधाग्नि सुलग गई तुमने जो कुछ आक्षेप लगाया है उसी का तो उत्तर दे रही थी। तुम मुझे अपन घर पर रख कर मेरे ऊपर कोई अहसान नही कर रही हो और हा मेरे शरीर को छुये बिना बात किया करो। इतना कहकर मैं जाने के लिए मुडी। मुझे मुडते देखकर उसने पति को झकझारा 'तुम कुछ क्यों नही बोलते ?

यह क्या बोलेगा ?' मैनें व्यग्य से कहा। लकिन तब तक वह बोल पडा— क्यों मा इधर-उधर ताक झाक करती हो ? क्यों नही अपने कमरे में बैठ कर भजन करती ?किसलिए घर की सुख शाति भग करती हो ? जितने दिनो

तक यहाँ हो कम से कम सुख से रहो और दूसरों को सुख से रहने दो।

सुन लिया तुमने ? बहू ने पूछा।

हा सुन लिया। मैनें भी गुस्से से कहा।

फिर यहाँ क्यों खडी हो ?

यह सुनकर तुम चुपचाप अपने कमरे में लौट गई ?

क्या करती लेखक ? तुम्ही बोलो।

तुम अपने नपुसक नामर्द जोरू के गुलाम बेटे को लताडती फटकारती। क्यों अपने बहू बेट के हाथों अपमानित होकर अपने कमरे में चली गई ? दरअसल गलती तुम्हारी थी। माधव के दुनिया से चले जाने पर तुम अपने बहू बेटों की प्रत्येक सही या गलत बात को स्वीकारने लगी थी।

तुम ठीक कहते हो। गलती मेरी ही थी। मुझे अपने माधव के मकान को नही छोडना चाहिए था।

फिर ?

उस दिन से मेरे कमरे में सुबह की चाय छ बजे पहुचा दी जाती थी। नौ बजे दूध का एक छोटा गिलास और दो नमकीन बिस्कुट। दोपहर एक फुल्के के साथ एक छोटी कटोरी दाल और पानी का एक गिलास। तीन बजे शाम की चाय दी जाती थी और रात को एक फुल्के के साथ एक छोटी कटोरी कढी। सोने से पूर्व वही एक छोटा गिलास दूध। बस यही मेरी एक दिन की खुराक मेरी बहू द्वारा निश्चित कर दी गई थी। उन चारों के साथ बैठकर मैं पहिले भी भोजन नही करती थी पर हा तब इतनी छूट अवश्य थी कि मैं बाहर टेबल पर बैठकर चाय नाश्ता खाना ले लिया करती थी_?

विश्वास नही होता कोई बहू अपनी सास के साथ इतना निम्न व्यवहार भी कर सकती है क्या ?

निम्न व्यवहार ? वह व्यग्य से बोली। अरे उसने तो मुझे अपने बेटे के घर में ही अस्पृश्य बना दिया था।

पुत्र की जननी पुत्र के घर में ही अस्पृश्य ? समझ नहीं पाया हूँ।

मै उनके मन्दिर में रोजाना पूजा करती थी और उस दिन भी रोज की

भांति पूजा करने जा रही थी कि बहू की तीखी वाणी सुनाई पडी—'उधर कहाँ जा रही हैं ?

पूजा करने मैनें सहमते हुए उत्तर दिया।

पूजा आप अपने कमरे में ही करें।

लेकिन मेरे लड्डू गोपालजी ? उनकी सेवा ?

उनकी सेवा। वह व्यग्य से मुस्कुराकर पूछने लगी— आप भगवानजी को स्नान करवाती हैं।

नहीं।' मैनें उत्तर दिया।

उनके वस्त्र बदलती हैं ?

नहीं।

रोली चन्दन चढाती है ?

'नहीं।

उनका नैवेद्य बनाती है ?

नही।

जब आपके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नहीं है तो आपको मन्दिर में बैठ कर पूजा करने का भी कोई अधिकार नही है।

लेकिन तुम स्वय यह काम अपनी इच्छा से करती हो। मैनें तुम्हें कितनी बार कहा है कि गोपाल जी की पूजा अर्चना मुझे करने दो लेकिन तुमने हमेशा मुझे इस अधिकार से वचित रखा है। मैनें तुम्हारी यह बात भी मान ली थी लेकिन अब यह मन्दिर में जाने की मनाही क्यों_?'

क्योंकि माला के मणियें ही तो घुमाने हैं। उन्हें आप अपने कमरे में बैठकर भी घुमा सकती हैं। अत्यन्त तेज शब्दों में मेरी बात काटते हुए उसने अपना निर्णय सुना दिया। मैं निरुत्तर माथा झुकाये अपने कमरे में लौट गई।

तुम उनके मन्दिर से निष्कासित एक अस्पृश्य की भांति उनके घर में रही ही क्यों ? क्यों नहीं अपने पति के घर में रहने के लिए चली गई ? मैनें किंचित क्षोभ और क्रोध के साथ प्रश्न किया।

भ्रष्ट आत्माए अपने स्थान विशेष का परित्याग तब तक नही करती है जब तक वे पूर्ण रूप से तिरस्कृत और अपमानित नही हो जाती है। अभी ईश्वर को मेरे निरादर से तुष्टि नही मिली थी। इसीलिए मैं वहा रह रही थी। वैस लेखक सच पूछो तो मै वहाँ रह नही रही थी बल्कि मुझ रहना पड रहा था और इसी विवशता क साथ उस घर में माहौल को मै झेल रही थी। मेरे से घर का काई भी सदस्य बात नही करता था। मैं दिन भर चुपचाप या तो अपने कमरे में रहती थी या दोपहर को जबरदस्ती बाहर बिठला दी जाती थी। ऐसे ही एकान्तिक क्षणों में या रातों के सन्नाटों में अपने दुख सुख के सहचर की स्मृति में आसू बहाती रहती थी। अपनी सिसकियों के बीच उससे यों मुझे नारकीय जीवन जीने के लिये छोड कर जाने का कारण पूछती थी या मुझ भी अपने पास बुला लेने की प्रार्थना करती रहती थी। बस या ही मृत्युजय बनी मैं एक एक दिन काट रही थी कि यह घटना घट गई—

एक दिन मैं अपने कमरे में बैठे हुए भोजन की थाली की प्रतीक्षा कर रही थी— ?

भूखी थी ? मैनें उसकी बात को बीच ही में काट दिया।

हा क्योंकि नौ बजे का दूध और बिस्कुट कितनी देर तक मेरी क्षुधा को अपनी तर्जनी के अकुश से वश में रख सकते थे। हा ता मै प्रतीक्षारत थी कि मरी पोती मेरे कमरे में आई— आपको मा रसोईघर में बुला रहा है।

पाती को कमरे में आया देखकर मैं प्रसन्न हुई थी। किन्तु उसके हाथों में थाली नही देखकर मै बुझ गई थी और जो कुछ उसने कहा था उसे सुनकर तो मै सहम गई थी। भीतर ही भीतर भयभीत मैं उसे उत्तर में हा ना कुछ भी नहीं कह पाई। मुझे चुप देखकर अपनी बात को पुन दोहराकर वह बाहर जाने के लिए मुड गई। उसे मुडते देखकर मैनें सोचा कही यह अपनी मा को मेरे विरुद्ध कुछ उल्टा सीधा नही कह दे। बस इस विचार के आते ही मैं रसोई घर की ओर चल पडी।

रसोई द्वार पर पहुँच कर मैं ठिठक गई।मुझे आया देखकर उसने कोने में पडे हुए आसन की ओर सकेत किया—

कहाँ। इसे कमरे में ले जाऊ ? मैनें पूछा।

नहीं यहाँ मेरे पास बिछा लो।

यहाँ क्यों ?

आज खाना नहीं खायेगी क्या ? उसका पूछने का ढग अत्यन्त असस्कारी था। वह 'आप से 'तुम नही सीधे 'तू के सम्बोधन पर आ गई थी। मैं चुपचाप अपना आसन बिछा कर उसपर बैठने लगी तो सुनाई पडा—

'वहाँ पर बैठने से पहिले अपनी परोसी हुई थाली ले जा।

भीतर ही भीतर अपमानित अपनी क्षुधा से व्याकुल मैं थाली लाने के लिए उसके पास गई। ज्यों ही पहिला ग्रास तोडा सुनाई पडा— धीरे धीरे क्या खा रही है ? जल्दी जल्दी खा ले। घर की बडी बुढी है तो भी सबसे पहिले खाना खाने बैठ जायेगी। अरे कभी अपने बेटे के लिए भी पूछ लिया कर कि उसने खाना खा लिया है या नही। देख कैसे धीरे धीरे चबा रही है। खा क्यों नही लेती है जल्दी से। उसके विषैले बाणों से लहूलुहान मैं_?

भोजन करती रही क्योंकि तुम अपनी क्षुधा पर मर्यादा का अकुश नही लगा पाई। इसीलिए तुम केवल इसीलिए इन न सुनने योग्य विष बुझे बाणों को सहन करती रही। मैंने बात काटते हुए उसकी भर्त्सना की।

कितने दिनों तक और किसके भरोसे पर अपनी क्षुधा पर मर्यादा का अकुश लगाती ? बोलो चुप क्यों हो ? जो मुझे ब्याह कर लाये थे व मुझे जीवन पथ पर साथ साथ चलते चलते, अचानक धोखा देकर अकेला छोड गये थे। दो दो पुत्रों के घरों में मेरा मूल्य कचरे की पेटी से अधिक नही आका गया था। तुम तो जानते ही हो लेखक। कि हम अपने घरों में कचरे को एक निश्चित अवधि तक रखते है। उसके बाद सफाई वाला उसे उठा कर बाहर फैंक आता है। लेकिन अपनी भूख पर नियत्रण रखने के लिए मेरे पास तो निश्चित अवधि का कोई केन्द्र बिन्दु भी नही था।

'तुमने अपने पुत्र से इस विषय में बात नही की ?

'मुझे पुत्र से बातें करने का समय तो तब मिलता जब वह मेरे पास आता। उसके पास अपनी माँ के लिए दो क्षण भी नही थे। हा वह अवश्य उसके साथ मेरे विषय में बातें करती रहती थी।

बहू बेटे की बातें चोरी छुपे सुनती थी ? मैंने उसे हसाने की चेष्टा की। आश्चर्य। घोर आश्चर्य। उसकी ओर देखने पर वह मुझे हसती हुई दिखाई पडी। फिर हसते हुए बोली—लेखक। तुम अच्छे श्रोता हो। यदि तुम्हारे प्रश्नों और मेरे उत्तरों का बीच बीच में आदान प्रदान नहीं होता तो मेरी कथा आत्मकथा सी नीरस और उबाऊ हो जाती...?

'अच्छा। मैंने मान लिया तुम उनकी बातें नहीं सुनती थी बल्कि तुम्हारी बहू ऊंची आवाज में तुम्हें सुनाने के लिए तुम्हारे बेटे के साथ बोलती थी...।

सचमुच लेखक तुमने उसके चरित्र को सही सही पहचाना है। वह ऐसा ही करती थी। एक दिन सुबह के समय मैं अपने कमरे में बैठी हुई थी कि मैंने सुना बहू बेटे से कह रही थी— सारे समय अपने कमरे में पडे पडे पलग तोडता रहती है। काम काज कुछ करती नही है। बस इसे खाना समय पर मिलना चाहिए। मालूम नही यह आफत कब तक मेरे गले में पडी रहेगी। इसे सुनकर मेरा पुत्र उसे समझाने लगा घर तुम्हारा है तुम इसकी महारानी हो तुम माँ को एक मेहमान की भाति समझो...

लेकिन मेहमान के जाने का दिन तारीख तो होती है। जबकि तुम्हारी माँ...?

लेखक। मैं अपने विषय में आगे सुनने के लिए नहीं ठहर सकी। हिम्मत करके बाहर बाल्कनी में चली गई। थोडी देर बाद मेरा बेटा मुझ पर एक वक्रदृष्टि फैंकता हुआ ऑफिस चला गया। उसकी दृष्टि से विह्वल मैं लॉन में चली गई। लॉन में घूमते घूमते थक कर मैने लॉन में लगे हुए झूले की डोर पकड ली। डोर पकडे पकडे मैं सोचते सोचते इतनी विचार मग्न हो गई कि मेरे शरीर का भार झूले पर आ गया। अचानक भार पडने से झूला टेढा हो गया और किसी वस्तु के नीचे गिरने की आवाज से मेरा ध्यान भग हुआ।

क्या तुम नीचे गिर गई थी ? मैंने दिल्लगी की।

नही लेखक। मैं नहीं अपितु झूले पर रखा हुआ अचार का मर्तबान नीचे गिर कर टूट गया था।

फिर ? फिर क्या हुआ। मैं चौंका।

विधाता बाम हो तो क्या होता है। बस वही सब अकल्पनीय मेरे साथ

घट गया। न जाने किस राक्षसी प्रेरणा से प्रेरित वह लान की ओर आ गई। जमीन पर फैले अचार और टूट मर्तबान के टुकडों को देख उस क्रुद्ध सर्पिणी ने न केवल विषैली फुकार ही मारी अपितु अपने जहरीले फन से मुझे डस भी गई_?

'क्या ? यह क्या कर रही हो ?

हा लेखक। उसने बहुत जोर से मेरे सिर पर थप्पड मारा। अपमान क्षोभ और पीडा से मेरा मन थू थू करने लगा। मैं स्वय अपना ही दृष्टि में तुच्छ हा गई। उसके भय से मेरे आँसू पुतलियों के भीतर ही ठहर गये। मुझे आग्नेय नेत्रों से देखती हुई वह घर क भीतर चली गई। और मैं पूरी दुपहरिया उस टूटे मर्तबान सी फूटी अपनी किस्मत पर आसू बहाती रही थी।

'यह घटना तो सुबह ही घट गई थी फिर तुम्हारे दोपहर के भाजन की व्यवस्था का क्या हुआ ?

'तुम मेरी क्षुधा तृषा का मत पूछो लेखक। मुझे लघु शका के लिए भी सडक के जनविहीन होने की प्रतीक्षा करनी पडी थी।

ओह कितनी दयनीय है तुम्हारी कहानी ? कितनी अविश्वसनीय है ये घटनाए? कैसे तुम्हारे पुत्र थे ?

मैंने पुत्रों को नहीं अपने पूर्वजन्म के बैरियों को जन्म दिया था। शायद मैं इन लोगों का पिछले जन्म में बहुत बडी कर्जदार रही थी तभी तो इस जीवन में एक एक क्षण का मौल चुकाया था मैंने ?

क्यों टूटे मर्तबान का भी मौल चुकाया था ? इतना पूछकर मैं हसने लगा।

हा मर्तबान के लिए मैंने दो सौ रुपये जुर्माने के भरे थे।

'दो सौ रूपये ? लेकिन क्यों ? क्या घर में चीजें टूटती नहीं है ? क्या बच्चों से घर की किसी वस्तु का नुकसान नही होता? फिर तुमने क्यों उस मर्तबान की कीमत चुकाई ? और चीजों को तो छोडा क्या ईश्वर के बनाये मानव नही टूट जाते है ? इस तथ्य को तुमस अधिक और कौन समझेगा।

'तुम ठीक कहते हो दा बेटों के घर रह कर यह मैं भली भाति जान गई थी कि जाने वाला व्यक्ति केवल मेरा अपना था। यदि उससे इन लोगों का भी

को चाय का कप लेन क लिए आगे बढा दिया। यह देखकर पुत्र ने अपनी पत्नी से चाय लाने के लिए कहा।

तुम ले आओ ना बनी पडी रखी है। बहू ने आखे मटकाते हुए बेट से कहा।

मेरा बटा मुस्कुरा कर भीतर की ओर चला गया। मेरी बहू ने उसके जाते ही मेर बढे हुए हाथ पर चाय का कप रखन के बनिस्पत मेरे हाथ को अपने दोनों हाथों में दबोच लिया। मैं दर्द स कराह गई। उसने मरे हाथ की अगुलिया मरोड दी और तर्जनी को ता इतनी निर्ममता से मरोडा कि वह टेढी हा गई। जब म अपनी पीडा को सहन नहीं कर पाई ता मैं दहाडें मार मार कर रोने लगी। मेरा बटा भाग कर आया। मुझे रोती देखकर बोला क्या हुआ माँ। मैनें उसको अपना हाथ दिखाया। उसन मरा मुडा अगुलिया का साधा करन का प्रयास किया किन्तु वे चारा उगलिया मुडी रही।

क्या हुआ ? अपनी पत्नी की ओर देखकर उसने पूछा।

कुछ नही तुम जल्दी से डाक्टर को बुला लाओ।

मेरा पुत्र डॉक्टर को बुलाने के लिए चला गया। अब बहू की उपस्थिति का भय और मेरा अथाह दर्द मैं जोर जार से रोने लगी। यह देखकर मेरी बहू मरे पास आकर बैठ गई। मैं पीछे खिसकी—तब तक तो उसने मुझे पकड कर मेरे सिर पर तीन चार थप्पड लगा दिये। मैं और जोर जोर से रोने लगी। तभी मेरी पोती ने आकर कहा क्यों मार रही हो ? पास पडौस के लोगों को दादी का रोना सुन जायेगा तो ?

तू अन्दर चल चल अन्दर ? और उसे कमरे से बाहर जबरदस्ती निकाल दिया। फिर मरे पास आकर मेरी चोटी पकड कर चिल्लाने लगी— रोती है राड। तू रो रही है। बशर्म रडी। अब तेरे नखरे उठाने वाला तेरा खसम जिन्दा नही है। तू खा गई उसको तो। अब अपने बेटों को भी खायेगी क्या ? चुप हो जा कुतिया। लेकिन बहू की मार और गालिया भी मेरे रुदन को नियत्रण में नही रख पाई। तभी वह फिर चिल्लाई रडी चुप नही होती है वह मुझे चुप करवाने में इतनी मशगूल थी कि उसे मेरे बेटे के आने की भी खबर नही हुई। उसने जोर से कहा डाक्टर साहब आ गये है। यह सुनकर वह चौंक कर पीछे

पलटी ओर अपने पति को देखकर खडी हो गई। लेकिन पति के साथ डॉक्टर को न देखकर उस डॉक्टर के लिए पूछा—

आ रहे है। पत्नी को उत्तर देकर उसने मेरे से पूछा।

लेकिन माँ तुम्हारी अगुली ऐसे कैसे मुड गई ?

'तुम्हारी बहू ने मरोड दी यह कहकर मैं रोने लगी।

मुझे रोते देखकर वह मेरी ओर झपटी लेकिन बीच ही में पुत्र नें उसको पकड लिया। इससे वह अत्यधिक क्रुद्ध हो गई। अपने पति की कमीज की कॉलर को पकडते हुए उसने स्वय को छोडने के लिए कहा। मेरे बेटे ने उसे छोड दिया। उसने मेरे बेटों का खा जाने वाली दृष्टि से देखते हुए पूछा— क्या आवश्यकता थी इस राड को यहाँ लाने की ? इसको यहाँ आये हुए चार महीने पूरे हो गये है। क्यों नही अपने दोनों बडे भाईयों को लिख देते कि वे लोग आकर इसे ले जाये।

तुम गाली क्यों दे रही हो ? मैं लिख दूगा लेकिन पत्र पहुँचने में और उन लोगों के यहाँ आने में समय लगेगा तब तक तो तुम धीरज रखो।

इसके और मेरे बीच में आने की कोशिश मत करो वरना तुम्हारा भी खून पी जाऊगी। फिर मेरी ओर देखकर कहने लगी— रडी। बेशर्म। टेसुए बहा रही है चुप हो जा वरना और मारूगी—?'

यह सुनकर तुम्हारा बेटा_? माफ करना सखि तुम्हारा कायर क्लीव, नामर्द नपुसक बेटा क्या बोला ? मनें पूछा। 'वह सिर झुका कर बैठ गया। उसके झुके हुए मस्तक से मैनें उसके स्वामित्व का अदाजा लगा लिया। उसी क्षण मैनें उस घर को त्यागने का निश्चय कर लिया। क्योंकि मैनें सोचा मेरे यहाँ रहने पर कोई भी अप्रिय घटना घट सकती है और जिसके लिए मैं बडा सुगमता से जिम्मेदार ठहरा दी जाऊगी।

पापा। डॉक्टर अकल आ गये है। मेरी पोती ने आकर सूचना दी।

चला माँ के कथन के साथ उसने मुझे उठाया और बाहर के कमरे में ले गया।

क्या हुआ माजी ? डॉक्टर ने मुझे रोते हुए देखकर पूछा।

मैनें नि शब्द अपनी अगुली उसकी ओर बढा दी।

उसने मेरी टेढी अगुली देखकर आश्चर्य प्रगट किया—'यह अगुली इस प्रकार कैसे मुड गई ?

अभी बाथरूम में गिर पडी थी। सारे शरीर का बोझ यह अगुली सभाल नही पाई और टेढी हो गई। छुटके की बहू न डॉक्टर का स्थिति स अवगत करवाने में तनिक भी विलम्ब नही किया।

माजी। इस उम्र में ध्यान से चलना चाहिए। देखिये बैठे बिठलाये आपको कितनी तकलीफ हो गई है। कहकर वह पर्चा बनाने लगा कुछ दर्द निवारक गालिया लिख रहा हूँ। लेकिन एक्स रे अवश्य करवा लीजिये। फिर मेरे बेट को सबोधित करके कहने लगा अभी एक्स रे करवा लो हड्डी के टूटने का भी पक्का मालूम हो जायेगा।' इतना कहकर मेरी उम्र पूछने के लिए उसने मेरी ओर देखा मैने कहा पचास वर्ष तो वह चौंक कर बोला लेकिन आप पैंसठ वर्ष से भी अधिक उम्र की लगती है।

यह सुनकर मैं सोचने लगी कि विधवा उम्र से पूर्व ही वृद्धा लगने लगती है इसलिए नही कि उसका तेज उसकी शक्ति उसकी चमक सब उसके पति की चिता की अग्नि की लपटों में झुलस जाती है बल्कि उसके अपने ही उसकी यह निजी सम्पदा छीन लेते है। अपनों से छली गई विधवा का एकाकीपन उसे समय से पूर्व ही वृद्धा बना देता है ?'

उठों माँ क्या सोच रही हो ? पुत्र के प्रश्न को सुनकर मैं चौंकी चलो माँ डॉक्टर के यहाँ एक्स रे करवाने। पुत्र ने पुन कहा। यह सुनकर मैं धीरे से उठी। तब तक छुटके की बहू भी साडी बदल कर आ गई। उसे साथ चलने को तैयार देखकर पुत्र ने कहा 'तुम क्या करोगी ?

तुम्हारी माँ को तुम्हारे साथ अकेले नही भेजूगी। न जाने रडी क्या सच का झूठ करेगी।

प्रत्युत्तर में मेरा बेटा चुपचाप मेरा हाथ पकड कर चलने लगा। एक्स रे में मेरी अगुली के टूटने का चित्र आ गया। सवा महीने का पलस्तर बधवा कर मैं घर पर आ गई।

चलो बहू द्वारा बताये गय तीन कामों से तुम्हारी छुट्टी हो गई।

मैं सारा दिन अपने कमरे में पडी रहती। मेरे पास कोई भी आकर नही बैठता था। मैनें तुम्हें बतलाया था ना कि मौसम बदलने लगा था। उस दिन अचानक मूसलाधार वर्षा हो जाने के कारण मौसम में ठडक बढ गई थी। मैं अपनी पतली रजाई में ठिठुर रही थी। लेकिन क्या करती ? किसे कहती ? वही उसी पतली रजाई में दुबकी पडी थी कि मेरा बेटा आ निकला। मुझे कापते देखकर वह भीतर गया और एक कम्बल लेकर आ गया। मुझे कम्बल उडा कर वह जाने लगा तो मैनें कहा बेटे— यह पलस्तर तो तुम्हारे पिताजी के घर में भी खुल जायगा मेरा अब यहाँ मन नही लगता है—

हा मा मैंने लिख दिया है। बहू के डर से इतना कहकर वह जल्दी से कमरे के बाहर हो गया।

मेरी क्षीणकाया रजाई और कम्बल की गर्माहट को अनुभव करते करते सो गई।

दिन बीत रहे थे एक दिन मैं धीरे धीरे सूटकेस म से अपने पहिनने के कपडें निकाल रही थी—

क्यों तुम्हारी बहू ?क्या वह_?

नही नही उसने कभी मेरा कोई काम नही किया अपितु दायी अगुली पर पलस्तर बधा होने के बावजूद भी मैं अपना प्रत्येक कार्य स्वय करती थी हा तो दिन में नहाने के लिए अपने कपडे निकाल रही थी कि न जाने वह कैसे मेरे कमरे में आ गई। मुझे कपडे निकालते देखकर बोली— लाओ मैं कपडे निकाल दू।

नही नही। मैनें घबराये स्वर में कहा।

लेकिन उसने मेरे शब्दों पर ध्यान दिये बिना मुझे अपने हाथ से आगे की ओर खिसका कर मेरी सूटकेस में रखी मेरी चीजों को उलटने पलटने लगी। मैं उसकी ओर भय से देख रही थी कि अचानक उसका चेहरा खुशी से चमक गया—यह देखकर मैं चौंकी। तभी वह बोली—

वाह। बडी सुन्दर सुन्दर साडिया है। लेकिन तू तो अब विधवा हो गई है। तू ये साडिया थोडी पहिनेगी ला ये छ सात साडिया तो मुझे दे दे। और उसने सात साडिया सूटकेस में से बाहर निकाल ली।

नहीं नहीं इन साडियों को मत लो। ये मेरे पति की आखिरी निशानी है।' मैंनें गिडगिडाकर कहा।

अरे मूर्ख औरत। तेरे बेटे क्या तेरे पति की निशानी नहीं है ? या फिर इन्हें कही ओर से_?

बहू का इतना कहना भर था कि मेरी तीसरी जिठानी मेरी आखों कें समक्ष आ खडी हुई। उसे देखकर मैं क्रोध से कापते हुए कहने लगी मेरे चरित्र के विषय में एक शब्द भी मुहँ से निकालन से पूर्व सोच लिया करो।'

इतना सुनकर वह भूखे शेर सी मेरे ऊपर झपटी। मेरे गले को अपने हाथों की अगुलियों स दबाते हुए बाली मर साथ जबान लडाती है रडी। अभी गला दबाकर मार दूगी दीवारों को भी खबर नहीं होगी। सब समझेगे बुढिया थी मर गई।

जान से मार दे मुझे लेकिन जीते जी मेरी साडिया तुझे नही दूगी। घिघियाते हुए मैंने कहा।

नही देगी राड ! कुलटा ! बेशर्म ! वेश्या ! तेरी इतनी हिम्मत कि तू इस घर में रहे। इसी घर का खाये और साडिया देने के लिए मना करे।' वह गालिया देती रही मारती रही लेकिन मैंने उसे वे साडिया नही लेने दी। क्योंकि उन साडियों में लेखक। मेरे प्रिय की स्मृतिया थी उनके हास परिहास थे हसी ठिठोली थी। थक कर वह कमरे से बाहर चली गई।

रात होने पर मेरी पोती मेरे लिए खाना लाई मैंनें मना कर दिया। यह जानकर मेरा पुत्र मेरी तबियत पूछने के लिए आया। मेरे जी में आया बेटे को बहू की शिकायत करू लेकिन बहू के 'पुरुषार्थ' का स्मरण करके मैं चुप रही।

मुझे चुप देखकर वह मेरी रजाई पर कम्बल डाल कर कमरे से बाहर चला गया। उसके जाने पर मेरी बहू कमरे में आई और मेरा कम्बल लकर चली गई। मैं सारी रात ठड से ठिठुरती रही सिसकती रही, माधव को पुकारती रही।

एक रात के लिए कम्बल उतार कर उसे कौनसी खुशी मिली ?

एक रात के लिए नही लेखक। उस रात के बाद मैंनें कम्बल ओढी नही।

तुम्हारा नपुसक बेटा ? क्या वह तुम्हें कबल ओढाने नहीं आया ?

नहीं क्योंकि यह जिम्मेदारी मेरी बहू ने सभाल ली थी अत मैं अपने पुत्र को भी क्या दोष दू ?

जब मैंने देखा कि इतने दुखों के बावजूद भी वह अपने पुत्र को दोषी नही ठहरा रही है तो अनायास ही मेरे मुहँ स निकल गया तुम माँ हा ना इसलिए अपने पुत्र के दोषी होने पर भी उसे दोषी नही ठहराओगी यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ वरना ये पक्तिया ही अर्थहीन हो जायेगी। कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

"मेरी उक्ति सुनकर वह मेरा मुहँ देखती रही। कुछ क्षणों के मौन के पश्चात उसकी वाणी में पुन प्रवाह आने लगा। अन्तत मेरे पलस्तर खुलने का दिन भी आ गया। मेरे पुत्र ने अपनी पत्नी से अस्पताल चलने के लिए कहा उसने काम का बहाना बना दिया। मैं और मेरा पुत्र दोनों अस्पताल गये। रास्तें में मैनें अपने पुत्र से अपने जाने की बात कही। पुत्र ने पलस्तर के खुलने के दो चार दिन बाद मझले क घर पहुँचाने की हामी भर ली।

अस्पताल पहुँचने पर मेरी अगुली का पलस्तर खोला गया लेकिन हाय रे भाग्य। मेरी अगुली टेढी की टेढी ही रह गई।

लेकिन क्यों ?

क्योंकि भाग्य ही खराब था। वरना डॉक्टर के बार बार आगाह करने पर भी मेरी बहू मेरा एक्स रे दोबारा लेने से क्यों मना करती ?

मैं समझा नहीं। मैनें अपनी विवशता जताई।

डॉक्टर ने पलास्तर करते समय हर सप्ताह एक्स रे करवाने के लिए कहा था किन्तु मेरी बहू ने इसे अनावश्यक खर्चा बतलाया था और डॉक्टर की सलाह वही खत्म हो गई थी।

तुम्हारे पुत्र की कोई प्रतिक्रिया नही हुई ? या अपनी पत्नी के "पुरुषार्थ के समक्ष आखे झुकाये बैठा रहा। मैनें व्यग्य किया।

'लेखक तुम ठीक कहते हो। मुझे उत्तर देकर वह आगे सुनाने लगी। पलस्तर खुलवा कर जब मैं अपने कमरे में गई तो देखा मेरा सूटकेस अधखुला पड़ा था। चीजें अस्त व्यस्त थी। मेरा हृदय काप गया। मैनें अपना सूटकेस

खोला कपडे,ऊचें, नीचें करके,इधर उधर खिसकाये तो देखा मेरे गले की सोने की जंजीर गायब थी। मेरी वे सातों साडिया वहाँ नहीं थी। अपने पति की निशानी अपने गले की सोने की चैन गंवा कर, मुझे लगा जैसे किसी ने मेरी सम्पदा लूट कर मुझे अकिंचन बना दिया है। मैं रोने लगी। कितनी देर तक रोती रही,लेकिन मेरे आसुओं को पौंछने के लिए कोई नहीं आया।

तीन दिन बाद में अपनी क्षीण काया,अस्वस्थ मन,क्लान्त चेहरा और बहू की मार के नील पडे निशानों और टेढी अंगुली के साथ साथ अपनी लहू लुहान आत्मा लिये मंझले के घर के लिए रवाना हो गई।

'तो भी तुमने वहाँ से जाने से पूर्व कुछ नहीं कहा ? तुमने कितनी सहजता से अपनी अमूल्य थाती गले की जजीर उसे सौंप दी। लेकिन क्यों। क्यों दी ? अच्छा तुम बतलाओ क्या उसने कोई सेवा की थी,जिसके फलस्वरूप तुम उसे अपने प्रिय की स्मृति सौंप आई। अरे। जिसने तुम्हारे चाय पीने पर खाने पर, घर के सदस्यों के बीच बैठने पर पाबन्दी लगा दी थी। जिसने तुम्हें सर्दी की रातों में एक पतली रजाई के बीच ठिठुरने दिया,कापने दिया,उसे ही तुम अपने गहने और साडिया सौप आई। सचमुच तुम भी ...। अब क्या कहू। सिवाय इसके कि तुम्हारी बहू ने तुम्हें मार पीट कर,नोंच खसोट कर अपने घर से बाहर निकाल दिया।

लेखक। तुम्हें पूरी छूट है तुम जो चाहो वह कहो। किन्तु जब तुम्हारी लेखनी मेरे लिए लिखने लगे तो मेरे व्यथित हृदय की मौन करुणा और मेरी अन्तरात्मा के नीरव क्रन्दन को मत बिसरा देना।

'इसीलिए तो दीर्घतर सी लम्बाई समेटे तुम्हारे दुःखों के अरण्य में साथ साथ चल रहा हूँ..। मैनें भावुकता से कहा।

कुछ देर तक हम दोनों चुप रहे फिर मैनें हंसकर उकसाया—'हां तो अब तुम अपने छोटे बेटे के साथ मझले बेटे बहू के द्वार पर पहुँच गई। बेटे बहू ने तुम्हारे चरण स्पर्श किये और तुम्हें छुटके के साथ भीतर ले गये। उसके बाद क्या हुआ ?'

'मझले बेटे बहू मेरे काले व क्लान्त चेहरे को देखकर सकते में आ गये। छुटके का सहारा लिये लिये मैं,अपनी क्षीण काया के साथ उनके कमरे में पहुच

गई। वह शायद उनका सोने का कमरा था। पलग बिछे हुए थे। जी में विश्राम करने की तीव्र इच्छा जागी किन्तु छोटी बहू के दुर्व्यवहार से डरी सहमी मैं कुर्सी पर ही बैठ गई। मैंने सुना मझला छुटके से पूछ रहा था

'मा का स्वस्थ्य इतना कमजोर हो गया है इस बात की चर्चा तो तुमने अपने किसी भी पत्र में नही की थी ?

'यदि लिख देता तो क्या होता ? छोटे ने उपेक्षा दिखलाई।

मैं तुम्हें वहाँ डॉक्टर से परामर्श करने के लिए लिखता।

अब वृद्ध शरीर है। डॉक्टर भी क्या कर सकता है। इसे युवा तो बना नहीं सकता।' छुटके ने पुन अपने पक्ष को प्रबल बनाया।

वह सब ठीक है लेकिन वृद्धावस्था में भी स्वास्थ्य ठीक रहता ही है। मझले ने छुटके की दलील को खोखली बतलाते हुए अपना मत रखा।

'अब आप उस कमी को यहाँ पूर कर लीजियेगा। आप यहाँ के डॉक्टर से सलाह मशविरा करते रहियेगा। वैसे भी मैंने मा को तीन महीने तक अपने पास रख लिया है। अब आप इन्हें अपने पास रखियेगा।

यहाँ कितने महीने तक रहेगी ? मझली बहू ने पूछा।

अभी माँ आई है। इन्ही का घर है जब तक रहना चाहगी यहाँ रह लेगी। मेरी उपस्थिति में अपनी बहू के तुच्छ विचार पर पर्दा डालते हुए मझले ने मुझे सबोधित किया—

माँ। तुम कुछ देर आराम कर लो बहुत थकी हुई लग रही हो।'

अधे को क्या चाहिए दो आखे ? मैं सामने बिछे पलग की ओर बढने लगी। तभी मझली का स्वर सुनाई पडा—

आइये माजी। आपको अपना कमरा दिखला दू।'

मैंने अपने सग बेटों की ओर देखा किन्तु_?

सगे बेटे यह क्यों कहा ? मैंने उसे बीच में टोका।

कहीं पढा था फलको जट को टाबर पेट को किन्तु मेरा साथ तो इस कहावत ने भी नहीं दिया। मेरे अपने पुत्रों को सिर नीचा किये देखकर मेरा हृदय घृणा से भर गया। अपने कायर और निकम्में पुत्रों से बिना कुछ कहे मैं अपने

कमरे की ओर बढ गई...?'

बहू द्वारा पूछे गये निर्लज्ज प्रश्न को पुत्रों द्वारा गभीरता से न लेते हुए टालना माँ किस बिछौने पर आराम करेगी इसका निर्णय भी तुम्हारा पुत्र नहीं कर सका। सचमुच सखि! तुम्हारे पुत्र अभागे थे जो ममता का मूल्य आकने में असफल रहे। अरे! एक औरत अनगिनत तीर्थ यात्राओं की पीडा सहकर अनक देवस्थानों पर अपना माथा टिकाकर, अनेकानेक जप तप से अपनी काया क्षीण कर अपने पुत्र की मगल कामना करती है और ममता की छाव में घुटने चलता भागता शिशु अचानक ममता का अपमान करके पुरुष की परुषता का परिचय देने लगता है तब? तब पुत्रवती भव भव आशीर्वचन नही अपितु शापित मत्रोच्चार सा भयानक और बीभत्स जान पडता है।

लेखक! तुम ठीक कहते हो। इतना कहकर वह चुप हो गई कुछ देर तक चुप रहने के बाद उसने कहना शुरु किया—"यह आपका कमरा है।" कमरे के बाहर से ही बहू ने बतलाया और वह वहाँ स चली गइ। मैं भी अपने कमरे में घुसी। कमरा इतना छोटा था कि एक पलग भी उसमें मुश्किल से डाला हुआ था। अब बहू के बाहर खडे रहने का रहस्य मेरी समझ में आया। अपने भाग्य पर मुस्कुराते हुए मैंने पलग की ओर देखा वहाँ चौखाने की एक मटमैले रग की चादर बिछी हुई थी अचानक अपने पति के घर पलग पर बिछी हुई चादनी सी श्वेत धवल स्वच्छ चादर स्मरण हो आई। फिर यही नियति है सोच कर मैं पलग पर बैठ गई। पलग पर बैठने पर जाना कि यह निवार की पलग नहा अपितु मूज की रस्सी से बनाई हुई चारपाई है और चारपाई पर गद्दा नहीं अपितु दरी बिछी हुई है। चारपाई के ढीलेपन और दरी के कठोर स्पर्श ने आखों में पानी ला दिया। आसू पोंछने के लिए आखे बद की तो अपनी बाहें पसारे माधव सामने आ गया। मैंने तत्काल आखें खोल दा—सामने कमरे की दीवार थी। मैं दु:खी अपने निर्बल और क्षीण शरीर को लिये चारपाई पर लेट गई। मेरे लेटत ही चारों आर की दरी अपना अपना किनारा छोड कर बीच में आने के लिए होड सी लेने लगी। मैं उस चारपाई के बीच एक छोटे बच्चे की भाति गोलमोल होकर पडी रही। शरीर थका हुआ था। नींद आ गई।

शाम को छ बजे के करीब छुटका कमरे में आया मैं रात को जा रहा

हूँ। फिर कमरे को चारों ओर से देखकर कहने लगा जब तुम मेरे पास थी तब तुम्हारा कमरा इस कमरे से तो बडा था। किन्तु तुम अपने उज्जड स्वभाव के कारण अपनी बहू से बना कर नही रख सकी। अब रहो इस नर्क में और भोगों यहाँ के कष्टों को। जब कष्टों को भोगते भोगते थक जाओगी तब हम बहू बेटों का याद करोगी।

'तुमने क्या कहा ?

क्या कहती ? चुपचाप सुनती रही_'

तुमने उसे अपनी पीठ और गले पर पडे नीले निशानों को नही दिखलाया ?

क्योंकि मैं अपने पुरुषार्थ विहीन पुत्र को और अधिक लज्जित नही करना चाहती थी।

धन्य हो पुत्र की कमजोरी पर पर्दा डाल रही हो ?'

नही यह सच्चाई है। अपनी पत्नी के समक्ष मेरा यह पुत्र बहुत निर्बल ठहरता था। बहुत दुखी था_।'

'तुम्हारे बेटे बहू के आपसी सम्बन्ध सुखद थे या तनावयुक्त मेरे लिए यह बहुत गौण है। तुम्हारी कथा सुनने के लिए मेरी लेखनी तुम्हारी बधुआ मजदूर बनी है_।

इतनी नाराजगी इतना आक्रोश ?' इतना कह कर वह दो क्षण तक रुक कर मेरी ओर देखती रही फिर स्वत ही बोलने लगी

दूसरी सुबह मेरी आख देर से खुली। अलसाई सी मैं अपने बारे में सोच रही थी कि क्या यह घर मेरा ठौर ठिकाना बनेगा ? या उन दो घरों की भाति यहाँ से भी निकाल दी जाऊगी। फिर स्वय को भाग्य के भरोसे छोडकर, मैं बाहर जाने की तैयारी करने लगी कि पोते की आवाज सुनाई पडी

'मम्मी चाचा तो दादी की गठरी का बोझ आप लोगा क कधों पर लाद कर स्वय जिम्मेदारी से मुक्त होकर अपने घर चले गये है।

'यह सुनकर मै पुन। पलग पर पड गई।

कोई तुम्हें उठाने नही आया ?

नहीं। मेरे वहाँ पहुँचने पर किसी को प्रसन्नता नही हुई थी मैं चुपचाप

उसी स्टोरनुमा छोटे से कमरे में पडी रही। यहाँ तक कि दोपहर हो गई लेकिन किसी ने मेरे कमरे की ओर झाक कर नही देखा। तब मैं ही हिम्मत करके बाहर निकली। कमरे से मुझे बाहर आया देखकर बहू ने कहा आप सो रही थी इसलिए मैंने जान बूझकर नहीं उठाया।

अच्छा किया मुझे अभी भी बहुत थकान लग रही है। कहकर मैं आगन मे रखी कुर्सियों पर बैठ गई।

चाय पियेगी माजी।

पी लूगी।

अभी लाती हूँ। कहती हुई वह रसोई में चली गई।

कैसी तबियत है माँ।' पीछे से पुत्र ने पूछा।

ठीक है बस थकान है। मैनें कहा।

यह भी ठीक हो जायेगी_ तभी बहू चाय का कप लिए आ गई। उसके हाथ में चाय का कप देखकर मेरा मझला बेटा चौंक कर बोला'चाय। और इस समय ?

माजी अभी सोकर उठी है ना। छुपाते छुपाते भी बहू का स्वर व्यग्यात्मक हो गया।

जल्दी उठा करों माँ मैं तो इस समय खाना खाने आया हूँ। क्या वहाँ छुटके के यहाँ भी इतनी ही देर से उठती थी ?

उत्तर दिया बहू ने वह तो छ बजे चाय की प्याली थमा देती होगी। उसके यहाँ हर काम समय से होता है। यदि चाय का समय नही है तो वह देवरजी को भी एक प्याली चाय के लिए मना कर देती है।

बहू बेटों की बातें सुनकर मेरा माथा नीचे झुक गया। गलती मेरी ही थी मुझे इतनी देर तक नहीं सोना चाहिए था। किन्तु क्या करती। छुटके की बहू का भय भूत बना मुझ वहाँ चौबीसों घटों डराये रखता था। यहाँ आने पर शायद उस भय से मुक्त होनेपर आख लग गई हो _।

क्या सोच रही है माजी चाय पी लीजिये। कहते हुए बहू खडी हुई। बेटे ने भी उसका अनुकरण किया।

तुमने अपने देर तक साने का कारण बेटे को क्यों नही बतलाया। मेरे ख्याल से अपने बारे में किसी को सही सही नही बताना तुम्हारे स्वभाव की सबसे बडी कमी रही है और इसीलिए ये अघटनीय घटनाए तुम्हारे साथ घटती रही।

'नही तुम्हारा सोच सही नहीं है। मेरे सोच का गलत ठहराते हुए वह चुप हो गई लगा जैसे वह कुछ स्मरण कर रही है। मैं चुपचाप उसके बोलने की प्रतीक्षा करता रहा। अचानक वह कहने लगी मैं अपने दमघोटू कमरे में पडी रहती थी_?

आश्चर्य है घर में इतने लोगों के बीच भी तुम अकेली कमरे में पडी रही_?

यह कोई तिलस्मी घटना नही जिसे सुनकर तुम आश्चर्य में पड गये हो। यह वह यथार्थ है जिसे मैनें भोगा है उसने मुझे लताडते हुए अपनी कथा में प्रवाह बनाये रखा

मैं अपने कमरे में अकेले पडी रहती थी। एक दिन मेरा पुत्र मेरे कमरे के बाहर खडे रहकर पूछने लगा

माँ। तुम सारे दिन अपने कमरे में क्यों रहती हो। बाहर आकर बैठा करो_।

आया करूगी। मेर मुहँ से हा सुनकर वह कुछ देर तक वहाँ खडा रहा फिर वहाँ से हट गया।

चलों यह ठीक रहा कि तुम्हें बाहर बैठने का सिगनल मिल गया। वरना तो तुम छुटकी बहू के भय से यहाँ भी कमरे में पडी रहती थी। मैनें चुटकी ली।

लेकिन उसने मेरे व्यग्य को अनसुना करके आगे कहा

पुत्र के जाने के बाद मैं उठकर आगन में रखी कुर्सी पर जाकर बैठ गई। आगन में कोई नही था। मुझे वह एकान्त और सर्दी की धूप बडी सुखदायक लगी। कुछ देर के बाद सर्दी की ठिठुरन से जकडे हुए मेरे अग, धूप के ससर्ग से खुलने लगे। मैनें पावों को नीचे की ओर फैला कर कुर्सी का टेका लगा लिया। थाडी देर बाद मेरी आखे स्वत ही बद हो गई। मैं इस आत्मिक आन्नद को अनुभव करने लगी थी कि—

'धूप सक रही है माजी। बहू की आवाज सुनाई पडी। मैनें हडबडाकर आखे खोल दी पालक मैथी की डलिया लिए मेरी बहू सामने खडी थी। मुझे अपनी ओर देखते देखकर वह बोली अच्छा किया जो आज आप बाहर चली आई वरना कमरे में बद रहन से अच्छा भला आदमी भी बीमार हो जाता है।

हा तुम ठीक कहती हो। मैनें घबराये स्वर में उत्तर दिया।

यहाँ किसी भी तरह की कोई तकलीफ हो ता कहिये। अपने शब्दों में मिठास घोल कर उसने पूछा।

मैं बहू के अपनप्व से प्रभावित हुए बिना नही रह सकी। जल सा पारदर्शी मेरा मन बहू की आत्मीयता स आहलादित होकर अपनी पीडा बताने लगा यहाँ तुम लोगों के पास मुझे कोई तकलीफ नही है। हाँ चरपाई के ढीली होने के कारण दरी बीच में आकर इकट्ठा हा जाती है जिसक कारण सोने में तकलाफ होती है। या तो तुम चारपाई की रस्सी कसवा दो नही तो एक गद्दा डलवा दो जिससे मेरी बुड्ढी हड्डियों को आराम मिल जायेगा। अपनी बात समाप्त करके मैनें बहू की आर आशा से देखा तो मैं चौंक गई। उसके चेहरे की सौम्यता और मुस्कान मेरी समस्या और मरे सुझाव को सुनकर कठोरता एव विद्रुपता में परिवर्तित होने लगे थे। छोटी बहू द्वारा दी गई शारीरिक यातना मेरी स्मृति में कौंध गई। मैं भीतर ही भीतर उसके डरावने और वीभत्स चेहरे को देखकर दहल गई। बिना एक क्षण गवाये मैं कुर्सी से उठने लगी।

मुझे कुर्सी से उठते देखकर उसने अपने हाथ से मुझे कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। क्या यह भी अब मुझे मारेगी ? यह सोच कर मैं पीपल के पत्ते सी कापने लगी। लेकिन उसने मुझे मारा नही अपितु मैथी पालक की डलिया को मेरे सामने टेबल पर रखते हुए बोली भीतर जाकर क्या करेगी। लीजिये पालक मैथी को साफ कर दीजिये।

यह सुनकर जी में आया अपने निर्बल और क्षीण शरीर का हवाला देते हुए माफी माग लूँ। किन्तु उसके गिरगिट से बदलते स्वरूप से घबराकर मैनें पालक के डठलों को तोडना आरम्भ कर दिया।

तुमने उसे पालक तोडने के लिए मना नही किया यह तो समझदारी का काम किया। किन्तु डॉक्टर को दिखलाने के लिए तुम अपने पुत्र से तो अनुरोध

कर सकती थी ?

'अरे। मेरा पुत्र उसी घर में रहकर भी मुझसे मीलों दूर बैठा लगता था। मैं उसे कब कैसे अपनी कमजोरी के बारे में बतलाती। रही बात डॉक्टर के पास जाने की तो मेरी बहू से अच्छी कोई और डॉक्टरनी कैसे हो सकती थी ?

'तुम्हारी बहू डॉक्टर थी। मैंने आश्चर्य से पूछा।

'हा मेरी तो वह डॉक्टर थी_1

क्या मतलब ? मैंनें हसते हुए पूछाँ।

क्योंकि उसने घर में बनाये जाने वाले पकौडी, कचौरी समोसा हलवा बर्फी जैस सुस्वादु व्यजनों को मरी थाली से हटवा दिय थे।'

लेकिन क्यों ? मैने हैरानगी से पूछा।

क्योंकि मैं कृशकाय थी ना ?

तो ?

तो मरी पाचन शक्ति ऐसे गरिष्ठ व्यजनों का पचा सकने में असमर्थ थी

लकिन बिना डॉक्टर से सलाह किये उन लोगों ने यह निर्णय ले लिया

हाँ ?

लेकिन तुम्हारा स्वास्थ्य इतना कैसे गिर गया मेरा मतलब_?

तुम्हारा मतलब तुम जानो मैं तो एक बात जानती हूँ कि यदि किसी स्वस्थ व्यक्ति के भोजन में भी कटौती कर दी जायेगी तो दिनों दिन वह क्षीण होता जायेगा। फिर मैं तो एक दुखियारी औरत थी, जिसे आत्मीयता और अपनत्व की आवश्यकता थी। लेकिन मेरी बहुए इस तथ्य से आखे मुदे रही। वे चाहती थी कि मैं उनकी गृहस्थी में हाथ बटाऊ। लेकिन अच्छे पौष्टिक भोजन के अभाव में क्षीण होती मेरी काया उन्हें कोई मदद नही दे सकी। जिसके कारण वे लोग मेरे प्रति कटु से कटुता होती चली गई। छोटी बहू ने मेरे स्वस्थ शरीर को अस्वस्थ बना कर अवश्य मेरी मृत्यु की कामना की होगी लेकिन मेरा दुर्भाग्य देखो हर प्रकार का कष्ट, अपमान यत्रणा सहकर भी मैं जिवितावस्था में उसके घर को छोड आई।

मझली बहू तो तुमसे पालक मैथी जैसा_?

यह तो उसका काम करवाने का अदाज था। कहकर उसने मुझे बोलने से रोक दिया। कुछ क्षण तक वह चुपचाप रही लगा वह कुछ सोच रही है। फिर दुखी मन स कहने लगी तुम एक सशक्त लखनी क धनी हो इसीलिए तुमसे कह रही हूँ कि तुम एक क्षुधातुर और बुभुक्षित हृदय का पीडा का इतन सटीक शब्दों में प्रस्तुत करना जिसे पढकर कोई भी पुत्र अपनी विधवा जन्मदायिनी के साथ इतना अमानवीय क्रूर और दानवीय वर्ताव करने के लिए विचारे भी नहीं। वह अपने बच्चों के पालन पोषण में इतना व्यस्त नही हा जाये कि उसे अपने ही घर में कीडे मकौडों सा जीवन जीने वाली माँ का क्षण भर के लिए भी ध्यान नहीं आये वह अपनी पत्नी में इतना लिप्त नही हो जाये कि उसी के घर में दासी का सा जीवन जीने वाली औरत उसकी माँ है वह यह भी भूल जाये। इतना सब कह कर वह चुप हो गई।

मैं चाहकर भी उसे सान्तवना नही दे सका।

लेखक। तुम मझली के कार्यों की चर्चा करके कुछ पूछ रहे थे।

ओह। हा। कह कर मैं चौंका।

मेरे चौंकने को अनदेखा करके उसने आगे की कथा को पकडा

मैं उसे पालक मैथी के साथ साथ अन्य सब्जिया सुधार कर देने लगी। लेकिन उसे इतने से सतोष नहीं हुआ। सतोष होता भी कैसे ? क्योंकि उसके माता पिता ने उसे सतोष शब्द का अर्थ ही नही बतलाया था। अत सतोष के अभाव में तनावग्रस्त बहू ने अपने पति को मेरे कमरे में भेजा। वह कमरे के बाहर दरवाजे में से झाकता हुआ बोला

माँ। तुम थोडा थोडा काम किया करो। इससे तुम्हारा मन भी बहल आयेगा और तुम्हारी बहू को थोडा आराम भी मिल जायेगा। न हो तो कभी चाय बना ली कभी खाना बना लिया...?

ठीक है। मैंने उतावलेपन में हामी भर दी। यह सुनकर वह चला गया। उसी दिन साझ को मैं चाय बनाने के लिए रसोई में गई। मुडी और टेढी अगुली से चाय बनाना मुझे बहुत तकलीफ दे रहा था। किन्तु बेटे का हुकुम था क्या करती। अभी गैस चालू भी नही की थी कि मेरी बहू रसोई में आ गई। मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा

आप अपने लिए चाय बना लीजिये_।

तुम देर से पीओगी ? मैंनें पूछा।

मैं बच्चों के लिए और अपने लिए स्वय चाय बना लूगी। इतना कहकर वह रसोई से बाहर चली गई।

'तुम्हारी यह बात अविश्वसनीय लगती है_।'

'लेखक। तुम ठीक कहते हो। किसी को भी यह बात बताई जाये तो वह विश्वास नही करेगा लेकिन इसमें एक कण के अश जितना भी असत्य नही है। चाय के अतिरिक्त उसने मेरी दो रोटियो का आटा भी छोडना शुरू कर दिया_?

'इसका अर्थ तुम्हारी बहू। मानसिक दृष्टि से अस्वस्थ थी क्योंकि कोई भी स्वस्थ विचार रखने वाला व्यक्ति ऐसा ओछा बर्ताव नही करेगा_।

मुझे अनसुना करते हुए वह आगे बताने लगी आरम्भिक दिनों में तो मैं अपने लिए रूखी जली कडी रोटिया बडी मुश्किल से बना लेती थी, लेकिन बाद में मैने अपने लिए रोटिया सैकना ही बद कर दिया

क्यों। ऐसी मूर्खता क्यों की ?

क्योंकि मैं मूर्ख थी तभी तो बहु रसोई में मेरे लिए एक कटोरी दाल या आधी कटोरी सब्जी छोडकर शेष सभी व्यजनों को खाने की टेबल पर रख देती थी_।'

लेकिन तुमने खाना क्यों बनाना छोड दिया ' मैनें खीझ भरे स्वर में पूछा।

क्योंकि एक कटोरी दाल दो अधपकी जली,कडी रोटियों को नर्म बनाने के लिए पर्याप्त नहीं थी और कडी रोटिया मेरे दातो से चबाई नहीं जाती थी। इसके अतिरिक्त मेरे मन में यह भाव भी जाग गया था कि किसके लिए जीना। बस इसी विरक्त भाव ने मुझे भूखा रहना सिखला दिया।'

तुम स्वस्थ नही थी तो क्या तुम्हारा स्वास्थ्य भूख रहने से और कमजोर नहीं हुआ ?'

हुआ ना स्वास्थय बहुत कमजोर हो गया। यहाँ तक कि उस दमघोटू कमरे से मैनें बाहर निकलना भी बंद कर दिया। मुझे कमरे के भीतर रहते रहते दस दिन बीत गये। एक दिन मेरे पुत्र ने पूछा 'तुम्हारे पास कुछ रुपये है ?

मैने कहा हां है।

दो सौ रुपये देना।

उसे रुपये देने के लिए मैं अपने बिस्तर से उठी लेकिन चक्कर आ जाने के कारण पुन खाट पर बैठ गई। पुत्र ने मेरी यह दशा देखी तो अपनी पत्नी को आवाज लगाई। पत्नी के आने पर उस मेरे लिए एक कप गर्म दूध लाने के लिए कहा। अपने बेटे को डॉक्टर लाने के लिए भेजकर वह मेरे पास बैठा। लेकिन दूसरे ही क्षण वह कमरे से बाहर चला गया। शायद उस उमस भरे कमरे में वह बैठ नही पाया। थोडी देर बाद मेरा पोता कमरे में आया और मेरा हाथ पकड कर ड्राइगरूम में ले गया। वहाँ मैं सोफे पर लेट गई। पाच मिनिट भी नही बीते होगे की मेरा बडा पोता डॉक्टर को ले आया। डॉक्टर ने मेरी जाच की। सब कुछ नार्मल था। उसने मेरी खुराक के लिए पूछा। लेकिन सभी को चुप देखकर उसने एक पर्चे पर मेरी आवश्यक खुराक लिख दी।

यह ठीक रहा। क्योंकि अब तुम्हारी थाली तरह तरह की सब्जियों दाल कढी के अतिरिक्त फल रस जैसे पौष्टिक पदार्थों से भी भर गई होगी। क्यों ठीक कह रहा हूँ ना ? मैनें हसते हुए उसे छेडा।

तुम ऐसी चुहल कर सकते हो क्योंकि तुम एक पुरुष हो मेरे ही पुत्रों की भाति निमर्म और निष्ठुर। उसने धीरे से कहा।

सखि। तुम्हारे हृदयाकाश में उमडते घुमडते बादलों की गर्जना को मैं अपने हृदय में अनुभव कर रहा हूँ। किन्तु अपने पुत्रों की निष्ठुरता की तुलना मेरे सवेदनशील हृदय से मत करो। अन्यथा हमारे बीच व्याप्त यह भावनात्मक सम्बन्ध...?

नही लेखक ऐसा मत कहो। मेरे पुत्रों के साथ तुम्हारा कोई तालमेल बैठ ही नही सकता। मैं यह अच्छी तरह जानती हूँ भली भाति जानती हूँ कि यदि तुम्हारा धैर्य और अपनत्व मेरे सम्बल नही बने होते तो मैं यों निडर होकर निर्भयतापूर्वक तुम्हें अपनी कहानी नही सुना पाती। अपने उखडे मन को वश में करते हुए उसने कहा।

अच्छा नाराजगी की बार्ता को छोडों। तुम अपनी आगे की कथा सुनाओं। मैनें पहल की।

न गया किन्तु इस बदलाव के पीछे कहीं भी अपनत्व
अपितु लोग क्या कहेंगे की चिन्ता अधिक थी। खैर।
स्वास्थ्य सुधरने लगा। अब मैं पुन कमरे से बाहर
थी।

ने के लिए आगन में आई तो मैंने देखा बर्तन माजने
र लम्बे अधकटे नाखूनों से मौसम्मी का रस निकाल
अपने कमरे में जाकर बैठ गई। न जाने क्यों मेरा मन
ी देर बाद बहू मेरे लिए मौसम्मी का रस लेकर आई
ी जूठन इस गिलास के चारों ओर लगी हुई है। मैं
ी अपने को गिलास पकडने के लिए तैयार नही कर
ी स्थिति म पडे दखकर उसन पूछा
ाप रस क्यों नही ले रही है।

पीती है फिर आज आपके जी को क्या हो गया ?
ी थी कि रस तुम निकालती हो इसी लिए पा लेती
स निकालते देखकर मेरी रस पीने की इच्छा ही मर
ूनों को मै भूल नही पा रही हूँ ? हा यदि तुम रस

रे पास यों ही कौनसे कम काम है कि मैं इस एक
मुझे झिडका। एक दो क्षण चुप रहकर वह पुन
ने के बाद से अब तक मेरा चार किलो वजन कम
ा अपने स्वास्थ्य की चिन्ता है। आपके खाने पीने
हा है यह भी जानती है आप ? बस आप तो
रहती है। चाहे साथ में रहने वाले मरे या जिये।
मेरे पास छोडकर चली गई।
बखेडा किया होगा ?
भाति रोज रोज बकझक नहा करती थी न अट
१८ से शात दिखलाई पडने वाली बहू भीतर ही

मरा भोजन तो ब
ओर आत्मीयता नहा था।
इस पौष्टिक भोजन म मर
आगन म बैठने लग गई

एक दिन मे धूप मे
वाली महरा अपनी मैल भ
रही थी। मैं यह देख कर
वितृष्णा से भर गया। थो
ना मुझ लगा जैस बर्तनो व
बहुत कोशिश के बावजूद
पाइ। मुझे या असमजस
क्या हुआ माजी।
मरा जी नहा कर रह
लेकिन रान ना आप
अब तक ना मैं सोच
था। किन्तु आज महरा का ग
गई। उसके मैले कुचैले ना
निकाल दो_?
मैं रस निकाल दू ?
काम को और बढा दू। उस
बोलने लगी आपके यहाँ अ
हो गया है। आपका तो केव
पर हमारा कितना खर्चा हो
निर्लिप्त भाव से स्वयं म खो
इतना कहकर वह गिलास ब

भीतर मेरे विरुद्ध षडयत्र तैयार करने में बहुत होशियार थी। इस घटना को घटे पन्द्रह दिन बीत गये थे। अब मेरी बहू ने रग दिखाने शुरू कर दिये अधपकी कच्ची सब्जिया कभी फीकी तो कभी बहुत नमकीन परोसी जाने लगी। मौसम्मी का रस दिनों दिन खट्टा होने लगा। रोटी का कडापन बढ गया। मैंनें एक दो बार बहू से कहा लेकिन उसने मेरी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया। मैं भी जब तक और जितना खा सकी खाया फिर उन्हें झूठा छोडने लगी।

एक दिन मेरे बेटे ने अपने कमरे में से जोर से मुझे आवाज लगाई मैं उठकर उन लोगों के पास गई तो बहू मेरे बेटे के समक्ष मेरी थाली रखते हुए बोली 'लीजिये देख लीजिये अपनी माँ की थाली को। इतने महगे फलों को किस बेदर्दी से झूठा छोडा गया है। देखिये सब्जिया देखिये किस तरह झूठी पडी हुई हैं ?

क्यों माँ। फल और सब्जिया क्यों नही खाती हो ? यदि खाना नहीं खाओगी तो फिर से कमजोर हो जाओंगी ?'

कच्चे फल और अधपकी सब्जिया कैसे खाऊ ? बेस्वाद खाना मेरे गले के नीचे नही उतरता। वरना किसे भूखे रहना पसन्द है ? हिम्मत करके मैनें कह दिया।

तुम देख लिया करो कि माँ का खाना बेस्वाद क्यों होता है। कही एसा नहीं हो कि मा पुन_?

बेटा अपना वाक्य पूरा भी नही कर पाया कि बहू चिल्लाने लगी इन्हें तो दुनिया भर की सुविधाए चाहिए कभी कहती है चारपाई चुभती है कभी कहती है खाना रुचि का नही है। अरे लानत है आपकी माँ पर विधवा की भाति जिये। फिर मुझे सम्बोधन करके बोली यहाँ पर रहना है तो ढग से रहें ये सधवा स्त्रियों जैसे नखरे यहाँ नही चलेगे_और आगे के शब्द सुने बिना ही मै अपने कमरे में चली गई।

तुम्हारा पुत्र ? उसने अपनी पत्नी को इतनी ओछी बात कहने के लिए डाटा नही ?

मेरे पुत्र पौरुषहीन थे तभी तो उनकी स्त्रिया उन्ही के सामने मुझे राड विधवा जैसे शब्दों से सबोधित कर सकी थी।

'तुम इतना दुख दर्द मान अपमान पीडा व्यथा सहते हुए उसी घर में क्यों पडी रही ? अब तक तुम्हारा शरीर भी स्वस्थ हो गया था फिर तुम अपने पति के घर में क्यों नहीं चली गई ?

'यदि मै अपने बेटे का घर अपनी मर्जी से छोडकर अपने घर चली जाती तो मेरी मझली बहू अपनी देवरानी और जिठानी के सामने हाथों को नचाते हुए यह कहने से नही चूकती कि हम तो माजी को अपने पास रख रहे थे लेकिन विधवा बन्धन में कैसे रहती। इसीलिए स्वच्छन्द जीवन जीने की कामना लिए अपने घर में चली गई अकेली मस्ती करती है। और लेखक। इन आक्षेपों से मैं अपनी आत्मा को और नहीं रुलाना चाहती थी। यों भी राड कुलटा वेश्या, कुलक्षणी जैसे बाणों स लहूलुहान मेरी आत्मा घायलावस्था में पडी करहा रही थी।

'लेकिन तुम्हारी मझली बहू ने मर्यादा के आवरण को उतार फैंका था मेरे ख्याल से वह युद्ध क्षेत्र में उतरने की पूरी तैयारी कर चुकी थी।

तुमने ठीक कहा। उस दिन की घटना के बाद से मेरी थाली में से बडे चमत्कारिक ढग से सब वस्तुए एक एक करके अदृश्य होती गई और अन्त में मेरी खुराक पुन वही दाल और दो रोटी में सिमट कर रह गई। शरीर धीरे धीरे क्षीण होता गया। एक रात मैं अपन कमरे से बाहर आई तो देखा आगन में अधेरा था। सोच में पड गई कि आगन का बल्ब किसने उतार लिया। आगन का अधेरा मुझे भयभीत कर रहा था। जी में आया कमरे में लौट जाऊ लेकिन लघुशका अलग मुश्किल बनी हुई थी।अत हिम्मत करके आगे बढी। बडी मुश्किल से टटोल कर दीवार को पकडा और उसी को अपना सम्बल बनाकर पर्वत की चढाई जैसे कष्टदायी रास्ते को पार करती हुई अपने गन्तव्य पर पहुँच गई। लौटते समय दीवार पकडने का अनुमान भलीभाति नहीं कर सकी। और वहीं गिर पडी । पैर के बल गिरने के कारण पैर मुड गया। बहुत कोशिश की लेकिन अपने पैर को सीधा नहीं कर सकी। भयकर दर्द महसूस करती हुई उस ठडी, ठिठुरती अधेरी रात में वहीं पडी रही। ठड से बचने के लिए जिस शोल को मैं अपने साथ लाई थी उसी को अपने चारों ओर लपेट लिया। धीरे धीरे रात ढलने लगी चारों ओर हल्का उजियारा फैलने लगा। दीवारों की धुधली

धुधली आकृति दृष्टि की पकड में आने लगी। अभी मेरी बहू उठ जायेगी तो ? और इस भय ने मुझ पर न जाने क्या जादू किया कि मैं बडी कठिनता से दर्द की मीत्कार दबाते हुए सरकते सरकते अपने कमरे में पहुँची। पोह फटने में अभी देर थी मैं अपने पलग पर पड कर अपने माधव का स्मरण करने लगी।

'यकीनन तुम्हारे जीवन का एक एक पृष्ठ अनकही और अनसुनी व्यथा से भरा हुआ है। लेकिन तुम किसकी प्रतीक्षा में जीवित रही ?

'यही तो लेखक मैं नहीं समझ पाई थी कि मैं क्यों माधव की मृत्यु के पश्चात दस वर्षो की लम्बी अवधि तक जीवित रही—इतना कहकर वह पहिले की भाति रुक गई। मुझे लगा शायद वह माधव के बारे में सोच रही होगी अत मैंनें भी उसे छेडा नही। थाडे समय के मौन के पश्चात उसने पुन कहानी के सूत्र को पकड लिया सुबह मेरे कमरे में बहू चाय देने के लिए आई तो मैनें उसे अपने गिर पडने की खबर दी। किन्तु वह मुहँ बिचकाती हुई बाहर चली गई। चाय का कप उठाने के लिए अपने पैर को खिसकाया तो मुहँ से आवाज निकल गई। जिसे सुनकर मेरा पुत्र जो बाहर बैठा चाय पी रहा था अचानक भीतर आ गया—

क्या हुआ माँ ?

'कुछ' नही। घुटने में दर्द है अपने आसुओं को मुश्किल से रोकते हुए मैनें उत्तर दिया।

कल रात तक तो ठीक थी फिर अभी...? उसने आश्चर्य व्यक्त किया।

कल रात बाथरूम जाते समय गिर गई थी...? मैनें उसे बताया।

लेकिन तुम देख कर क्यों नहीं चलती हो ? समझ में नहीं आता आगन में बत्ती जलाकर रखने पर भी तुम कैसे गिर गई ? पुत्र के शब्दों में क्रोध स्पष्ट दिखलाई पडने लगा था।

लेकिन कल रात तो आगन में चारों ओर अधेरा छाया हुआ था। पुत्र की नाराजगी ने और मेरे घुटने के असहनीय दर्द ने सच्ची बात उगलवा दी।

मेरे द्वारा आगन में अधेरे का रहस्योंद्घाटन करने पर उसे मेरे ऊपर दया आ गई। उसने क्रोध में अपनी पत्नी को आवाज लगाई।

क्या बात है ? उसने आते ही पूछा।

माँ रात में गिर पडी।

'माजी ने सुबह बताया था।

'लेकिन माँ आगन में अधेरा होने के कारण गिर पडी। पुत्र ने तल्खी से कहा।

'हा रात में बडे के कमरे का नाईट बल्ब खराब हो गया था। इसलिए यहाँ के बल्ब को वहाँ लगा दिया। आप तो जानते ही है कि बडा अधेरे में सो नही पाता है'?

और माँ अधेरे में चल सकेगी ? बहू को डाटते हुए बेटे ने पूछा। बिना मुझे बताये तुम लोगों ने यह काम क्यों किया। बल्ब उतारने से पूर्व मेरे मे पूछ लेते।

'क्या पूछना था ? बहू ने बेटे को डाटने के अदाज में पूछा। इतनी बडी हो गई है। लेकिन चलती बच्चों की भाति है। कोई पूछे तो अधेरे में इतनी भाग भाग कर क्यों चलती है। जब आगन में बत्ती नही थी तो सभल कर चलती। क्या आवश्यकता थी घुटने को तडवाने की ?

तुम्हें होश भी है कि तुम क्या कह रही हो और तुम्हारे कहने का क्या अर्थ निकलेगा। मेरा बेटा जोर से चिल्लाया। उसकी चिल्लाहट को सुनकर मेरे दोनों पोते भी मेरे कमरे के आगे आकर खडे हो गये। उन चारों को अपने कमरे के सामने खडे देखकर मैंने महसूस किया मानों मै मृतक हूँ और ये लोग मेरी अर्थी उठाने के लिए एकत्रित हुए है। न जाने क्यों इस कल्पना से मै भयभीत हो गई। हिम्मत करके मै अपने बेटे को कमरे से बाहर जाने के लिए कहने ही वाली थी कि बड पोते की आवाज सुनाई दी—

पापा। ये आपकी माँ है आप इन्हें यहाँ लेकर आये है तो आप स्वय क्यों नहीं इनकी देखभाल करते है। इनकी देखभाल का सारा जिम्मा मम्मी पर छोड कर आप कैसे निश्चिन्त हो गये है ?

'तुम चुप रहो। मैं तुम्हारी मम्मी से बात कर रहा हूँ। मेरे बेटे ने अपन बेटे को डाटा।

आप ! अपनी माँ के कारण मेरी मम्मी को डाट रहे है, और मै आपसे इसी लिए पूछ रहा हूँ कि आपने अपनी माँ की जिम्मेदारी मेरी मम्मी के कधों पर कैसे डाल दी है।'

क्यों व्यर्थ बात को बढा रहे हो ? जब तुम तथ्य की गहराई को ही नहीं जानते हो तो किस लिए हम दोनों के बीच में बोल रहे हो। आज मै तुम्हारी मम्मी से या तुम्हारी मम्मी मुझसे क्या कहती है इस विषय में प्रश्न करने का अधिकार तुम्हें किसने दिया है ?

मैं व्यर्थ में बात को नही बढा रहा हूँ अपितु आपके सामने सच्चाई रख रहा हूँ। आपकी माँ की सेवा करते करते मेरी मम्मी ने चार माह गवा दिये है और कौन जानता है कि ये कब तक यहाँ रहेगी ? ताऊजी और चाचाजी ने तीन तीन महीनों तक अपने अपने घरों में रख कर इनकी जिम्मेदारी से मुक्ति ले ली है। किन्तु न जाने क्यों आप ही श्रवण कुमार बनने को लालायित है। यह तो नही कि चार माह पूरे होने को आये तो इन्हें अन्य स्थान पर भेजने की व्यवस्था करें।

अपने पुत्र के मुहँ से अनर्गल प्रलाप सुनकर, क्रोध के दावानल में सुलगते मेरे पुत्र का हाथ अपने युवा पुत्र की ओर बढा लेकिन दूसरे ही क्षण पुत्र ने अपनी बुद्धि की लगाम से अपने हाथ को आगे बढने से रोक दिया। किन्तु उसके असभ्य अनाडी असस्कारी पुत्र ने खीच कर एक थप्पड अपने पिता के गाल पर मार दिया। मै इस घटना...?

क्या कहती हो। एक पुत्र ने अपने तमाम सस्कारों को पीछे धकेल कर अपने जन्मदाता की मर्यादा को ही नग्न कर दिया ?

हा। और मेरा पुत्र निशब्द आगन में पडी हुई कुर्सी पर बैठ गया।

तुम्हारी बहू ?

वह चुपचाप इस घृणित और अविश्वसनीय घटना को आँखे फाडे देखती रही। हा यदि मै बहू के स्थान पर होती तो अवश्य आगे बढकर अपने पुत्र के गाल पर इतने जोर से थप्पड मारती कि वह दो दिनों तक अपने मुहँ से पानी गटकने की स्थिति में नहीं होता। हमारे युग में ऐसी शर्मनाक घटनाए नहीं घटती थी क्योंकि हमारे व्यवहार की डोर हमारे सस्कारों की प्रत्यन्चा से कसी रहती

थी। लेखक। मै अपने पोते के उदण्ड और उच्छ्रृंखल व्यवहार से दुखी अपने पुत्र के टूटे हृदय को अपनी ममता के लेप से जोडना चाहती थी, किन्तु घुटने के असह्य दर्द ने चारपाई से उठने तक नहीं दिया और मै विवश सी अपनी ममता की पिटारी पकडे वही खटाले पर पडी रही।

'यही तो माँ की ममता है। अपने पुत्र के घर में दयनीय अवस्था में रहने वाली तुम पुत्र के दुख से दुखी हो रही थी। धन्य हो तुम और तुम्हारी ममता। मैंने चिढकर कहा।

'नहीं लेखक। मेरे पुत्रों ने मेरी ममता को कभी नहीं सराहा था। क्योंकि उन्होंने ममता के मापदड का जो खाका खींचा था उसके समक्ष मेरी ममता बहुत नीचे रह जाती थी। मैंने अपने पुत्रों पर अथाह स्नेह लुटाया था किन्तु उन लोगों ने जीवन के तुच्छ भौतिक सुख के समक्ष मेरी निष्कपट ममता को ठुकरा दिया था। मुझे लगता है लेखक मेरी ममता की छाव में दरारे रह गई होगी और उन दरारों में से अवश्य धूप की किरणें झाकी होगी। शायद वही तपन की अकुलाहट मेरे पुत्रों में भर गई थी जिसके कारण मै पराजित हो गई थी ।। लेखक में अपने पुत्रो के समक्ष पराजित_?'

नहीं सखि। यह पराजय तुम्हारी नही तुम्हारें पुत्रों के जीवन मूल्यों की है उनके सोच की है। इतना कहकर मैं उसकी ओर उन्मुख हुआ खडा आकृति शात थी। मैनें छेडने के उद्देश्य से पूछा— तुम्हारी चोट का उपचार हुआ या घुटना तुडवाकर तुम अपने पति के घर लौट गई ?

नहीं नहीं मेरे पुत्र में अब भी मानवता शेष थी। उसने डॉक्टर को बुलाकर मेरी पूरी जाच करवाई। मैनें कुछ गोलिया खाई और मालिश_?

'कौन वही नुकीले अधकटे गदे नाखूनों वाली महरी तुम्हारी मालिश करती थी। मैनें हसते हुए उसके कथन में रुकावट डाली।

नहीं नही इस बार यहाँ मौसम्मी के रस जैसी विवशता नही थी बल्कि मैं छोटी बहू द्वारा दी गई पीडा को झेलती अपनी मुडी तुडी अगुली से अपने घुटने पर स्वय मालिश करती थी। क्षीण हसी के बीच उसने कहा।

जहा तक मैं सोच सकता हूँ इस घटना के बाद तुम्हारे मझले बेटे के घर का वातावरण भी पूर्णतया बदल गया होगा_।

तुमने सही समझा। अब वहाँ मौत का सा सन्नाटा छा गया था। मैं सभी के द्वारा उपेक्षित अपने कमरे में पड़ी अपने दुर्भाग्य को कोसती थी। मेरा एकान्त और भी भयानक हो गया था। काम की बातों के सिवाय एक शब्द भी अधिक नहीं बोला जाता था। ऐसे सन्नाटे में पन्द्रह दिन व्यतीत हो गये तभी अचानक एक धमाका हुआ। मेरी जिठानी के पुत्र का पत्र आया_।'

तुम्हारी जिठानी का पुत्र ?

हां मेरी तीसरे नम्बर की जिठानी का_?

क्या यह वही पुत्र_?

हां हां वही। उसने शीघ्रता से कहा शायद वह माधव के इस निर्बल पक्ष को पुनः जीवित नहीं करना चाहती थी।

क्या चाहता था वह ? मैंने उत्सुकता से पूछा।

उसकी माँ अपने जीवन की अंतिम घड़िया गिन रही थी और वह मुझसे मिलना चाहती थी_?

उसने क्या कहा ? मेरी जिज्ञासा अपनी चरम सीमा पर थी।

वह कहती तो तब जब मैं वहाँ जाती_?

यह तुमने बहुत बुरा किया। जब मौत के मुँह में पड़े व्यक्ति ने तुम्हें समाचार भेज कर बुलाया था तो तुम्हें उससे अवश्य मिलना चाहिए था। कौन जाने वह क्या कुछ कहना चाहती हो।

लेकिन मैं किसके साथ जाती ?

क्यों तुम्हारा पुत्र ?

'अब वह मेरा पुत्र कहाँ रह गया था ? वह तो अपनी पत्नी का पति और अपने बच्चों का पिता था।

पहेलिया बुझाने के स्थान पर साफ साफ कहो। न चाहते हुए भी मेरे शब्दों में झुंझलाहट आ गई थी।

सीधी और सच्ची बात यह है कि उस पत्र के आने पर घर में आवाजों की गूंज बहुत ऊंची सुनाई दी बहुत कहा सुनी हुई_।

लेकिन क्यों ? तुम्हारी मरणासन्न जिठानी तो केवल तुमसे मिलना चाहती थी। फिर यह व्यर्थ का झगडा क्यों। वाद विवाद क्यों ?

क्योंकि मेरे बेटे बहू वहाँ दो बार नही जाना चाहते थे_?

'लकिन दो बार क्यों ?' मैनें आश्चर्य से पूछा।

'एक बार तो उससे मिलने के लिए जाना पडता और दूसरी बार उसकी मृत्यु के पश्चात्_?'

ओह। तुम्हारे सम्बन्धी कितने भाव शून्य निष्ठुर और कठोर थे। क्या वे लोग मानव और मुर्दे के बीच भेद करने में भी अक्षम थे? अरे। मरणासन्न व्यक्ति से मिल कर हम उसकी इच्छओं को भावनाओं को समझ सकते है उसके लिए कुछ कर सकते है, किन्तु मृत व्यक्ति के लिए तो चाह कर भी कुछ नही किया जा सकता_?

'किसने कहा कि कुछ नही किया जा सकता ? लोक दिखावे के लिए शोक व्यक्त करने का ढोंग तो किया जा सकता है। उसने बीच ही में अपनी बात कही।

वाह क्या विचार है। इतना कहकर मैं रुका फिर कहे बिना नही रह सका लेकिन जो व्यक्ति इस ससार में ही नही रहा है उसका शोक व्यक्त करने के लिए जाओं या नही , उसके लिये क्या फर्क पडता है। हा जब अपने जीवन काल में वह तुमसे मिलना चाहता था और तुम नहीं मिलो तो अवश्य फर्क पडता है।

तुम्हारा विचार मानवीयता से पूर्ण है किन्तु मै अपने बहू बेटे के समक्ष विवश थी। अत इच्छुक होने पर भी मैं उससे अतिम समय में नही मिल पाई थी। यह जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा कि पत्र की घटना के ठीक पन्द्रहवें दिन मैं अपने पुत्र के साथ मेरी जिठानी की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए पहुँच गई थी।

'ओह। कब तक हम लोग जीवित व्यक्ति को दुत्कारते रहेगे? और मृतक को पूजते रहेगे। लम्बे श्वास के साथ मैनें दुखी मन से कहा।

शायद ऐसा ही चलता रहेगा।' कहकर वह मौन हो गई। मैं भी चुपचाप

जिठानी की अनकही बात पर सोचता रहा। कुछ क्षणों की चुप्पी को ताडतें हुए उसने आगे कहना आरम्भ किया—

जिठानी के यहाँ से आने पर भी घर के वातावरण में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। हम अब साथ साथ रहते हुए भी एकाकीपन की जिन्दगी जी रहे थे। घर में एक गहरा तनाव छाया हुआ था। अचानक एसे तनावग्रस्त वातावरण में मेरी पोती का पत्र आया_?

तुम्हारे नाम ?

लेखक। परिहास अच्छा कर लेते हो। मेरे प्रश्न का उत्तर देते समय मुझे लगा जैस वह मुस्कुरा रहा है किन्तु अगल ही क्षण मुझ मरी गलती का आभास हुआ क्यों कि उस आकृति में ऐसा कोई भाव नहीं दिख पड रहा था। उसकी आवाज पुन सुनाई पडने लगी।

मेरी पोती का पत्र मेरी बहू के नाम था उसने लिखा था कि वह अगले माह प्रसव के लिए अपनी मम्मी के पास आयेगी_।

तुम्हारी बहू तो इस सूचना से खूब प्रसन्न हुई होगी ?

नहीं। इस प्रसव प्रसग को उसने सुखद समाचार के रूप में नही लिया अपितु मेरे पुत्र के सामने जोर जोर से चिल्लाने लगी कि अगले माह मेरी बेटी प्रसव के लिए आयेगी। इसलिए इस बीच तुम अपनी माँ को जेठजी के घर या देवर के घर छोड कर जाओ।

अरे। लडकी प्रसव के लिए आ रही थी तो माँ का घर से क्यों निकालना चाहिए। यह तो ठीक था कि तुम्हारे तीन पुत्र थे। लेकिन कोई विधवा वृद्धा अपने इकलौते पुत्र के पास उसक परिवार के साथ रहती है तो क्या पुत्री के प्रसव के लिए वह अपनी माँ को अपने घर से निकाल देगा ? अरे। समझौतों के आधार पर एक ही घर में सब मिल जुल कर रहते है एकजुट होकर समस्याओं को सुलझाते हैं।

तुम कुछ भी कहो लेखक मैंनें अपनी बहू के समक्ष खूब हाथ पाव जोडे मिन्नते की अपनी असहाय अवस्था का हवाला दिया अपने अकेलेपन से उत्पन्न ऊब का जिक्र किया। लेकिन सब व्यर्थ वह मुझे अपने घर में रखने के लिए तैयार नहीं थी। और मेरे पुत्र के समक्ष समस्या यह थी कि वह मुझे अपने किस

भाई के घर पर लेकर आये।

क्या तुम्हारा बेटा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न नही था ?

'नहीं नही मेरा पुत्र आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न था_?

फिर तुम्हारी बहू को क्या परेशानी थी ?

'मुझे उसके पास आये हुए चार माह हो गये थे और मेरे दोनों बेटों में से कोई भी मुझे ले जाने के लिए नही आया था। वह मुझे भेजना चाहती थी लेकिन भेज नहीं पाई थी। किन्तु अब पुत्री के प्रसव प्रसग का वह व्यर्थ नही गवाना चाहती थी। इस लिए वह मुझे वहाँ से भेजने की जिद करती रही।

उसके मुहँ से ये सब बचकानी बातें सुनकर हसी आ गई। किसी भाति अपनी हसी को गभीरता में लपेटते हुए मैन कहा तुम्हारे बेटे बहुओं की सकीर्णता और स्वार्थीपन ने तुम्हें माँ के स्थान से उठाकर एक समस्या का रूप दे दिया।

'तुम ठीक कहते हो लेखक। मैं अपने बेटों के लिए एक ऐसी समस्या बन गई थी जिसका समाधान किसी भी पुत्र के पास नही था। ऐसी अनसुलझी समस्या के रूप में इस बार मैं अपने पति के घर पहुँचा दी गई। इतना कहकर वह चुप हो गई।

'उसकी कहानी सुनकर मेरी स्मृति में कभी पढी गई बिच्छू जन्म कथा घूम गई। अन्य जानवरों की पैदाइश से भिन्न बिच्छू बच्चे अपनी जननी के पेट का भीतरी भाग खा जाते हैं और उस फटे हुए पेट के मार्ग से ही वे बाध्य दुनिया में आते है।यद्यपि इस माँ की कहानी भी मादा बिच्छू की कहानी से बहुत साम्यता रखने पर भी थोडी अलग ढग की दिखलाई देती है। बिच्छू ने अपनी माँ की हत्या करके उसे नारकीय जीवन झेलने की विवशता में नहीं बाधा। लेकिन इसके बेटे बहुओं ने तो इसके स्वाभिमान की हत्या करके, इसे मात्र एक मानस खोल में परिवर्तित करके, नर्क तुल्य जीवन जीने की विवशता में बाध दिया। बिच्छू, अपने जहरीले डक के कारण देखते ही मार दिया जाता है तो क्या ये वाणी से जहरीले बेटे बहू अपने शब्दों का अर्थ नियति की मार से समझ पायेंगे ? तीनों नें मिलकर कैसा जघन्य अपराध किया है इसकी अनुभूति कभी ये लोग कर पायेंगे ? केवल पत्नियों के कहने पर माँ के वैधव्य दुख को अनदेखा और अनसुना कर गये।'

क्या बात है लेखक । लगता है मेरी कथा सुनते सुनते तुम किसी बीहड बियाबान जगल में पहुँच गये हो और तुम्हारी मुख मुद्रा से तो यह भी जान पड रहा है कि तुम रास्ता भी भूल गये हो । वरना हर क्षण चिहुकने वाला हास परिहास करने वाला लेखक यों गुमसुम न हो जाता । उसने मुझे मेरे विचारों के सागर में लम्बे समय तक तैरने नही दिया ।

दरअसल मैं तुम्हारे बहू बेटों के बारे में सोच रहा था बस इसी लिए थोडी देर के लिए चुप हो गया था ।

क्या सोचा ?

लगता है जैस तुम्हारे बेट तुम्हारी बहुओं के गिरवी रखे हुए थे और तुम अपनी बहुओं के स्वार्थों की कसौटी पर खरी नही उतरी फलत तुम निर्जीव वस्तु की भाति इस ठोर से उस ठौर ठुकराती गई । अन्त में उनके हानि लाभ नफा नुकसान के जुए में हार जाने के कारण तुम अपने पति के घर में बेजान वस्तु की भाति पटक दी गई हो ।

हा उस दिन ऐसा ही कुछ हुआ था बहुत मिन्नत करने पर भी मेरी बहू मुझे अपने घर में रखने के लिए राजी नही हुई थी और मैं अश्रुपूर्ण नत्रों से अपन बेटे के साथ अपने पति के घर की ओर चल पडी थी । घर पहुँचने पर चौकीदार सामने दिखलाई पडा । पति की मृत्यु के पश्चात् घर की सार सभाल उसके जिम्मे करके हम लोग चले गये थे । आज करीब दस माह बाद मुझे अचानक आया देखकर वह अपनी रुलाई को रोक नही पाया । अपने अश्रुओं के बीच उसने कहा—

माजी । मालिक के जाने के बाद आप भी चली गई थी । यहाँ पूर्णतया विरानी छा गई थी । आज आपको अपने सामने देखकर ऐसा महसूस कर रहा हूँ मानों मेरी माँ ही पुन लौट आई हो ।

उसकी भावनाओं का मैं उत्तर दे पाती उसक पूर्व ही मेरे पुत्र ने उसे आदेशात्मक शब्दों में कहा जाओ घर के सभी दरवाजे और खिडकिया खाल दो ।

वह निरीह प्राणी सिर झुकायें २ अपने तौलिये स आँसू पोंछता हुआ घर के भातर चला गया । मैं अपने पुत्र के साथ बाहर बरामदे में रखी कुर्सियों पर

बैठ गई। हम दोनों मौन निशब्द अपनी अपनी चिन्ताओं में खोये हुए थे।

मैं अपनी क्षीण काया के कारण चिन्तित थी। सोच रही थी कैसे अपने खाने पीने की व्यवस्था करूगी ? तभी मैंने पुत्र को कहते सुना

'तुम शाम को खाना बनाने की कोशिश तो करना ।

नही नही यह बहुत मुश्किल है।' मैंने अपनी असमर्थता गर्दन हिलाते हुए जताई।

'दो रोटिया तो बना सकती हो ? कुछ झुझलाते हुए पुत्र ने कहा।'

मैंने कोई उत्तर नही दिया। कुछ देर के बाद उसने अत्यन्त नम्र शब्दों में पूछा 'लेकिन तुम इतनी कमजोर कैसे हो गई ?

मैंने क्षीण हसी के साथ उसकी ओर गहरी दृष्टि से देखा ।

तुमने कुछ कहा क्यों नही ?

क्या कहती ?'

क्यों ? तुम्हें अपनी बहुओं के ओछे बर्ताव के बारे में नही बताना चाहिए था ?'

'अब जब मैं अपन पति के घर में पुत्रों द्वारा पहुचा दी गई थी तो फिर उसे क्या उलाहना देती।

वाह। तुम्हार विचार भी तुम्हारें पुत्रों से काफी मिलते—।

लेखक। मेरी तुलना मेरे पुत्रों के साथ करके मुझे अपमानित मत करो। हालाकि मैं जानती हूँ कि तुम्हें मेरा चुप रहना अच्छा नहा लगा। लेकिन तुम्ही बतलाओ जो पुत्र चार माह से अपने घर में अपनी माँ की काया को क्षीण होते देखकर भी चुप ही बना रहा था, वही पुत्र आज उसे उसक पति के घर में अकेले छोडकर जाने से पूर्व उसके अस्वस्थ शरीर के बारे में चिन्ता व्यक्त करता है तो क्या यह चिन्ता निर्मूल है ? उसके सामने अपने मन क दद को खोलना क्या उचित होता। लेखक नाराज होने से पूर्व उसके हृदय की सोचो जो नौकरो के सहारे अकेले रहने वाली थी। एक क्षण रुक कर उसने आगे कहा मेरा पुत्र पन्द्रह दिन के राशन पानी की व्यवस्था करके मुझे चौकीदार के हाथों सौंप कर अपने बीवी बच्चों के पास चला गया था।'

'ओह जरा व्याधि से आक्रान्त निर्बल असहाय, विधवा मा को पुत्र यों एकान्त में फैंक कर चला गया छोड कर चला गया।'

हा लेखक। हा ओर यही एकान्त मेरे लिए ऐसी घोर नारकीय त्रासदी बन गया था जिसका निवारण मरे वशवर्द्धकों के पास नहीं था। मेरा कारुणिक प्रलाप कौंच पक्षी सा क्रन्दन किसी भी पुत्र के सुप्त हृदय के सवेदना और सहानुभूति के तारों को जगाने में असमर्थ रहा था। मेरी इस एकान्त यात्रा का पथिक बनने का दुस्साहस मेरा कोई भी पुत्र नही कर पाया था_?

ऐसें पुत्रों को मूर्तिमान कलियुग के अतिरिक्त किस नाम से पुकार जा सकता है।

'मेरे पुत्र के चले जाने के बाद मैं अपने करमें में गई। कमरे की एक-एक वस्तु अपने स्थान पर थी। यह देखकर अपने भाग्य पर रो पडी कि मुझसे अच्छी तो ये बेजान वस्तुएँ ही रही जो मेरे पति का स्पर्श थामें जहा की तहा रही जबकि मैं तो पति के आखे मूदते ही इस स्थान से हटा दी गई थी। यो सोचते सोचते मैं अपने पलग पर बैठी और बैठते ही झटके से उठ खडी हुई। यह मुलायम स्पर्श ता पुत्रों के घरों में जेवडियों की चारपाई पर मुडी तुडी दरी पर सोते सोतें मेरी स्मृति से भी बाहर हो गया था। मैं पास में रखी कुर्सी पर बैठ गई।

माजी । दरवाजे के पास से चौकीदार ने आवाज लगाई।

मैनें दरवाजा अन्दर से बन्द कर दिया है और मैं अपनी कोठरी में आराम करने के लिए जा रहा हूँ।

ठीक है। मैनें धीमी आवाज में कहा।

लेकिन आप अकेली बैठें बैठे तो तग हो जायेगी। यों भी माजी कब तक अकेली बैठी रहेंगी। आप भी थकी होंगी आराम कर लीजिये।

तुम जाओ। मैंने उसे टालने के उद्धेश्य से कहा।

माजी। उसने धीरे से आवाज लगाई। मैनें उसकी ओर देखा तो वह कहने लगा आज खाना अच्छा नही बना था। शाम को और अच्छा बनानें की कोशिश करूगा। दरअसल मुझे आप लोगों का खाना बनाना नहीं आता। अपनी बात पूरी करते वह अपराध भाव से भर गया। उसे इस तरह सकुचित होते देखकर

मैं ग्लानि से भर गई। यह चौकीदार जो इस घर का नौकर है वह मेरे बिना कुछ कहे अपनी गलती को स्वीकार रहा है और एक मेरी पुत्र वधुए थी जिन्होनें मेरी भोजन की थाली में सदैव अपमान और घृणा परासी। वहाँ ढूढन पर भी कभी प्रेम और अपनत्व का भाव नहीं मिला। इतना सब सोचन पर मेरा हृदय दुख से भर गया और मेरे नेत्रों से पानी बहने लगा। यह देखकर चौकीदार चौंक गया। कुछ देर बाद उसने जमीन की ओर दखते हुए कहना शुरू किया– माजी। रोने से काम नही चलेगा। जिन्हें जाना था वे ता छोड कर चले गये। आपका शरीर कितना कमजोर हो गया है। लगता है आपका कही जी भी नही लगा है। अब यदि रो रोकर दिन बितायेंगी तो आपकी तबियत और भी गडबडा जाएगी। इतना कह कर कुछ देर तो वह यहाँ खडा रहा फिर चुपचाप चला गया।

उसके चल जाने क बाद मैनें अपन कमर का भीतर स बन्द किया और हिम्मत करके अपने पलग पर बैठ गई। अपने चिर परिचित स्थान पर लेटते ही माधव की स्मृति ने मुझे विछल कर दिया। मैं दहाडे मार मार कर रोने लगी। नौ दस माह से मेरा दुख मेरी बहुओं के भय से भीतर ही भीतर धुटता रहा था वह अब बिना किसी डर के आसुओं के रूप में बाहर निकलने लगा। मेरी अन्तरात्मा का नीरव क्रन्दन मेरे व्यथित हृदय की मौम करुणा हाहाकार करती मेरे आसुओं स वह रही थी। लेकिन कौन मेरी वेदना हरण करता? क्योंकि मेरी पीडा में मेरी ग्रीवा के नीचे अपनी बाह रखने वाला मेरा सहचर तो कभी भी न लौटने के लिए मुझसे दूर बहुत दूर चला गया था और मैं पूरे जोर से रोने लगी। न जाने रोते रोते कब मेरी आख लग गई।

दरअसल नौ दस माह की मानसिक यत्रणा से मुक्त तुम अपने माधव के घर अपने चिर परिचित बिछौने पर निश्चितता मे सो सकी थी।

और लेखक ! तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि जब मैं जाग तब दूसरे दिन सुबह के आठ बज रहे थे_?

और चौकीदार ?

वह घबराया हुआ दरवाजे के बाहर बैठा मेरी कमरे से बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहा था। वह भयभीत था यह सोचकर कि कही रात ही में मेरा राम नाम सत्य नही हो गया हों। किन्तु जन्मकुण्डली में ऐसा भाग्य नक्षत्र कहाँ था ?

सचमुच चार धामों की यात्रा करने में व्यक्ति जितना कष्ट नहीं उठाता है उससे कहीं अधिक कष्ट तुमने अपने तीनों पुत्रों के घरों की यात्रा में उठाया था।

तुम ठीक कहते हो। इतना कह कर वह चुप हो गई। मैंने कुछ देर तक उसे चुप रहने दिया। थोडी देर के बाद उसने कहना शुरू किया मेरे को आये हुए एक सप्ताह हो गया था। मेरा शरीर इतना क्लान्त और थका हुआ था कि अच्छा होने पर भी मैंने घर की किसी चीज को छूकर खोलकर नहीं देखा बस पूरे दिन मैं अपने कमरे में बैठे बैठे अपने पति के कपडों को, उनकी अन्य चीजों को तृषित नेत्रों से देखती रहती थी। जब देखते देखते आंखे थक जाती थी तो उन्हें छूकर स्पर्श कर रो पडती थी। मेरे खाने की व्यवस्था का भार चौकीदार पर था। यद्यपि उसका भोजन बेस्वाद होता था तो भी वह मुझे छप्पन भोगों से अधिक सुस्वादिष्ट लगता था। क्योंकि उसमें चौकीदार की घृणा नहीं होती था। कमरे में सांझ का हल्का कालापन छाने लगा था। मैं उठकर बाहर बरामदे में आकर बैठ गई। मैं अकेली बैठी बैठी घर की व्यवस्था के बारे में सोच रही थी। चौकीदार कब तक दो दो जिम्मेदारियां निभाता रहेगा। लेकिन चारों ओर दृष्टि दौडाने पर सिवाय अंधकार और निराशा के कुछ हाथ नहीं लगता था। मैं अपने डरावने एकाकी भविष्य के बारे में चिन्तित थी। तभी मैंने सुना माजी। आपसे मिलने कोई औरत आई है चौकीदार की आवाज ने मेरे व्यथित हृदय को चौंकाया। कौन औरत होगी। के प्रश्न के साथ मैंने चौकीदार की ओर देखा। चौकीदार मेरे मन के भाव को जानकर कहने लगा आप उसे भली भांती जानती हैं। अभी उसका नाम मेरे ध्यान में नही है। उसका एक लडका जिसे मालिक ने ही नौकरी दिलवाई थी वह वही नौकरी करता है। चौकीदार ने बात समाप्त करके मेरी ओर देखा किन्तु मेरे चेहरे पर किसी जानकारी के भाव को न देख उसे मैं यहीं लाता हूँ। कहता हुआ मेरी आज्ञा की प्रतीक्षा किये बिना उसे लिवाने चला गया। मैं तब भी अपने असुरक्षित भविष्य की चिन्ता में लीन थी। अचानक माजी सम्बोधन सुनकर मैंने चौकीदार की ओर देखा। वह कुछ बतलाता उसके पूर्व ही उसके साथ खडी औरत ने पूछा—"मुझे पहिचाना माजी ?"

लेकिन मेरे चेहरे पर उसे पहिचानने जैसा भाव दिखलाई नही पडा तो उसने अपना पूरा परिचय दिया मुझे नही पहिचाना। मैं शान्ति हूँ माजी। और कथन के साथ आगे बढकर मेरे पैरों में झुक गई। उसे पहचानकर मैंने आगे बढकर

उस अपने गले से लगा लिया। वह फूट फूट कर रो पडी और उसी के साथ साथ मेरी रुलाई भी चौकीदार की उपस्थिति को नकारती हुई बडे वेग से बह निकली। हम दोनों बहुत देर तक रोती रही और जब अश्रुप्रवाह कम हुआ तो हम दोनों अपनी अपनी साडियों के पल्लू से आखें पौछने लगी।

वह स्त्री कौन थी ? मैंनें इस नये चरित्र में रुचि दिखलाई।

यह एक विधवा स्त्री थी। इसका नाम शान्ति था। विधवा होने के बाद इसे अपने सबन्धियों से बहुत दुःख मिला था। किसी के कहने पर यह मेरे पास काम करने के लिए आई थी। मैंनें इसे न केवल आश्रय ही दिया अपितु पर्याप्त आर्थिक सहायता भी दी थी। इसका पुत्र भागीरथ मेरे पति के आश्रय में ही पढ लिख गया था। मेरे पति ने किसी से कहकर उसकी नौकरी लगवा दी थी।

बस वह तभी से इसी नगर का होकर रह गया है। अपने गाँव भी नही जाता। यहाँ तक कि अपने गाव में अपनी जमीन बेचने पर जो रुपया मिला। उससे यही पर जमीन खरीद कर अपना मकान बना लिया।

क्या जमीन खरीदने व मकान बनवाने में तुम्हारे पति ने आर्थिक सहायता दी थी।

हा मेरे पति ने भागीरथ और उसकी माँ को हर सभव सहायता दी थी।

क्या शान्ति पुत्र की नौकरी लग जाने व मकान बन जाने पर भी तुम्हारे यहाँ चाकरी करने आती थी ?

हा आती थी क्योंकि शान्ति का जीवन मूल्य उन व्यक्तियों के जीवन मूल्य की भाति नहीं था जो काम पूरा हो जाने पर मुँह फेर लेते हैं। मुझे याद है जब यह भागीरथ की बहू को पहली बार मुझसे मिलाने लाई थी तो इसने कहा था और ये माजी है। इनके पावो को धो धो कर भी पियेगी तो भी अपन इनके अहसानों से मुक्त नहीं हो सकते। यदि माजी का सहारा नहीं मिला होता तो तुम्हारा आदमी आज जानवर की सी जिन्दगी जी रहा होता।

तुम्हें विधवा वेष में देखकर शान्ति बहुत दुखी हुई ? मैंनें कथा को आगे बढाना चाहा।

हा अपने आसुओं को पौछतें हुए उसने बताया कि मालिक के दुःखद निधन का समाचार उसे पीहर में मिला था।

मुझे याद है तुम मुझे कहकर अपनी भाभी की जचका पर गई थी।

हा मैं आपसे कहकर गई थी_?

तो तुम यह हृदय विदारक समाचार सुनकर भी आई क्यों नहीं ? मैंने दुखी होते हुए पूछा।

क्या बताऊ मालकिन मैं कितनी परेशानी में थी। मैं आना चाहती थी लेकिन मेरी भाभी की जचकी तब पन्द्रह ही दिनों की थी। आप तो जानती ही है कि इस भाभी की रजामन्दी के कारण ही मेरा यह भाइ मुये कुछ रुपयों का कर्ज दे पाया था। यदि उसकी जचकी बीच ही में छोडकर आ जाती तो वह भाई का जावन भर जला कटी सुनाती। जब वह महीना भर का हो गइ थी तब मैं यग धर पर आई थी। चौकीदार ने बताया कि आप बडके भैया के साथ चला गई है और मै इच्छा करके भी मालिक के चले जाने पर आपसे मिल नहा मकी। आप विश्वास नही करेगी कि मैं अपने आप को कितना कासती रही हूँ। मैं एक ही बात विचारती कि एक तो माजी थी जिन्होंने मेरा दुख में कितना साथ दिया था और एक मैं हूँ कि माजी के दुख के समय काम भी नही आ सकी।

वे दिन तो निकल गये। तुम तो यह बतलाओ कि तुम आज अचानक रास्ता कैसे भूल गई ?

ऐसा नही कहे माजी। यदि मैं अपनी खाल के जूते बनाकर भी आपको पहिना दूँ तो भी मैं आपके ऋण से उऋण नही हो सकती। शान्ति ने दुखो भाव से कहा।

नहीं नही ऐसा मत कहो। मैंने तो यों ही पूछ लिया था। मैंने उसक कधे को थपथपाते हुए कहा।

नही माजी। मैं जब भी इधर से जाती थी ता चौकीदार से आपक बारे में अवश्य पूछती थी। आज इधर से निकल रही थी घर को खुला हुआ देख कर भीतर चली आई। चौकीदार ने आपके बारे में बतलाया ता आपसे मिले बिना नही रही सकी और आपको परेशान_।

अरे नही नही मैं परेशान नहीं हूँ बल्कि तुम्हारे आने स तो बहुत अच्छा लग रहा ह। यो भी बेटे के चले जाने पर बहुत अकला महसूस कर रही थी। मैंने शान्ति को उसकी बात क बीच ही में अपने मन की बात कही।

क्या आप एक दम अकेली है ? शान्ति ने आश्यर्य पूछा।

हाँ।

आपके कौनसे बहू बेटे आये थे ?

'बहू नहीं आई थी बस मझला बेटा ही आया था।

खाना कौन बनाता था।

क्यों मुझे खाना बनाना नहो आता। मैंने क्षीण हसी के साथ पूछा।

आप भी माजी कैसी बातें कर रही हैं। एक जमाना था जब मालिक को आपके हाथों से बना खाना ही रुचिकर लगता था।

अब तो ऐसा लगता है जैसे खाना बनाये दस माह नही लम्बे लम्बे दस जीवन बीत गये हों। अब वैसे दिन कहाँ ? न चाहते हुए भी मेरा गला भर आया।

मैंनें उसकी ओर देखा तो वह कहने लगी —अब आप अपनी सेवा का भार मुझे सौंप दीजिये। आपकी इस दुर्बल और कमजोर काया को देखकर तो ऐसा लगता है मानों महीनों से आपने शांति से दो ग्रास भी नही निगले हैं। जब मालिक थे तो देह सोने सा दमकती थी लेकिन अब कैसी सावली सी पड गई है। इतना कहकर वह चुप होकर मेरी ओर देखने लगी फिर धीरे से बोली माफ कीजिये माजी छोटे मुह बडी बात कह रही हूँ यदि बेटों को माँ इतनी ही भारी लगी तो लेकर क्यों गये थे।

तुमने क्या कहा ? मैंनें पूछा।

नही लेखक। मैंने अपने बेटे बहुओं के विरुद्ध एक शब्द भी नही कहा। लेकिन वह एक नारी थी दुखी नारी वह मेरे बिना कहे ही मेरे हृदय की अतल गहराईयों में दबे अपमान निरादर तिरस्कार,उपेक्षा को अपनी काल्पनिक शक्ति के आधार पर जान गई थी। उसके दोबारा ऐसी ही बात कहने पर मैंनें उसे समझाया शान्ति औरत के विधवा हो जाने पर उसमें क्या शेष रह जाता है ? इस बात को तुमसे अधिक कोई क्या समझ पायेगा ? और वह सरल हृदया शान्ति मेरे वैधव्य को मेरी क्षीण दुर्बल काया का ठोस कारण समझ कर चुप हो गई।

'चलो अच्छा है तुम्हारी आत्मा की घायल अवस्था उससे छुपी रही वरना तुम्हारी लहूलुहान आत्मा को देखकर वह भी...?

और मैं अभी अपना लहूलुहान आपा पर शान्ति का मरहम लगाने का तैयार नहीं था। उसने मेरी बात को काटते हुए अपनी बात कही।

यह सब ठीक है लेकिन अब शान्ति जैसी परिचारिका को पाकर तुम्हारे जीने का ढंग पूर्णतया बदल गया होगा।

तुमने ठीक अंदाजा लगाया। शान्ति ने घर के समस्त कार्यों की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ओढ ली था। उसका पुत्र भागीरथ भी सप्ताह के अन्त में आकर बाहर के कामों का निपटा देता था। घर की रखवाली के लिए चौकीदार नियत था। " समझा अब बातों में खूब मन लगता होगा क्योंकि बहुओं ने तो कभी तुम्हारे पास बैठ कर बातें नहीं की थी। अब तुम अपने घर की स्वामिनी थी और यह तो तुम मानोगी कि बातों का आनन्द ही कुछ और होता है।" मैंने चुटकी ली। शान्ति भी घर के सब काम निपटाकर मेरे पास बैठ जाती थी।

नहीं लेखक। तुम्हारी कल्पना बेमानी और निराधार है। हम लोग गपशप में अपना समय व्यर्थ नहीं गवाते थे अपितु शान्ति भाव विभोर होकर मीरा के पद सुनाया करती थी। मैं मंत्र मुग्ध होकर सुना करती थी। हमारी इस भाव मुग्धता का कारण मीरा की पीडा थी। मीरा के दुख दर्द के साथ हम अपने दुख दर्द का तादात्मय बिठा कर दूसरे ही लोक में पहुच जाते थे।

शायद इसके पीछे कहीं परलोक सुधारने का मन्तव्य भी रहा हो। भौतिक जीवन जीते हुए आध्यात्मिकता की ओर बढना एक ऐसा अनिवर्यनीय सुख है जिसे हर व्यक्ति प्राप्त नही कर सकता है। यों भी बेटों बहुओं के घरों में रहते हुए तो तुमने मानसिक यत्रणा ही झेली थी।

लेखक। तुम्हारा कहना सही है। बेटों के घरों में तो मैनें अपमान और तिरस्कार भोगा था लेकिन यह घर मेरे माधव का था। जहाँ मैनें जीवन के समस्त भोगों का आस्वादन किया था। अब नियति के क्रूर हाथों द्वारा लूट लिये जाने पर भी मेरे पति की स्मृतियों से भरपूर इस घर का चप्पा चप्पा मुझमें आत्म विश्वास भरने लगा था। मैनें अपनी कल्पना में कितनी ही बार अपने माधव के चलने की भारी भरकम आवाज को सुना था। कितनी ही बार उनके बुलन्द ठहाको ने इस घर को निर्मम और कठोर दीवारों के बीच मुझे हसाया था। कहने का अर्थ यह है लेखक कि मेरे माधव की स्मृतियाँ मेरे एकाकीपन को हटाने का भरसक

प्रयन्न कर रही थी। माधव की स्मृतिया मेरा सम्बल बनन लगी थी। धीरे धीरे मै अपनी अस्मिता खडित आत्मभिमान और विस्तृत आत्मसम्मान को पुन पाने लगी थी। अब मैं दुखी और भ्रमित नही [illegible] गई थी। मरे लिए यह घर एक ऐसा पुस्तकालय बन गया था जहाँ जब जो चाहा तभी माधव से सबन्धित कोई न कोई पुस्तक हाथ लग जाती थी और मेरी निराशा दुख क्षोभ सभी भाव उस स्मृति रूपी पुस्तक के नीच दब कर रह जाते थे।

सखि। तुमने कभी सोचा यदि तुम्हारे माधव का घर नही होता तो तुम्हारा ठौर इस दुनिया में कहाँ होता? दुनिया के किस कोने को तुम अपनी अगुली से छूकर अपना करती।

शायद इसी लिए माधव ने इसे बनाया होगा। कहते हुए वह चुप हो गई।

मैं भी सोचने लगा यदि माधव ने अपने जीवनकाल में इस घर को नही बनाया होता तो इस औरत की क्या दुर्दशा होती। क्योंकि इसके पुत्र तो निजी क्षुद्र स्वार्थों रुपी कारागार के कैदी बने परमार्थ और मानवता से जमानत लेने को कतई तैयार नही थे। मैं क्यों। मेरे दूसरे भाई मा की सेवा करे। जैसी छोटी और घिनौनी दार्शनिकता से चिपके हुए वे श्रवणकुमार की भाति अपने कधो पर माँ का बोझा उठाने के बजाय अपनी समस्याओं के झोले को दूसरे के कधो पर लटका देने में भी तनिक झिझक या शर्म महसूस नही करते है। निजी आकाक्षाओं एव अभिलाषाओं को केन्द्रीय बिन्दु बना कर जीने वाले ये पुत्र इसके लिए किसी ठिकाने की व्यवस्था कैसे करते? और कहाँ करते ?

'लेखक किस चिन्ता में खो गये हो? अचानक सखि के प्रश्न को सुनकर मैं वास्तविक जगत में लौटा। वह कह रही थी अब मेरे पति की बरसी पास में थी। बरसी क सात दिन पूर्व मेरे तीनों बेटे सपरिवार मेरे घर में आ गये थे। बरसी का काम शान्ति के बीच सम्पूर्ण हुआ। बरसी के तीसरे ही दिन तीनों न जाने की सूचना दे दी।

तुमने उन लोगों को अधिक दिनों तक रुकने का आग्रह नही किया ?

मैंनें एक दो बार कहा लेकिन जब उन्होंने अपनी अपनी विवशताए बनलाई तो मैंनें भी उन लोगों को रोकने का प्रयास नहीं किया।

तुम क्या सचमुच इतनी कठोर बन गई थी।

दो तीन बार रोकने पर भी जब वे लोग नहीं रुके तो मैं क्या कर सकती थी। अब इसे चाहे तुम मेरे स्वभाव की कठोरता कहो या उदासीनता उसकी आवाज में तनिक रुक्षता थी।

मेरा पूछना तुम्हें अच्छा नही लगा ?'

यह बात नही है। तुम लेखक हो स्वय विचार करो। जो सुख मेरे भाग्य मे नही था उसे चाहने की कोशिश मैं क्यों करती। फिर तुमसे भी तो यह छुपा नहीं है कि मैं उनके लिए केवल एक अनावशयक वस्तु बन कर रह गई थी। इतना सब जानकर यदि तुम भी मेरे स्वभाव में ही कमी देखते हो तो सिवाय इसके कि मेरा भाग्य ही खराब था और क्या कहू ?

नही सखि नही। ऐसा अनर्थ मत कर बैठना। तुम मेरे लिए_?

अच्छा छोडो। जल्दी से मेरी आगे की कथा सुन लो वरना तुम तुनक कर अपनी लखनी को मेरे बन्धन से मुक्त करवाने की कोशिश करोगे।

यह सुनकर मुझे हसी आ गई। मैंनें हसते हसते उसे ध्यान से देखा। लेकिन नही वहाँ उस आकृति विशेष के चेहरे पर कोई भाव नही था। आश्चर्यचकित सा मैं पुन श्रोता बन गया।

मेरे पुत्रों के जाने के बाद मेरा जीवन पुन पहिले की भाति गतिमान हो गया। यद्यपि कही मेरा मन दु खी था तो भी शान्ति के प्रयासों से मैं दु खी होकर भी दु खी नही दिखलाई देती थी। करीब तीन वर्ष गुजर गये। अचानक एक दिन एक पत्र पढ़ते २ शान्ति का चहरा गुस्से से लाल हो गया।

क्यों ? क्या लिखा हुआ था पत्र में ?

वह एक निमत्रण पत्र था।

नाराजगी का कारण ?

मेरे बेटे ने अपने बेटे के ब्याह का निमत्रण पत्र भेजा था।

फिर तो खुश होना चाहिये था लेकिन वह नाराज क्यों हुई।

क्योंकि उसमें लिखा था कि मैं शान्ति और उसके लडके के साथ विवाह में सम्मिलित होऊ।

शान्ति का क्रोध अकारण नही था। पुत्र द्वारा माँ को शादी में सम्मिलित होने का निमत्रण इस प्रकार नही देना चाहिए था। मैंने शान्ति के क्रोध को उचित ठहराया।

हा लेखक। वह बार बार एक ही बात दोहराती रही कि यदि आज मालिक जीवित होते तो क्या आपके पुत्र के निमत्रण पत्र में मात्र औपचारिकता लिए ये चार पक्तिया होती ? न ब्याह में सम्मिलित होने का आग्रह न अपने आने की सूचना देने का अग्रह रहने दीजिये माजी। आप विवाह में नही जायें। लेकिन मैंने उसकी एक न सुनी। अन्तत उसे मेरी जिद के समक्ष झुकना पडा और हम तीनों विवाह में सम्मिलित होने के लिए रवाना हो गये।

चलो निर्णय लेने की हिम्मत तो_ ?

कैसी हिम्मत। दरअसल ब्याह में सम्मिलित होने का मेरा वह निर्णय ही गलत रहा।

क्यों ?

'बेटे के घर जाने के लिए बस में चढने लगी तो मेरा पैर फिसल गया और मैं नीचे गिर पडी।

'ओह !

हा मेरे दोनों घुटनों में चोट आ गई। नील पड गये घुटनों को देखकर शान्ति ने पुन अपनी बात दोहराई। किन्तु ईश्वर की मर्जी के समक्ष सभी नतमस्तक हो जाते हैं। अत मैं भी अपनी बात पर अडी रही और उसे लेकर बस में चढ गई बस में मेरी चोट दुखती रही लेकिन पोते के विवाह में सम्मिलित होने का चाव चोट की पीडा को कम करता रहा।

शाम को हम दोनों बडे बेटे के द्वार पर पहुचें। दरवाजा खुला हुआ था। हम दोनो भीतर गइ तो सामने ही बडी बहू नौकरों को आदेश दे रही थी। हम दोनों को देखकर भी अनदेखा करती हुइ भीतर की ओर मुडने लगी। उसे मुडते देखकर शान्ति ने आवाज लगाई— बहू भीतर कहाँ जा रही हो ? तुम्हारी सास आई हैं। ससम्मान इन्हें भीतर ले जाओ। तुम्हारा पुत्र कहाँ है ? बुलाओं उसे_ ?

तुम। तुम। कुछ नहीं बोली ।

न जाने क्यों लेखक ! पुत्र के घर की दहलीज का छूते ही मैं 'पुन पहिले की भाति दीन हीन बन गई। मेरे बटे बहू ने मुझे कैस इस घर से निकाला था। किस प्रकार मैंनें अपमानित जीवन जिया था ? आदि आदि विचार मेरी आत्मा पर ठक ठक करके एक साथ चोट देने लगे थ। बस इसलिए मैं असहाय सी खडी सी खडी रह गई।'

'तुम चुप रहा आर घर का नौकरानी की आवाज व्याह क घर में गूजन में भी नहीं झिझकी। मैंनें आश्चर्य दिखया।

'लेखक। तुम उसे नौकरानी कहकर उसके और मेरे रिश्त का समझने की भूल कर रहे हो। हमने किसी न भी उसे नौकरानी नहीं समया। उसके साथ सदैव घर के सदस्य की भाति व्यवहार किया गया था। रही बात उसके दवग व्यक्तित्व की ता लखक। वह एक एसा विधवा थी जिसके समक्ष मैं दरिद्र ठहरती थी—?

क्या ?

हा लेखक मैं उसके समक्ष दरिद्र थी क्योंकि ईश्वर ने उस विधवा की झोली में श्रवणकुमार सा बेटा डालकर उसे अथाह सम्पदा की मालकिन बना दिया था। पुत्र उसकी वह शक्ति थी जिसके बूत पर सत्य बात कहने से वह नहीं झिझकती थी। घबरा जाना तो जैसे वह भूल गई थी। हा तो मैं बतला रही थी शान्ति ने बडी बहू को सुनाकर कहा। बडी बहू पीछे की ओर पलटी। मुझे सामने दखकर वह मेरी आर बढी झुककर चरण स्पर्श किये। तभी मेरा पोता भी आ गया जिसका विवाह था। मेरे पाव छूकर वह भीतर कमरे में चला गया मैं भी लगडाती हुई चलने लगी।

अरे मा कहता हुआ भीतर से बडा पुत्र सामने आ खडा हुआ। उसे आशीर्वाद दे भी नही पाई थी कि सामने मझला और छुटका भी आ खडे हुए।

तीनों को एक साथ देखकर तुम्हारा मातृत्व गदगद् हो गया होगा।

नही लेखक। उस दिन पहली बार अपने मातृत्व के प्रति विरक्ति का भाव जागा इसस अच्छा ता म बाझ रहती। क्या इन तीन पुत्रों में से एक भी पुत्र मुझे विवाह में लाने के लिए मेरे घर नही आ सकता था? शान्ति ने ठीक कहा था भला अपनी माँ को शादी में बुलाने के लिए इस तरह आमत्रित किया जाता है। किसे दोष दू लेखक? यह मेरी नियति ही थी जिसके कारण मैं अपने तिरस्कृत

और अपमानित अतीत को भूलकर पुन पुत्र के द्वार पर दस्तक देने के लिए पहुँच गई थी।

आओ मा । पुत्र के कहने पर जब मैं लगडाती हुई आगे बढी तो मेरे पुत्रों ने कारण पूछा। मैं कुछ कह पाती इसके पूर्व ही बडी बहू ने दनदनाते हुए गोली दाग दी—'आप भी माझी। ब्याह शादी के घर में कहाँ चोट लगा कर आ गई ?

वाह बहू क्या खूब कही। अरे सास को विवाह में नौकरो के साथ नही बुलाया जाता है। अपने पूत को भेज देती माजी को लाने के लिए। नही तो माजी के बेटों को भेज देती। अच्छी भली अपनी घर से निकली थी बस में चढते समय पैर फिसल गया। अब खडी क्या हो डॉक्टर को बुला कर दिखाओ । शान्ति ने आव देखा न ताव सभी के सामने डाट दिया।

हा हा अभी डॉक्टर को बुलाकर दिखलाता हूँ। तुम मा के साथ भीतर तो आओ। बडके ने बात सभाला।

उसी शाम डॉक्टर ने आकर मलहम पट्टी की। दो दिन बाद ही विवाह की रस्म भी पूरी हो गई।

रुको सखि । तुमने तो बहुत जल्दी ब्याह भी करवा दिया और अब जाने की तैयारी भी करने लगी हो। थोडा सा ठहरो मैं भी कुछ पूछ लू वरना क्या लिखूगा। मैंने हसते हुए उसे आगे बढने से रोका।

शादी में तुम्हारी कद्र हुई ? या अवाछनीय—।

नही नही ब्याह में मेरी स्थिति उस वस्तु जैसी थी जिसे हम न तो फेंक सकते थे और न रख सकते थे। शान्ति प्रतिक्षण होने वाले मेरे अपमान से तिलमिलाई हुई थी। लेकिन विवश थी। नई बहू की मुँह दिखलाई की रस्म पूरी होने तक जा नही सकती थी। अत चुपचाप आखें मूद कर प्रत्येक घटना को घटने दे रही थी। अन्त में बहू की मुँह दिखलाई शुरू हुई। मेरी बडी बहू ने सोने की भारी नथ दी मझली ने सोने के कान के बून्दें दिये और छोटी ने सोने की दो अगूठिया दी—।

तुमने । तुमने क्या दिया ?

मैं ? मैं पहिले तो चुपचाप बैठी रही लेकिन बडी बहू की महरी ने ताने

दने शुरू कर दिय

दादी का पहिला पोता ब्याहा जा रहा है तो भी दादी की कजूसी देखो एक सोन का छल्ला तक बहू की मुँह दिखाई में नही दिया। मैंनें शान्ति की आर देखा उमने सकेत स कुछ भी देने के लिए मना किया। मैं भी चुप रही। लेकरी महरी थी कि बोले ही चली जा रही थी तो शान्ति को ताव आ गया

ये बेटे बहुए किनके हैं। माजी के ही हैं ना। चाहे ये दे या वे लोग दे क्या फर्क पडता है। यदि आज मालिक जीवित हात तो पोते क ब्याह पर__।

अरे मालकिन तो है खुशी बाटने के लिए। महरी ने शाति की बात को काट दिया।

दाना की बात सुनकर मरा हाथ मेरे गले की चेन पर पड गया। जिसे दखकर शान्ति न खासा। किन्तु म शान्ति क नकारात्मक सक्त को अनेदेखा करती हुई अपने गले में पडी चैन का उतारन से स्वय को रोक नही पाई। जब तक शान्ति कुछ कहती तब तक तो वह चेन मैंनें पोते की बहू का मुँह दिखलाई में दे दी। सभी औरतों न ताली बजाकर मेरी उदारता की प्रशसा करने लगी। शान्ति यह सब नही देख सकी। वह उठकर बाहर चली गई।

शान्ति के बाहर जाते ही मैंनें उस भीड भरे माहौल में स्वय को असुरक्षित महसूस किया और कइ दर तक ता म शान्ति की अनुपस्थिति को टालती रही फिर स्वय का वहाँ से उठ जाने के लिए रोक नही सकी।

मैंनें कमरे से बाहर निकल कर देखा शान्ति अनमनी सी अकेली बैठी हुई थी। मैं भी उसक पास जाकर बैठ गई। मुझे देखते ही वह उलाहना देने लगी।

आपने यह क्या किया माजी ?यह ता मात्र महरी की एक चाल थी जिसमें आप मेरे मना करने पर भी फस गई। आपको यहाँ आने के लिए कितना रोका था लेकिन आप नही मानी। मुझे नहीं मालूम था कि मालिक के आखे मूदते ही आपक अपने कहे जाने वाले इन पुत्रों न भी आपकी ओर स आख मूद ली है। वरना आपक लाख कहन पर भी मै आपका यहाँ लकर नही आना। माफ कीजिये माजी। न तो निमत्रण में मर्यादा थी और न यहाँ पर मान सम्मान है। आज बहू की मुँह दिखलाई भी हा गइ ह। कल सुबह ही अपन लोग यहाँ से चले जायेंगे। यहाँ आकर क्या मिला ? अपनी आडे समय काम आने वाली सम्पत्ति और

गवाई...? अचानक कहते कहते वह चुप हो गई।

उसे अचानक चुप हुआ देखकर मैंने सामने की ओर देखा तो बडी बहू आती हुई दिखलाई पडी। हम दोनों चुपचाप उसकी ओर दखने लगे। पास आन पर अपने शब्दों को चीनी के घोल में लपटते हुए उसने कहा माजी। भीतर चलिये देखिये सब कितना हँसी मजाक कर रहे है। अभी तो आरत नाचेगी भी। चलिये माजी भीतर चल कर देखिये।

मैं कुछ कहती उससे पहले, शान्ति न कल जाने की बात कह दी।

हा वह ता मैं इनसे कह दूगी लेकिन आप लोग भीतर तो चलिये। उसमें पुन अपनी बात दोहराई।

नहीं भीतर घुटन सी महसूस हो रही थी। इसी लिए यहाँ आकर बैठ गई है। कुछ उचाट क साथ मैंनें कहा। निसे सुनकर वह बिना कुछ कह भीतर चली गई।

आपने देखा माजी। बहू ने एक बार भी रुकन के लिए नही कहा। यदि दिखावे के लिए झूठा आग्रह करती तो भी कौनसा अपन रुकने वाले थे।

मन छोटा मत करो शान्ति। मेरा ही भूल थी मैंनें तुम्हारा कहा नही माना आर म चला आई। लखक ! मन उस ता समझा दिया लकिन मन ही मन पति विहीना नारी के अभिशप्त जीवन के बारे में सोचने लगी। कोई भी जब तब उस प्रताडित और अपमानित कर सकता है। एक पति के न रहने पर उसका जीवन कितना कारुणिक और असुरक्षित हो जाता है।

माजी राड होना कौन चाहती है? अचानक उसक मुह स सुनकर म चोंकी। उसने आगे कहना जारी रखा ईश्वर औरत जातक साथ यह अनथ क्या करता है यह तो वही जाने। लेकिन हम दुनिया वाले भी विधवा को सताने म एक राक्षसी सुख पाते हैं। मेरे विधवा होने पर मेरे जेठ देवर ने मुझे सताने में कोई कमी नही रखी। उस समय मैंनें सोचा था कि शायद वे लोग मेरे साथ इस लिए बुरा बर्ताव कर रहे हैं क्योंकि मैं गरीब थी मेर पास धन नही था। लेकिन आपको देखकर सोचना हूँ मरा वह विचार ठीक नहा था क्योंकि आप सभी तरह से सम्पन्न हैं फिर भी बेटा के लिए भारी हो गई है। दरअसल विधवा का जीवन ही बदल जाता ह...।

तुम ठीक कहती हो शान्ति पति के मरते ही सगे सम्बन्धी सोचने लगते हैं अब इस विधवा के जीवन की क्या आवश्यकता है। यह भी जल्दी से जल्दा क्यों नही मर जाती ताकि इसके प्रति किसी भी भाति की कोई जिम्मेदारी निबाहनी नही पडें। लेकिन कोई हम दुखी विधवा औरतों को उस बाजार की जानकारी भी तो नहीं देता है जहाँ जाकर हम मृत्यु को खरीद लें।

हम दोनों बाहर कुर्सियों पर बैठी बैठी बातें कर रही थी तभी बरसात की हल्की हल्की बूदे गिरने लगी । हम दोनो कमरे के भीतर चले गये। वहाँ नाच गान हो रहा था हम दोनों भी एक किनारें में बैठ गये।

रात के भोजन के बाद पूरा परिवार एक साथ बठा हुआ था। उस समय में बडी बहू ने हमारे कल जाने की घोषणा की। जिसे सुनकर बडे पुत्र ने कहा

कुछ दिन रुक जाती माँ

नही अब रुकना सभव नही है।

लेकिन क्यों ?

शान्ति को भी अपने घर पर पहुँचना है ना।

यह तो तुम्हारा बहाना है वरना शान्ति के साथ चार पाच दिन रुकना कोई बडी मुश्किल वाली बात नही है।

जाना तो है ही फिर क्या चार दिन पहिले और क्या चार दिन बाद में। मैनें उत्तर में कहा।

लेकिन मेरी बात सुनते ही शान्ति कहे बिना नहीं रह सकी आप माजी को रख लीजिये। मैं कल चली जाती हूँ। यो भी माजी आपकी है जब तक जी चाहे तब तक रखिये।

शान्ति के व्यग्य से आहत क्रुद्ध सर्पिनी सी बहू ने फुफकार मारी यदि शान्ति कल चली जयेगी तो माजी किसके साथ जायेंगी ? बडा बेटा तो बहू के साथ हनीमून के लिए चला जायेगा और छोटे बेटे को भेजना सभव नही होगा क्योंकि वह यहाँ के बचे हुए काम निपटायेगा। इस लिए माजी को भी...?

तुम चिन्ता मत करो बहू। माजी को मै लेकर आई थी और मैं ही माजी को अपने साथ लेकर जाऊगी। तुम्हारे पुत्र बहू हनीमून के लिए जायेंगे या नही

यह तुम जानो। हा क्ल दोपहर खाना खाने के बाद हम दोनों चली जायेंगी। शान्ति ने बहू के घटिया व्यवहार का मुँह तोडकर उत्तर दिया।

'तुम्हारे पुत्र ने_?

वह तो तब कहता जब मैं वहाँ रुकती। अपनी बात समाप्त करते ही शान्ति ने मेरी बाह पकड कर मुझे यह कह कर उठा दिया कि चलिये माजी रात बहुत हो गई है आप आराम कीजिये।

दूसरे दिन मैं अपने कमरे में बैठी हुई अपनी साडी समट रही थी तभी हाथ में कुछ लिये हुए बडी बहू ने कमरे की चौखट के भीतर पाव रखा। मैंने आश्चर्य स उसकी आर दखा। उसन हाथ का डिब्बा टबल पर रखत हुए कहा

आपके लिए मिठाई है माजी।

मैंने उस भूरे रग के छोटे से डिब्बे को दखा और गुमसुम सी देखती रह गई। तभी सुना बहू कह रही थी

आपकी पोती भी ब्याह के लायक हा गई है। दखिये तो कैसी झाड सी लम्बी हो गई है।

'मैंने मन ही मन सोचा इसमें देखना क्या है लडकिया तो धीरे धीरे ब्याह लायक होती ही हैं। मुझे चुप देखकर उसने कहना चालू रखा

'आजकल तो लोग दहेज के लिए मुँह बाये रहते हैं। समझ में नही आता किस तरह इन दहेज खोरों का मुँह बन्द किया जाये_?।

'तुम्हारी बहू दहेज में क्या लाई है?

'कुछ खास नही वैसे अभी दहेज को खोला नहीं है।

तुम भी ऐसा घर वर देखो जो दहेज के विरुद्ध हो_।

मेरी बात सुनकर उसका चेहरा तमतमा आया। उसे गिरगिट सा रग बदलत देख मेरी स्मृतियों में यहाँ बिताय गये पुराने दिन घूम गये। मैं भीतर ही भीतर घबराने लगी। उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था लक्नि सामने स शान्ति को आते देखकर चुप हो गई।

यह क्या है माजी। टेबल पर रखे डिब्बे की ओर अगुली से सकेत करते हुए शान्ति ने पूछा।

यह मिठाई है रख लो। बहू लाई है।

अरे। यह माजी के बडे पोते क ब्याह की मिठाई का डिब्बा है। लेकिन बहूरानी यह तो बिस्कुट के डिब्बे जैसा लगता है। डिब्बे को ऊपर नीचे नचाते हुए शान्ति ने कहा।

बहू लाई है रख लो मैंने सावधान किया। लेकिन वह तो जैसे बहू की बखिया उधेडने पर तुली हुई थी। लेकिन इतनी सी मिठाई से पडौसियों को चौकीदार को मेहतरानी को माली को सबको कैसे बहलायेगें फुसलायेंगे और फिर मेरी मिठाई कहाँ है ? बहू की ओर देखते हुए उसने अपनी मिठाई की माग की।

तुम्हारी मिठाई तो अलग से लाऊगी ना। खिसियाई सी बहू ने उत्तर दिया।

ऐसा करो बहू। यह डिब्बा भी तुम साथ में ले जाओ और तनिक बडा करके ले आओ।लेकिन मेरा डिब्बा लाना मत भूलना। और कथन के साथ ही अपने पल्लू स अपनी हसी को रोकने की कोशिश करने लगी।

क्यों इसको छेड रही हो ? बहू के कमरे से बाहर जाने पर मैंनें उसे सावधान किया। अभी कुछ ही घटा के बाद अपन लोग चले जायगें। कही जात जाते कुछ कहासुनी हो गई तो व्यर्थ ही जी में मलाल रहेगा। मैंने उसे समझाने की कोशिश की। लेकिन उसने हसते हसते कहना जारी रखा क्यों घबराती है माजी। देखें तो डिब्बे की ऊचाई कितनी बढती है। इतना कहकर वह अचानक गभीर हो गई। कही दूर देखते हुए वह बोली

याद है माजी। मझल भैया के ब्याह में पन्द्रह किलो का कनस्तर मिठाई से भरती हुई यही बहू बोली थी यदि देवर के ब्याह की मिठाई पडौस मे नही बाटूगी तो लोगों को कैसे मालूम होगा कि मेरे देवर का ब्याह था।

सब कुछ ज्यों का त्यों याद है। लेकिन मन भूलो उस समय तुम्हारे मालिक जीवित थे आज वे नही है। अभी तो यह जो कुछ भी दे उसी को लेकर चल पडो वरना यह बहू जाते जाते भी—।

तब तक बहू शान्ति के मिठाई के डिब्बे के साथ कमरे मे दाखिल हो गई। यह लो शान्ति।

'लेकिन माजी का डिब्बा तो तुमने खोला भी नही। शान्ति ने मिठाई का पैकेट पकडते हुए मेरे डिब्बे की ओर सकेत किया।

अब शान्ति मिठाई को छोडो, घर जाने की चिन्ता करो। तुम्हारी बस दो बजे की है। बहू ने अपने सस्कारों को पीछे ढकेलते हुए कहा।

'तुम्हारी बहू के मैके में क्या लेन देन जैसे सस्कार भी नही सिखलाये गये थे।

तुम सुनो तो लेखक। लेकिन शान्ति भी कहाँ हार मानने वाली थी। उसने भी तपाक से कह दिया मिठाई तो खैर छोडो। वह तो हम लोग बाटने के लिए बाजार से खरीद लेगें। यों भी तुम एक पाव मिठाई और डाल भी देती ता हमें क्या फर्क पडने वाला था। तुम तो अपने बेटे के ब्याह की साडिया ले आओ ताकि सूटकस बन्द कर दू।

'वाह तुम्हें शान्ति अच्छी मिल गई। मैनें हसते हुए कहा। आखिरकार वह तुम्हारी बहू से बेटे के ब्याह की साडिया निकलवाने में सफल हो ही गई।

अरे कहा लेखक। वह शान्ति से एक कदम आगे ही थी अत अपनी सारी मान मर्यादा को तिलाजलि देती हुई बोली अभी बहू के सूटकेस खोले नहीं है अत तुम्हें अभी साडी नही दे सकती। हा आज रात को सूटकेस खोलेंगे तो तुम्हारे लिए साडी निकालूगी। तुम चिन्ता मत करो तुम दोनों की साडिया मैं भिजवा दूगी। और मुहँ बिचकाती हुई वह वहाँ से चली गई।

उसके जाने के कुछ देर बाद तक हम दोनों एक दूसरे की ओर देखते रहे फिर एक साथ हँस पडे। हसने से हम दोनों का मन खुश हो गया। तभी शाति ने हँसते हुए कहा 'माजी। चलिए खाना खा लेते है वरना यह तो बिना खाना खिलाये घर से विदा करने में भी सकोच नही करेगी।'

'तुम ठीक कहती हो कहती हुई मैं भी उठ गई। हम लोग खाना खाने बैठ गये। थाली में केवल एक मिठाई परोसी गई थी। मैं चुपचाप सिर झुकाये खाना खाने लगी। किन्तु शान्ति की आवाज सन्नाटे में तीर सी गूज गई क्या बात है बहू। सारी मिठाई हमारी मिठाई में बाँध दी है क्या। अरे विवाह के घर में भी यदि थाली में मिठाई नही हो तो खाना बेस्वाद हो जाता है।'

अरे मिठाई लाओ। पास खडी अपनी पुत्री को बडी बहू ने खिसियाते हुए

कहा। मिठाई खाने पर शान्ति ने जानबूझ कर कई तरह की मिठाई उठाई लेकिन मैंनें एक भी आने मिठाई नहीं ली। मेरा मन अपमान और क्षोभ से भर गया। मुश्किल से एक चपाती खाकर मैंनें हाथ खीच लिया। शान्ति मुझे खाते न देखकर स्वय भी उठ खडी हुई। शान्ति के चेहरे पर अवसाद और विषाद की रेखाए उभर आई। मेरा मन धक धक करने लगा। तभी मेरा पुत्र आ गया। वह शान्ति को कुछ रुपये देने लगा। यह देखकर शान्ति ने कहा—

बडें भैया । ये रुपये आप अपनी बहू को दे दीजिये। ब्याह के नाम पर एक पाव मिठाई दी है। मैं नहीं समझती थी कि माजी के पुत्र मालिक की भाति ऐश्वर्यशाली न होकर इतने दरिद्र होंगे कि वे अपनी माँ को एक साडी देने में भी असमर्थ होंगे। भैया। ब्याह में आये हुए अपने सम्बन्धियों को तो हम लोग भी मिठाई कपडे देते है। जबकि आपके वैभव के सामने तो हम बहुत ही गरीब हैं।

तुम्हारा पुत्र ?

वह निर्विकार भाव से मूक बना सुनता रहा। उसे वही खडा छोडकर शान्ति कमरे में से हमारा सामान ले आई चरण वन्दना ओर आशीर्वाद की खानापूर्ति करके हमने बस ओर प्रस्थान किया। मेरे पुत्र मुझे बस पर बिठलाने के लिए आये थे। आते समय कोई विशेष बात नही हुई । केवल मेरी ममता आहत हुई थी। बस के चलने पर शान्ति ने चैन की सास ली। लेकिन इतना कहे बिना नही रह सकी धन्य हैं माजी आप मैं तो ऐसे घर में एक दिन भी नहीं रह सकती और आप यहाँ लम्बे लम्बे तीन चार माह तक रह लीं।

मैंनें उसकी बात का उत्तर नही दिया। चुपचाप अपनी आखे मूद ली। शायद शान्ति मेरे हृदय की बात समझ गई थी। अत वह भी चुप हो गई। न जाने कब आख लग गई। मन की बौझिलता और नींद से बौझिल नेत्रों के बीच हमने वह रास्ता तय कर लिया।

दूसरे दिन शान्ति बाजार से मोतीचूर के लड्डू और बेसन की बर्फी खरीद कर ले आई। लड्डू और बर्फी को ब्याह की मिठाई में मिलाकर पडौस में और नौकरों में बाट दी।

लेकिन बाजार से मिठाई मगवाकर बाटने में तुम्हे क्या मिला ? तुम्हारी बहू ने तो —'

'अरे बहू को वहाँ जानता ही कौन था ? उसका अपना व्यक्तित्व कहाँ था। वह हमारे नाम से जानी जाती थी। ब्याह की मिठाई नही बाटने पर मेरे पति की नाक कट जाती और मैं नहीं चाहती थी कि मेरे जीवन काल में उनके विरुद्ध कोई एक शब्द कहने का भी साहस करता_।

'वह सब ठीक है लेकिन तुम्हारा खर्चा_। खर्चा शब्द सुनकर वह कहने लगी सच तो यह है लेखक कि मेरे दुर्भाग्य से दो अच्छी चीजें जुडी रही एक तो मेरे पति का मकान और दूसरी मेरी आर्थिक सम्पन्नता_। इतना कहकर वह कुछ देर रुकी। थोडी देर रुकने के बाद उसने कहा मैंने तुम्हें बतलाया नही जब मैं अपने पुत्रों के पास रह रही थी तो वहाँ मैं अपना खर्चा देती थी_?'

क्या एक विधवा जननी अपने ही पुत्र के घर में अपने ही खाने पीने का खर्चा स्वय वहन करती थी। मैंनें चौक कर पूछा।

'हा लेकिन तुम इतने अचम्भित क्यों हो_?

'क्या तुम्हारे पुत्र आर्थिक दृष्टि से___?'

नहीं नहीं सम्पन्न थे।' उसने मेरे वाक्य को पूरा करते हुए कहा "यदि कहीं दरिद्रता थी तो मेरी पुत्रवधुओं के हृदय में थी। सच लेखक वे लोग हृदय से बहुत ही कगाल थीं। मेरे पैसे से मैं खाती थी। लेकिन वे लोग यह भी सहन नहीं कर पाई और उन लोगों ने मेरी स्थिति उस भिखारिन सी बना दी थी जो खाना तो चाहती थी लेकिन पैसे के अभाव के कारण खा नहीं पाती थी।

'बहुओं की दरिद्रता को छोडो। यदि तुम्हारे पुत्र मानवीय गुणों से भरपूर थे तो उन्होंने तुम्हारी सेवा से क्यों मुँह मोड लिया था।'

शायद गरीब की रिक्त हडिया सी उनकी भी कोई मजबूरी रही होगी।

गरीब की हाडी की रिक्तता उसकी एक बेबस लाचारी है लेकिन तुम्हारे पुत्रों का यो सेवाभाव को तिलाजली देकर निष्ठुर बन जाना_।

एक बात कहू लेखक। तुम भी चक्कर में आ गये। देखो बेटे अपने माता पिता की सेवा से कभी दूर नहीं भागते क्योंकि वे उसने अपने होते हैं। किन्तु बहू पति के मा बाप की सेवा से मुँह मोडती है क्योंकि ये उसके नही बल्कि उसके पति के मा बाप हैं। मेरे पुत्र मेरी सेवा से क्यों भागे ? क्योंकि

मेरी बहुओं ने मेरी सेवा सुश्रुषा में कोई रुचि नही दिखलाई। इस लिए रोज रोज के कलह और लडाई झगडों के कारण मेरे बेटो ने मुझे अपने घर आगन से दूर रखना ही श्रेयस्कर समझा। वैसे भी एक बात की गाठ बाध लो लेखक। यदि किसी घर के शात वातावरण में मा बाप की सेवा हो रही है तो समझ लो वह सेवा पुत्र नही पुत्रवधू कर रही है।

'ओह तो इस लिए तुम अपने बेटों के घर अनामत्रित अतिथि की आवभगत का श्राप झेलती रही।

अब तुम समझे ना मेरे पुत्रों का सेवा भाव गरीब की हाडी जैसा विवश क्यों था।

लगता है पुत्रों के प्रति तुम्हारी ममता___?'

'नहीं लेखक यह तुम्हारा भ्रम है बल्कि मेरी ममता का रहा सहा स्रोत भी पोते के ब्याह के बाद सूख गया। अब मैं जीवित थी, अपनी आयु की निश्चित अवधि को भोगने के लिए। मेरा मन सासारिकता से परे हटने लगा। पूजा पाठ, अर्चना में मेरा मन अधिक रमता। खाली रहने पर मेरा मन कल्पना के पखों पर बैठकर नीले आकाश के उस पार शून्य में विचरणे लगता जहाँ मेरी स्मृति में शेष नाग पर सोये भगवान विष्णु ओर उनके चरण दबाती लक्ष्मीजी घूम जाती तो कभी कैलाशपर्वत की श्वेत छटा के बीच अपनी कुटिया के बाहर समधिस्थ शकरजी के पास बैठी पार्वतीजी मेरी बुद्धि को विमोहित कर देती थी। ऐसे योग ध्यान एकान्त के बीच मेरा जीवन एक दिशा में बह रहा था।

'अचानक मेरे शात जीवन में हलचल हुई।' मरे तीनों पुत्र मेरे पास पाच वर्षो के बाद दीपावली मनाने आयेंगे की सूचना मेरे पास आई। यह खबर सुनकर मेरा मन अनेक चिंताओं से भर गया। मैं नहीं चाहती थी कि कोई भी मेरे पास आकर मेरे शात जीवन को अशान्त बनाये।

तुम उन्हें पत्र के द्वारा मना करवा देती।

'उन लोगों ने इतना समय ही कहाँ दिया कि मैं मना करवा सकती थी। दीपावली के तीन चार रोज पूर्व वे तीनों सपरिवार आ गये। और लेखक। तुम विश्वास नहीं करोगे मुझे वे बेटे बहुएं पोते पोतियाँ उन राक्षसों की भांति लगे जो मेरी पूजा अर्चना को भंग करने आये हो। भीतर ही भीतर दुःखी और विह्वल

में ऊपर से बहुत खुश दिख रही थी। घर का प्रत्येक सदस्य खुश था।

धीरे धीरे तीन दिन बाद दीपावली का त्यौहार भी आ गया। बहुत सुन्दर तरीके से मेरे बेटों ने दीपावली का त्यौहार मनाया। नौकरों को तगडी बख्शीश दी। उन लोगों को अत्यधिक उत्साह से त्यौहार मनाते देखकर मेरा मन पुन भय और आशका की काली चादर से ढक गया।'

शायद उन लोगों का त्यौहार के प्रति अत्यधिक उत्साह और प्रसन्नता तुम्हारी आशका का मुख्य कारण रहा हो। क्योंकि कभी कभी अतिरिक्त उत्साह प्रसन्नता के स्थान पर मन को दुश्चिन्ताओं से भर देता है।

नहीं नहीं त्यौहार के अतिरिक्त सूर्य की प्रथम किरणों सी ताजी और प्रफुल्ल नजर आने वाली मेरी बहुए मेरे हृदय को अनेक शकाओं से घेर रही थी।

ऐसे भय और आशका के बीच वह सुबह आई मैं अपनी पूजा अर्चना के बाद अपनी चाय पी रही थी कि मेरे तीनो बेटे बहुए मेरे सामने आ खडे हुए। उन्हें देखकर मेरे मन की आशकाए और दुश्चिन्ताए पुन सिर उठाने लगी चाय पी रही हो मा ?' ये सब एक साथ किस लिए आये हैं? तभी सुना बडा बेटा पूछ रहा था—

'हा। तुम लोगों के लिए भी मगवाऊ ? सभी को बारी बारी से देखते हुए मैंने पूछा।

'अभी नहीं थोडी देर बाद पियेगें। मझलें ने कहा ।

लेकिन तुम सभी सुबह सुबह कैसे आ गये ?

'तुमसे कुछ बातें करनी थी।

'बडे ने जल्दी आने का कारण बतलाया और थोडी देर के बाद बोला देखों माँ तुम यहाँ अकेली रहती हो ?

तो ? मैनें पूछा ।

हम भाई चाहते है कि तुम चार चार महीने हम तीनों के घर पर रहो और___।'

'लेकिन तुम लोग ऐसा क्यों चाहते हो ? मेरा मतलब अब अचानक तुम लोग ऐसी इच्छा क्यों करने लगे हो ? मेरी बात सुनकर अचम्भित स्तब्ध वे

आपस में एक दूसरे को देखने लगे। यह देखकर मैंने पुन छेडा मैं तुम लोगों से पूछ रही हूँ और तुम लोग उत्तर देने के बजाय एक दूसरे की ओर देख रहे हो।'

'तुम हम बेटों की माँ होकर यहाँ एकान्तवास कर रही हो। इस सोच से ही हमें पीडा होती है। बडे ने मेरी बात का उत्तर दिया।

'तुम्हारी पत्नियाँ क्या चाहती हैं ? मेरे स्वर की दृढता से मेरे बेटे पुन चौंक गये। मैंने उनका चौकना लक्ष्य किया। कुछ कहती इसके पूर्व ही बडी बहू ने अपना बडप्पन दिखलाया—

माजी आप हमारे साथ रहिये। आपकी सेवा करके हमें बडा सुख मिलेगा।

और मझली तुम ? मेरे सीधे प्रश्न से वह घबराई—

यदि पिछली बार कुछ भूल हो गई हो तो क्षमा करें। वह बडकी से भी एक कदम आगे निकली।

और छोटी तुम ?

मैं जैसी कल थी वैसी ही आज हूँ। मैं समय के साथ साथ बदलती नहीं हूँ। किंचित मुँह टेढा करते हुए उसने कहा।

अब तुम सब मेरा निर्णय भी सुन लो मैं इस मकान को छोडकर कहीं अन्यत्र रहने के लिए नहीं जाऊगी। मैंने दो टूक उत्तर दिया।

"किन्तु माँ। इस मकान को बेचने का निर्णय ...?

इस मकान को बेचने का निर्णय ...? हम भाईयों ने कर लिया है। बडके ने हिचकते हिचकते अपनी पूरी बात कही।

किन्तु इस मकान को बेचने का अधिकार तुम्हें किसने दिया ? हम लोग आपके पुत्र हैं। हमें अधिकार है कि हम...?

अधिकारों की बातें मेरे सामने मत करो। मैं भी तुम लोगों की माँ हूँ। तुम लोगों के प्रति मेरा भी अधिकार बनता है किन्तु मैंने कभी उस अधिकार का उपयोग नहीं किया फिर तुम क्यों पुत्र होने के कारण अपना अधिकार दर्शाते हो। पुत्र के अधिकार के साथ साथ यदि पुत्र के कर्तव्य की चर्चा करो तो...।

अधिकार और कर्तव्य की चर्चा छोडो इस घर में कितना ही ऐसा सामान है जिसकी आपको जरूरत नहीं है। उन सबको बेचकर ...?

'लेकिन इस घर की वस्तुओं को बेचने वाली छोटी तुम कौन होती हो ? इस घर की एक भी वस्तु तुम्हारे पति के पैसे से नही खरीदी गई है। मैंने चिढकर कहा।

'लेकिन वह कहाँ चुप रहने वाली थी 'स्टील, पीतल और कास्य के बने ये बडे बडे बर्तन इन सबका आप क्या करेंगी ?

'ये सब क्या तुम अपने मायके से लाई थी ? मैंने उसके मर्म पर प्रहार किया।

'मेरे मायके से तो पीतल की बडी टकी बडे टोप, भारी भारी कास्य थालियाँ आई थी। वे सब कहाँ है ? बडी ने तुनक कर पूछा।

मैं उत्तर में कुछ कहती उसके पूर्व ही मझली ने तेज तर्रार आवाज में पूछा मेरे मायके से चादी से लकदक करती वे साडिया कहाँ हैं ?

वे मेरे लिए आई थी। या तुम्हारे लिए ? मैंने उसके अनर्गल प्रलाप को अपने प्रश्न से बाधा।'

'वे साडियाँ। अरे वे साडियाँ तो माजी अपने रिश्तेदारों की बेटियों के ब्याह में देकर वाहवाही लूट चुकी है। उन साडियों को भूल जाओं अब। छोटी का व्यग्य हवा में गूजा।

तुम लोग मेरी सेवा करना चाहते हो। या मेरे घर की सम्पदा को हडपना चाहते हो। मैंने बडके की ओर देखकर पूछा।'

'तुम सब चुप हो जाओ मेरी बात सुनकर उसने तीनों बहुओं से कहा। फिर मेरी ओर उन्मुख होकर बोला देखों माँ शान्त चित्त से सोचो और फिर निर्णय लो इस तरह झगडा झझट करने से__?'

तुम लोग अपने अपने घर जाने की व्यवस्था करो। मैं यहा अकेली रहती हूँ अत झगडे झझट का सवाल ही उत्पन नहीं होता।'

लेकिन इस मकान __?

इस मकान के लिए मेरा वही उत्तर है जो पाच मिनिट पूर्व था। यह मेरे पति का मकान है। मेरे जीते जी इस मकान को बेचने की__?'

'ओह बहुत घमण्ड है अपने पति की सम्पदा पर, इस मकान पर' तो ये

पुत्र। ये किसके है ? छोटी ने बेशर्मी से पूछा।

'ये तीनों तुम तीनों के पति हैं। यदि मेरे पुत्र होते तो अपने कर्तव्यों की बातें पहिले करते उसके बाद अधिकारों की। लेकिन हा ये पुत्र अवश्य हैं किन्तु पुत्रों के कर्तव्यों से अपरिचित जमीन पर रेगने वाले कीडों से भी निम्नतर। समझ गई हो ना और अब इस विषय में दोबारा प्रश्न मत करना। छोटी की ओर देखते हुए कहते कहते मैं उठ खडी हुई।

हमें इन आधी अधूरी अनसुलझी समस्याओं के बीच घिरा हुआ छोडकर आप कैसे उठ सकती है ? इतना कहकर छोटी ने मेरे हाथ को झटका देकर मुझे बिठला दिया।

'तुम मेरा हाथ क्यों खीच रही हो ?' कहते हुए मैंने अपने तीनों पुत्रों की ओर देखा। किन्तु वे सब तो जैसे पौरुषहीन नपुसक बने हुए थे।

हा बोलों मा। तुमने क्या निश्चय किया है ?' मझले ने पुन बात छेडी।

देखों। कल में और आज में बहुत अन्तर आ गया है। मुझे विधवा हुए दिन और माह नही बल्कि कई वर्ष बीत गये हैं... ? कई कितने ? दसवा वर्ष चल रहा है। अचानक मझले ने बीच ही में टोक दिया। लेकिन मैंने मझले को अनसुना करते हुए कहा और अब विधवा बरसों के घेरे में आ जाती है ता वह पहिले की अपेक्षा दृढ हो जाती है। क्योंकि पतिका दुख उसे कष्ट सहने की हिम्मत दे देता है। इसलिए इस विषय पर मैं अपना अन्तिम निर्णय सुना रही हूँ कि मैं यह मकान न तो बेचूगी और न ही इस मकान को छोडकर तुम लोगों के दरवाजे पर चक्कर लगाऊगी। कुछ कठोर होते हुए मैंने अपना निर्णय सुना दिया।

अच्छा तुम बेचना नहीं चाहती हो तो इसका बटवारा कर दो। मझले ने विषय ही बदल दिया।

ओर मैं ?

आपको एक कमरा और एक रसाई मिल जायेगी। मझले बेटे ने तुरन्त उत्तर में कहा।

क्यों तुम क्या चाहते हो बडके ?

मझला ठीक कह रहा है तुम्हारे लिए तो एक कमरा पर्याप्त रहेगा ....!

'जब तुम लोग यहाँ रहने के लिए ही नहीं आ रहे हो तो बँटवारे से क्या फायदा ? मैंने कहा।

'बस इतना ही फायदा है कि आपके जीवन काल में हमारा बटवारा हो जायेगा।' छोटे ने कहा।

अच्छा एक काम करो तुम लोग बटवारा कर लो लेकिन इस घर में जो सामान जहाँ रखा है उसे वैसा ही पडे रहने दो। जैसे अभी पूरा घर खुला हुआ है उसी भाति घर को खुला रहने दो।

'इससे तुम्हें क्या फायदा होगा। मझले ने पूछा।

यदि तुम लोग अपने अपने हिस्से के कमरे बन्द करके चले जाओगे तो मेरा सूनापन बन्द कमरों के बाहर लटकते तालों को देखकर और भी बढ जायेगा। मैनें कहा।

'किन्तु कमरों को खुला कैसे छोडेंगे ? छोटी ने पूछा।

क्यों ?

उसमें हमारा सामान होगा।

जो मेरा सामान है वह कहाँ जायेगा ?

उसे तो बेच देंगे। मझली बहू ने कहा।

ओह । इन लोगों का दिमाग जमीन जायदाद बटोरने में लगा है। इस विचार के जन्मते ही मैनें दृढ शब्दों में कहा तुम तीनों को तुम्हारा हिस्सा देकर मैं रसोई और कमरे तक सीमित रह जाँऊ यह मेरे लिए सम्भव नहीं है। तुम लोग अच्छी कीमत के लालच में इस मकान को बेचने की बात सोच सकते हो। अपनी आर्थिक सम्पन्नता को बढाकर तुम भौतिकता की दृष्टि से भी सम्पन्न हो जाओगे। लेकिन मेरी सोचो मैं विधवा यदि यह मकान तुम लोगों को बेचने के लिए दे दू तो तुम तीनों पुत्रों में से किसका घर मुझ अबला का आश्रय स्थल बनेगा ?

'तुम एक एक बेटे के घर चार चार माह तक रहना। बडे ने पुन अपनी बात दोहराई।

शायद तुम लोग नही जानते हो कि नया पौधा भी जमीन से आत्मीय सम्बन्ध बनाने में कुछ समय लेता है तो क्या नई जगह में जमने के लिए मुझे समय की आवश्यकता नहीं होगी ? और जब जगह मुझे पसन्द आने लेगेगी तो तुम मुझे वहाँ से उखाड कर दूसरी जगह लगा दोगे।

हमेशा के लिए आपकी जिम्मेदारी कौन लेगा ? छोटी ने मुँह बनाया।

'छोटी बहू यही चिन्ता है मेरे सामने कि जीवन भर मेरी जिम्मेदारी कौन उठायेगा। तुम सोचो यदि मैं यह मकान भी तुम लोगों को दे दू तो__?

'मा। यह नासमझ है। हम लोग है ना तुम्हारी जिम्मेदारी उठाने के लिए__?

नही बेटे मैं मूर्ख और पागल अवश्य हूँ लेकिन उतनी भी नहीं जितना तुम लोग समझते हो। मेरे सीधेपन को तुम लोगों ने मेरी मूर्खता समझ लिया है। पर ऐसा है नही। एक बात कान खोल कर सुन लो मेरे लिए यह मकान मगल कलश सा पूजनीय है और मगल कलश को उच्च आसन पर स्थापित किया जाता है। इसलिए तुम लोगों के हाथों में सौंपने का तो प्रश्न ही नही उठता। भले ही महाभारत सी दूरदर्शिता मेरे विचारों में नही हो लेकिन मैं धृतराष्ट्र की भाति अधी भी नहीं हूँ और न ही मैंने गान्धारी की भाति अपनी आखों पर पट्टी ही बाध रखी है कि इस अधेरे में मैं तुम लोगों के घिनौने षडयन्त्र को नही देख सकू। इतना कहकर मैंने शान्ति को आवाज लगा दी।

तुम्हारे स्वार्थ लोलुप परिवार में तुम्हारे कठोर निर्णय की बडी तीखी प्रतिक्रिया हुई होगी। उसे चुप देखकर मैंनें बात आगे बढाई।

हा हुई ना। उसी रात की बात है मैं बैठी खाना खा रही थी किन्तु मेरा मस्तिष्क अपने बच्चों के घटिया सस्कारों का कारण खोजने में व्यस्त था। मैं हैरान थी यह सोचकर कि कब इन्होनें अपने मन की भूमि पर स्वार्थ के बीज बोये ? कैसे इनके मन कटीली झाडियों से एक दूसरे को लहू लुहान करके आनन्दित होने वाली राक्षसी भावना से भर गये। अपनी ही विधवा निर्बल जननी को आश्रयहीन बनाकर अथाह धनराशि के अधिकारी बनने की नीव कल्पना भी ये लोग कैसे कर सके ? कब और कैसे ये लोग__? अचानक मेरी तन्द्रा भग हुई—

'ओह । ख़ाना खाया जा रहा है ?

'अपने विचारों की दुनिया से वास्तविक जगत में लौटने में कुछ समय लगा। व्यवस्थित होने पर,सामने छोटी बहू को खडे देख मैनें अपनी दृष्टि झुकाई नहीं अपितु उसी की ओर चुपचाप देखती रही। उसने पुन पूछा

'खाना खा रहा हैं ?'

'हा ।'

'किन्तु आपके बेटों में से तो एक ने भी खाना नही खाया है।'

जब भूख लगेगी तब खा लेगें। मैनें उपेक्षा दिखलाई।'

लेकिन आपको खाना समय पर चाहिए।

'हा। शांति और मैं रोज इसी समय खाना खा लेते हैं। इसलिए खाने का समय निश्चित हो गया है। और उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना मैं अपने हाथ धोने चली गई।

हाथ धोकर जब मैं बरामदे में रखी कुर्सियों पर बैठने लगी तो उसने मुझे जोर से धक्का दिया और मैं कुर्सियों के बीच में गिर पडी। मुझे कुर्सियों के बीच गिरा कर रडी वेश्या,हरामजादी जैसी गालियाँ देती हुई मुझे मारने लगी। उसके अनवरत पडते हाथों के प्रहारों और गन्दी गालियों से दु खी मेरा मन रोने लगा। मुझे रोती देख कर उसकी हिम्मत और बढी। उसने पूरे वेग से अपनी बढी हुई टाग मेरी छाती की ओर बढाई। मैनें हिम्मत करके उसकी बढी हुई टाग को पूरे जोर के साथ धक्का दिया। इससे उसका सन्तुलन बिगडा और वह गिर पडी। तभी साक्षात रणचण्डी सी वह मेरी ओर लपकी उठकर उसने मेरे सिर को पकड कर जोर से हिला दिया। मेरी पीठ पर कस कर दो थप्पड लगाये। मैं वृद्धा,अपने देवता स्वरूप पति के घर में उसके द्वारा प्रताडित हुई बस इसी लज्जा से मैं भूमि की ओर सिर झुका कर बैठ गई। मेरी आखों से आसू बहने लगे।'

अरे। मालकिन आप कुर्सियों के बीच कैसे गिर पडी ? उधर आती हुई शान्ति मुझे देखकर चिल्लाई।

'लगता है माजी को चक्कर आ गया।' छोटी बहू मुझे सहारा देती हुई बोली।

बहू ! तुम एक ओर हटो। फिर मुझे उठाते हुए छोटी बहू से पूछने लगी जब तुम पास में खडी थी तो__।'

अब वृद्ध शरीर है चक्कर आ गया तो गिर पडी। आखिर मैं अकेली भी इन्हें कैसे सभालती ? फिर कुछ देर चुप रह कर बोली तभी तो सुबह से समझा रहे हैं मकान बेचो या बटवारा अनुस्वार नही किन्तु शान्ति बिना उसकी बात का उत्तर दिये मुझे अपने कमरे में ले गई। कमरे में पलग पर बिठलाते हुए शान्ति मेरे प्रवाहित अश्रुओं को अपनी तर्जनी से जहा का तहा रोक कर पूछने लगी।

'माजी छोटी बहू मकान के बेचने या बटवारा कर देने की बात क्यों कर रही थी ?'

मैं उत्तर में कुछ नही कर पाई बस मेरी आखों से अश्रु पुन बहने लगे। यह दख शान्ति ने आगे कुछ नही पूछा। मैं चुपचाप पलग पर सो गई। लेकिन आखों के समक्ष छोटी बहू का दुसाहस अट्टाहास कर रहा था। यदि मकान भी इन बेटे बहओं के हवाले कर दिया तो मेरा क्या होगा ? जैसी चिन्ता में ग्रस्त मैं न जाने कब सो गई।

अचानक शान्ति के झिझोडने पर मेरी आख खुली क्या हुआ माजी ! आप रो क्यों रही है ? मैं जागी मेरी चेतना लौटी लेकिन मैं कुछ बोल नहीं पाई। मुझे कुछ न बोलते देखकर शान्ति ने पुन पूछा

क्या हुआ माजी ? आप रो क्यों रही थी। कोई डरावना सपना देखा था ?

हा सपना डरावना था इसी लिए शायद रोने लगी थी। मैंने बात सभाली।

अच्छा अब सो जाइये मैं बैठी हूँ।

'नही नहीं तुम भी सो जाओ। कहते हुए मैनें करवट बदल ली। शान्ति भी सो गई।

शायद छोटी बहू की मार के कारण तुमने भयकर सपना देखा होगा ?

नहा लेखक। सपना डरावना नहीं था। बल्कि सपने में मुझे माधव दिखलाई दिये थे। वे बार बार मुझे मकान को नहीं बेचने की चेतावनी दे रहे थे।

फिर तुम रोई क्यों ?

क्योंकि जब उन्होंने मकान बेचने की मनाही की तो मैं दुखी होकर उनके

गले लग गई। उनके स्पर्श सुख से आनन्दित और अपनी दीन दशा के कारण मैं विह्वल होगई थी। मेरी करुणा मेरी वेदना सब आसुओं के रूप में बहने लग गई थी_।'

ओह! तब तो शाति के जगा दिये जाने पर तुम्हें बहुत दुख हुआ होगा?

हाँ उस समय मुझे ऐसा लगा था मानो किसी ने मेरी समस्त सम्पत्ति छीन कर मुझे एक अकिचन भिखारिन बना दिया है। उस रात जगा दिये जाने पर मैं रात देर तक पति स्पर्श को अनुभूत करती रही थी। यह सोचकर कि वे मेरे ही आस पास है मैं एक नये आत्मविश्वास से भर गई थी।

रात के बाद जब मैं भोर में उठी तो मेरा मन प्रसन्न और खुश था। मैं एक अनिवर्चनीय आनन्द को अनुभव कर रही थी शायद उसका कारण पति द्वारा स्वप्न में दिया गया सरक्षण था। उसी सुबह मैंने एक निर्णय और लिया कि मैं अब छोटी बहू की मार और प्रताडना को अपनी नियति नही बनने दूगी। मन में हिम्मत और विश्वास के जन्मते ही मैंनें सुबह सुबह शान्ति का भेजकर अपने पुत्रों को बुलवाया। तीनों झटपट आ गये। बडे ने बात आरम्भ की। कैसे बुलाया सुबह ही सुबह ?'

शायद माँ को अपना सुझाव पसन्द आ गया हैं। मझले ने अपने मन की बात कही।

उन दोनों के प्रश्न उत्तर सुनकर मैंनें छोटे की ओर देखा। मुझे अपनी ओर देखते देखकर उसने प्रसन्न मन से पूछा मा मकान बेचने का नक्की किया है ना?

बेटों की सकीर्ण मानसिकता का नग्न रूप मुझे पाषाण बनाने के लिए पर्याप्त था। मेरी ममता मरुस्थल बन गई मैंनें कठोर स्वर में प्रश्न किया तुम लोग कब जा रहे हो?

'कहाँ ? बडे बेटे ने आश्चर्य से पूछा।

अपने अपने घर। मेरी मुद्रा अभी भी पूर्ववत थी।'

क्यों यह घर हमारा नही है। तीनों ने एक साथ पूछा। उत्तर में मैं चुप रही।'

जब हमारा काम पूरा हो जायेगा तभी चले जायेंगे। मुझे चुप देखकर बडके ने कहा।

मकान के कागजात जितनी जल्दी सौंप दोगी उतनी ही जल्दी इस घर से चले जायेंगे।' छोटे ने उदण्ड भाषा में उत्तर दिया। देखो मा तुम्हारी उम्र करीब साठ वर्ष की है__?'

'तो ? मैनें बडके की बात बीच ही में काट कर पूछी। तो क्या अर्थ है कि ज्योतिषी के अनुसार तुम्हारी आयु अभी दस वर्ष तक और है। मझले ने एक क्षण भी व्यर्थ गवाये बिना मुझे तो का अर्थ समझा दिया।

क्या तुम लोगों ने ज्योतिषी से मेरी मृत्यु कब होगी यह पूछा ? अरे लानत है मेरी कोख पर जिसने तुम्हारे जैसे पुत्रों को जन्म दिया। वे बन्ध्या औरतें वन्दनीय हैं जिन्होनें मेरी भाति निक्कमी सतानों से धरती का बोझ तो नहीं बढाया। जिनके हृदय में पुत्रवती बनने की लालसा का स्रोत मेरे ममता के स्रोत की भाति सूख तो नही गया है। तुम लोगों के जन्म पर प्रसन्नता से बजाया गया कास्य थाल पुत्र जन्म का हर्षयुक्त उद्घोष नही था अपितु वह मेरे दुर्भाग्य का कर्णभदी टकार था।

मेरे मुँह से कठोर शब्द सुनकर वे तीनो सक्त में आ गये। हम सभी चुप थे। तभी एक विचार मेरे मस्तिष्क में कौंधा 'मेरे जीवन काल में अपने पिता के मकान और उनकी सम्पत्ति को हस्तगत करने के इच्छुक इन स्वार्थी पुत्रों के साथ यदि में भी कोई चाल चलू तो ?

देखों माँ तुम हम लोगों को व्यर्थ ही में दोषी ठहरा रही हो। हमने तो केवल जन्मपत्री दिखलाई थी और उसने __।

'तुम ठीक कहते हो बडके मुझे क्रोध में नही आना चाहिये था। मैनें बीच ही में नम्रता से कहा।

हा मा। तुम नाराज बहुत जल्दी हो जाती हो। छोटे ने मेरी भूल की ओर इगित किया।

तुम कुछ भी समझने की कोशिश नहीं करती हो। अब देखा तुम अकेली यहाँ रहती हो तुम्हारे ऊपर कितना खर्चा होता है__?

'लेकिन उस खर्चे की एक पाई भी तुम नही देते हो अत जब तुम ख़र्चा देते ही नहीं हो तो मेरे कुछ भी खर्च करने पर तुम्हें आपत्ति क्यों ?'

अब देखो पूरी बात सुने बिना तुम फिर बीच में बोलने लगी ना। मझले ने मुझे टोकते हुए अपना पूर्व कथन जारी रखा यदि तुम हम तीनों के पास चार चार महीनों से आती रहोगी तो खर्चा भी कम होगा और उस धन राशि को हम किसी दूसरे काम में लगा सकते हैं_?

वह बोल रहा था और मेरे समक्ष मेरे पुत्रों की रुग्ण मानसिकता स्पष्ट होती जा रही थी। अपनी मा के शोषण के लिए कटिबद्ध इन पुत्रों से इन्ही के जैसा बनकर निपटूगी। भले ही इसके लिए मुझे मेरे स्वाभाव के प्रतिकूल आचरण करना पडे__?

क्या हुआ मा तुम सुन नही रही हो? अचानक मझले ने अपनी बात के खत्म होने पर मुझे अपने ही विचारों में देखकर टोका

मैं तुम लोगों के प्रस्ताव पर विचार कर रही थी।

'क्या निश्चित किया। तीनों की जिज्ञासा समवेत स्वर में मुखरित हुई।

सोचती हूँ तुम लोगों के प्रस्ताव का समर्थन कर दू।'

बडे भैया। मकान खरीदने वाले को बुला लाऊ?' मझले ने उछलते हुए पूछा।

अभी नहीं यह बेचने का काम छ माह बाद करना।

मेरी बात पर तीनों ने आश्चर्य व्यक्त किया 'क्यों छ माह बाद क्यों ?

तब तक तुम्हारे पिताजी का स्वर्गवास हुए भी दस वर्ष हो जायेंगे। मैंने उदास स्वर में उत्तर दिया ।

लेकिन छ माह का अर्थ आधा वर्ष का गुजर जाना है। छोटे ने रोषयुक्त शब्दों में कहा।'

जहाँ इतने वर्ष प्रतीक्षा की है वहाँ तुम लोग क्या छ माह की प्रतीक्षा नहीं कर सकते?

ठीक है माँ ने हमारी बात मान ली है हम लोग भी माँ की यह बात मान लेते हैं। बडके ने फैसला सुनाया।

'सबसे पहिले किसके साथ जाओगी।' छोटे ने पूछा।

'जब छ माह बाद इस घर को सदा सर्वदा के लिए छोडना ही तो है तो छ माह पहिले ही में इस घर को क्यों छोड़ू ? इस घर से मेरा बहुत निजी सम्बन्ध है। तुम सब लोग इस तथ्य से परिचित हो फिर मुझे अभी ले जाने की जिद्द क्यों कर रहे हो ?

'ठीक है मकान के बिक जाने तक तुम इसी घर में रहो । फिर हम लोगों में से किसी एक के पास तो तुम रहोगी ही।

मैनें उन लोगों की ओर देखते हुए प्रसन्नता से हामी भरी । सब लोग प्रसन्न हो गये। उन्हें प्रसन्न देखकर मैंनें शान्ति को पुकारा शान्ति चाय ले आओ ।

मैं सोचता हूँ कल चला जाऊ ? मझले ने मेरी ओर देखकर कहा।

तुम सभी एक दो दिन और रुक जाओ, उसके बाद चले जाना आखिर जाना तो है ही। उन्ही की तरह मैनें भी बात की।

और तीन दिनों तक मेरे वे असस्कारी अमर्यादित और अशिष्ट पुत्र सस्कारी मर्यादित और शिष्ट बन कर मेरे साथ रहे। जाते समय मेरे पुत्र छ माह बाद स्वत ही आ जायेंगे कि घोषणा करते गये ।

उन लोगो के जाने के बाद तुम्हारा जीवन शान्ति के साथ सामान्य रूप से_?

नही लेखक। इस बार मैं सामान्य नही हो पाई। मेरा मन अहर्निश अपने पुत्रों की रुग्ण मानसिकता के कारण चिन्तित रहने लगा था। इसी चिन्ता के कारण मेरे मन की बजर भूमि पर कडवाहट के असख्य कैक्टस उग गये थे । और लेखक। तुम तो जानते ही हो कि जब व्यक्ति भाव शून्य हो जाता है तो वह दुष्कर से दुस्कर कार्य करने में नही हिचकता है।

यही मेरे साथ हुआ। मेरे दुखी वार्धम्य ने अपने पुत्रों को मेरे पति की चल अचल सम्पति से निष्कासित करने का निर्णय ले लिया था।

क्या सचमुच तुम इतनी रूक्ष और कठोर हो गई थी।

हा लेखक। क्योंकि जब सम्बन्धों की स्मृतिया ह्रदय को उद्वेलित नही करे

स्पन्दित नही करे तो एसे नीरस सम्बन्धों को घसीटते रहने का क्या अर्थ ? बस इसी कारण मेरे मन की कडवाहट की अग्नि में समस्त सम्बन्ध जलकर भस्म हो गये और उसी मुट्ठी भर भस्म को प्रवाहित करने के लिए मै गगाजल की खोज में व्यस्त थी कि शान्ति न एक दिन सहसा बिना किसी भूमिका के पूछा इस बार बेटों क परिवारों क जाने के बाद आपका स्वभाव कुछ बदल गया है। आपका मन हर समय किसी गहरे सोच में डूबा रहता हे।

तुमने ठीक जाना। आजकल मेरा जी दुखी रहता है। मैंने बिना ना नू क स्वीकारा।

लकिन माजी। भगवान में मन लगाइय वही जीवन नैया का पार करवायगा। शान्ति ने अपनी बुद्धि क अनुसार मुझे समझाया।

तुम्हारा कहना भी सही है किन्तु आध्यात्मिकता का अर्थ ससार से परामुख होना तो नहीं है। ईश्वर प्राप्ति क प्रयत्न में या परलोक सुधारने क चक्कर में भौतिक जीवन के आवश्यक कार्यों की अवहेलना करना भी तो अनुचित है। जीवन और मृत्यु दो भिन्न अवस्थाए है एक के लिए काम करना चाहिए दूसरी की क्या प्रतीक्षा करनी ? वह तो किसी न किसी दिन आएगी यह निश्चित है। तो क्यों नही उसके आने से पूर्व अपने कार्यों को पूरा कर लिया जाय।'

यह सब मैं क्या जानू माजी। मैंने तो आपको दुखी और चिन्ता म बैठे हुए देखा है तभी यह सब कहा। पश्चाताप करती करती सी वह बोली।

अरे नहीं नही तुम सोच मत करो। तुम्हारा पूछना ठीक ही है। तुम्हारी जगह मैं होती तो मैं भी ऐसे ही कहती।' उसको मैंने समझाकर आगे कहना चालू किया दरअसल मैं दुखी और निराश्रित औरतों के लिए कुछ करना चाहती हूँ। देखो तुम विधवा हुई तो तुम पर मुसीबतों का पहाड टूट पडा। तुम्हार अपने ही सम्बन्धियों ने तुम्हें घर स बाहर निकाल दिया। तुम्हारी ही जैसी न जाने कितनी ही विधवाए है और पति द्वारा सताई गई कितनी दुखी औरतें इस दुनिया में हे जो ठौरहीन होकर कहाँ रहें ? क्या पहिने ! क्या खाय ? जैसी चिन्ताओ में डूबी जीवन को जीने की विवशता के साथ झेलती हैं। उनके कटु अनुभव अश्रुओं की धार में बहते रहते हैं। ऐसी दुखी ओरतों के लिए में कुछकर सकी तो अपने जीवन को धन्य समझूगी।

मैं अपने पुत्र को बुलाती हूँ, शायद वह आपकी कुछ मदद कर सके आखिर पढा लिखा है। कहते कहते शान्ति गर्व से भर गई। मैंने भी मुस्कुराकर स्वीकृति में सिर हिला दिया।

अपने पुत्रों के सकीर्ण विचारों से अवगत होने के पश्चात्, बजाय बैठ कर दुखी होने के आगे बढकर दीन दुखी औरतों की मदद करने का बीडा उठाना वाकई तुम्हारे चरित्र की बहादुरी को दर्शाता है।

हा लेखक। अपने पुत्रों की सकीर्ण मानसिकता से परिचित होने के बाद मैंने अपनी ममता के स्त्रोत को सूखने से नही बचाया। यदि मैं पुन पुत्रों की ममता मे फस जाती तो शायद कीडे मकौडों का जीवन भी मुझसे अधिक सुखकारी होता।

हा तो दो दिन बाद शान्ति का लडका भागीरथ मुझसे मिलने आया मैंने उसे बताया कि मै अपने पति की सम्पूर्ण सम्पत्ति को नारी विकास में लगाना चाहती हूँ। इस काम को पूरा करने मे मुझे किसी अच्छे वकील की मदद चाहिए। मेरी पूरी बात सुनकर उसने एक सप्ताह का समय मागा। मैंने एक सप्ताह का समय देते हुए उसे एक बात कही कि वह मेरी बात को गोपनीय रखे। वह मुझे आश्वस्त करता हुआ चला गया।

एक सप्ताह के बाद भगीरथ मेरे पास आया।

माजी वकील साहब आये हैं।

उन्हें ड्राइगरूम में बिठलाओं मैं अभी आती हूँ। मेरी आज्ञा का अक्षरश। पालन करता हुआ वह उन्हें ड्राइगरूम में ले गया। थोडी देर के बाद मै वहाँ पहुँच गई।

औपचारिक अभिवादन के पश्चात वकील साहब ने शिष्टापूर्वक पूछा मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ।

देखिये मैंएक नारी निकेतन का निर्माण कार्य शुरू करवाना चाहती हूँ_!

क्या स्थान चयन में कोई कानूनी अडचन है।

नहीं नहीं अभी तो भूमि चयन हो नहीं हुआ है। यह सुनकर वकील साहब अपनी वाणी में कहा—

दखिय नारी निकेतन क निर्माण क लिए आप यहाँ की नारी सम्था क अधिकारियों से___।

वकील साहव। म आपम अपन पति की चल अचल सम्पनि स सम्बन्धित बिल लिखवाना चाहती हूँ। मैंन उमका बीच ही में टो टाका।

आह। सॉरी कहता हुआ वह मेरी बात ध्यान से सुनन लगा मैन उस बतलाना आरम्भ किया—

मरे तीन पुत्र है और तीना आर्थिक दृष्टि स सुदृढ ह। मरी मृत्यु क पश्चात मेरे पति की सम्पत्ति क वे तीनों हकदार होंग और यह धन राशि उनके एश्वर्य और वभव का द्विगुणित कर दगा। इस लिए म इस धन राशि का उपयाग समाज के हित के लिए करना चाहती हूँ इस विचार को अन्तिम रूप देने क लिए मं मर पुत्रों का अपन का अपने पति की चल अचल सम्पत्ति से निलम्बित करना चाहती हूँ।

आप सोच लीजिये बहुत बडा कदम उठा रही है। वकील ने अपनी समहति दी।

आपकी सलाह अपने स्थान पर सही है। किन्तु यदि मरे पुत्रा का आर्थिक पक्ष कमजार होता ता मै एसा कठोर निर्णय कभी नही लेती। इस लिए बहुत सोच समझ कर मै इस निर्णय पर पहुची हूँ।

ठीक है मैं परसों आऊगा। उस दिन आप एक गवाह को अवश्य बुला ले। आवश्यक परामर्श निर्देश देकर वकील चला गया।

वकील के जान पर तुम्हें गवाह की चिन्ता...? नही नही मरे पति के एक बहुत अच्छे दोस्त को मैन बुलवा लिया था। इस लिए गवाह सम्बन्धी परेशानी या चिन्ता हुई।

तीसरे दिन वकील बिल के साथ हाजिर हुआ मेरे पति के मित्र ने अपने हस्ताक्षर कर दिय। मरे हस्ताक्षर के बाद वकील ने बिल का नोटेरी पब्लिक में रजिस्ट्रेशन करवा दिया।

विश्वास नही होता तुम्हारे जैसी सीधा सरल दुनियादारी से अनभिज्ञ अपनी ही बहू के हाथा प्रतिपाडित अपमानित औरत इतनी दूरर्शी ओर कठार भी हो

सकती हूँ।

लेखक । जब अच्छा शक्ति और कठिन परिश्रम का सयोग हो जाये तो व्यक्ति के लिए कुछ भी असम्भव नही रहता। मेरे साथ भी यही हुआ। जायदाद सम्बन्धी सभी कार्य से निश्चित होते ही मे शहर के नारी सस्था के सचालक से मिली। मेरे विचारों से व अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्हा के अथक प्रयास एव सहयोग से उन्ही के कार्यालय से जुडा हुआ निर्जन विस्तृत भूखड मेने खरीद लिया। भूमि पूजन अत्यन्त गापनीय रखा गया। लेखक । तुम आश्चर्य करोगे कि सचालक महोदय के अथक प्रयत्न स चागुने मजदूरों ने साल भर से अधिक अवधि के काम को पाँच महा में ही पूरा कर दिया।

आशचर्य ह इस निर्माण कार्य की खबर तुम्हारे पुत्रा क कानों म नहा पडी।

लेखक। यदि विधाता का साथ हो तो कर्म स्वय फलीभूत हा जाता है। नारी सस्था से मरा नारी निकेतन बहुत दूरी पर नही था। शहर की जनता यहा जानती थी कि नारी सस्था ही इस नारी निकेतन का निर्माण करवा रही है। इस भ्रम के कारण मेरा यह निर्माण स्वप्न बिना किसी रूकावट के पूरा हो गया था। किन्तु नारी निकेतन का उद्घाटन मेरे कर कमलों के द्वारा हुआ जिसकी चर्चा मरी तस्वीर के साथ अखबार के मुख पृष्ठ पर हुई थी। अपन पिता क नाम पर रखा गया नारी निकेतन का नाम और उद्घाटन करती माँ की तस्वीर दूर बैठे पुत्रों के समक्ष इस नारी निकतन का रहस्योद्घाटन करन के साथ २ उन्हें निमन्त्रित भी कर बैठी।

तब ता वे लाग गुड के आकर्षण में बधी मक्खियों की भाति दौडे चले आये होगें।

तुम्हारा अनुमान सही है। अगले दो ही दिनों में मरे तीनों पुत्र सपरिवार उपस्थित हो गय

माँ। तुमने यह क्या किया ? छोटे ने प्रश्न किया।

क्या किया बालो। मैंनें बिना घबराये पूछा।

तुमने महीनों का समय मागा था। हम लाग तुम्हारे शब्दों पर विश्वास करक चल गये और तुमने हमारी अनुपस्थिति में हमारे पिता की सम्पति ही गया दी। बड बट ने आवाश व्यक्त किया।

सम्पत्ति गवा दी ? यह क्या कर रहे हो तुम ? मैंनें ता सही अर्थों में तुम्हारे पिता की सम्पत्ति का सदुपयोग किया हे।

पिता की सम्पत्ति को सामाजिक सस्था के निर्माण में खर्च करन को धन का सदुपयाग कहती हो। छुटका क्रोधित हुआ।

'तुम लोगो को धन की आवश्यकता नही थी लेकिन इस शहर में कितनी ही ऐसी विधवाए और दुःखा स्त्रिया है जिनके जीवन में कोई अन्तर नही है। ऐसी दुःखी स्त्रियों के लिए यदि आवास और कार्य की व्यवस्था मैंनें कर दी हे तो तुम लोगों का ता खुश हाना चाहिए कि तुम्हारी अनपढ और मूर्ख माँ भी समाज के उद्धार क लिए कुछ कर सकी। इस नारी निकेतन के निर्माण के खर्च और परिश्रम का भार ता मैन तुम तीनों पर नही डाला फिर क्यों तुम लाग अपना जी छोटा कर रहे हा।?

तुमने अच्छी की छाटा करन की बात पूछी अरे हम लाग तो इस घर में रहते हुए तुम पर जो खर्चा हा रहा था उसे कम करवान क लिए प्रयत्नशील थे लेकिन तुमने तो सारी धनराशि...?

किन्तु क्यों ? क्यों मरे ऊपर हाने वाले व्यय की कटौती करना चाहते थे ? मैनें मझले को आगे बोलन मे रोकते हुए बीच में ही पूछा

सीधी सी बात है हमें मिलन वाली धन राशि और बढ जाती। मझले ने कहा।

वाह बेटे तुम्हारे क्या विचार है। अर तुम लोगों की गिद्द दृष्टि मेरे व्यय पर ही टिकी रही। कभी इस सकीर्णता से पल भर के लिए परे हट कर मेरे बारे में साचा होता कि यदि यह अपनी जमा धन राशि तुम तीनों के नाम कर देगी तो इसके जीवन यापन का खर्चा कौनसा पुत्र देगा। ऐसी स्थिति के उत्पन्न होने पर एक एक पैसे की मोहताज मुझमें और इसी गली में नुक्कड पर बैठने वाले भिखारी में क्या अन्तर होता।

किन्तु अपने पुत्रों को बिना सुचित किये विधवा औरतों के आवास की चिन्ता की आवश्यकता आपके समक्ष क्यों आ पडी। विधवा औरतों के आश्रय की चिन्ता करके आपने कौनसी बुद्धिमता का परिचय दिया है। क्या उनके बेटे बहू या अन्य सम्बन्धी नही हैं—

नारि किसी भी दुखी निराश्रित स्त्रियों के सामने आगाम जैसा प्रदान अनगार की भांति मुझे मानकर उस निकेतन का प्रयत्न नहीं कर। यही बात संबंधियों की तो न लोग उस हानि लाभ की कसौटी पर कस कर एक वस्तु का रूप दे देते हैं। जब हाड मांस की माता अपने ही पुत्रों द्वारा केवल एक वस्तु बना दिया जाता है तो सम्बन्धों के अर्थ ही खत्म हो जाते हैं। इस लिए मेरा यह नारी निकेतन— ?

क्या नारी निकेतन नारी निकेतन की रट लगा रखी है। किसके काम आयेगी यह इतनी बड़ी इमारत ? बिना बात के सारा पैसा फूंक दिया। छोटी बहू मेरी बात काटकर पुन चिल्लाई

अरे बहू । अपने सधवा जीवन के सोने से दिनों और चांदी रातों के बीच क्या मैंने कभी अपने इस रात कलपते वैधव्य की कल्पना की थी। भविष्य_? छोटी बहू मेरी बात काटकर) चिल्लाई।

बहू । तुम नासमझ ही नहीं महामूर्ख भी हो। अरे ! तुम तो स्वयं पुत्रवती हो क्या कभी नाराज होने पर तुमने अपने पुत्र के अकल्याण की कामना की है। यदि नहीं तो मैं भी अभी इतनी अभागिन नहीं हुई हूँ कि मुझे अपने ही पुत्रों के अमंगल की कामना करनी पड। एक बात और स्पष्ट कर दूं, मैं श्राप देने के बजाय सम्बन्ध ताडन में विश्वास करती हूँ फिर कभी इस झूठे कलंक को मत दोहराना। और आज तुम सबके सामने मैं तो प्रभु से एक ही प्रार्थना करती हूँ कि ईश्वर तुम लोगों के जीवन से वे सब दुख दर्द पीडा व्यथा अनचाहा एकान्त अपमान और नारकीय वैधव्य दूर रखे जिन्हें मैंने नितान्त एकान्तवासिनी बनकर तुम लोगों के घरों की निर्मम और बरहम दीवारों के बीच जीने की विवशता के साथ झेला है_?

बस बस माजी। आप अपनी मंगलकामनाये स्वयं तक सीमित रखें। यदि हमारे भाग्य में वैधव्य की काली रेखाए लिखी हुई है तो आपकी प्रार्थनाओं से वे मिट नही जायगी। माजी। आप तो ऐसी प्रार्थनाए करें जिनसे आपका भला हो आप अपने भले की चिन्ता कीजिये। छोटी बहू ने तीखे व्यग्य छोडे।'

छोटी बहू को छोडकर मैंने अपने पुत्रों को सबोधित किया तुम लोग अपने अपने क्रोध को छोड दो। हां यदि मैंने तुम्हारे द्वारा उपार्जित धन का समाज के

लिए सदुपयोग किया होता तो तुम लोगो का क्रोध उचित था। किन्तु यहाँ तो मैने अपने पति की सम्पत्ति का उपयोग किया है। बस एक बात और बता दू मैं तुम लोगो के घरो के आतिथ्य का स्वाद अभी तक भूली नही हू। शायद इस नारी निकेतन के निर्माण के पीछे सतान द्वारा पीडित मातृत्व का उसमें स्थित नारी शक्ति से परिचय करवाना जैसा मूल उद्देश्य रहा है।

आप अपने अपमानित मातृत्व का तो सम्मान दिलवाने में सफल हो गई क्या ? छोटी बहू ने अथक प्रयत्न से थपकी देकर सुलाये गये मेरे अपमान को पुन जगा दिया।

छोटी बहू। व्यक्ति किसी विवशता के कारण ही दूसरे का जुर्म और अन्याय सहता है। विवशता के परे हटते ही वह अपने प्रति किये गये व्यवहार का ढिढोरा पिटने से भी पीछे नही हटता है।

"किस जुर्म की बात कर रही हो मा ? बडे पुत्र ने पूछा।

मैं अपने हृदय में छुपी पीडा और व्यथा को बाहर निकालने के लिए स्वय को तैयार कर रही थी कि तभी शान्ति ने आकर नारी निकेतन के अध्यक्ष और नारी विकास सस्था के सचिव के आने की सूचना दी। यह सुनकर मैं तत्काल उन लोगों से मिलने के लिए चल पडी।

कमरे में जाकर मैं उन लोगों के साथ नारी निकेतन के आवश्यक कार्यों को निपटाने की सूची बनाने में व्यस्त थी तभी अचानक मेरे तीनों बेटे बहुओं ने कमरे में प्रवेश किया। उन्हें यो अचानक कमरे में आया देखकर मैं घबरा गई। फिर भी हिम्मत करके मैंने अपने बेटे बहुओं का परिचय अध्यक्षजी एव सचिव से करवाया। आपसी अभिवादन के आदान प्रदान के उपरान्त अध्यक्षजी ने कहा आप लोगो ने अपने पिता की सम्पत्ति का उपयोग नारी उद्धार के लिए करके समाज के समक्ष एक ज्वलन्त उदाहरण रखा है। वास्तव में आप लोगों का यह कृत्य स्तुत्य प्रशसनीय एव प्रेरणादायक है।

अध्यक्षजी से पुत्रों की प्रशसा के दो शब्द सुनकर सचिवजी भी बिना बोले नही रह सके दरअसल नारी उद्धारकों की दृष्टि में यह कार्य तो किसी महान तप और यज्ञ से कम नही है।

अध्यक्षजी एव सचिवजी द्वारा पुत्रों की प्रशसा सुनकर मेरा हृदय प्रसन्न हुआ। तभी मैंने देखा कि व सब वहाँ पर बैठ गय। उन्हें बैठते देखकर मेरा हृदय अनेक शकाओं स भर गया। यदि कही इन लोगों ने मेरी यत्न स बनाई सामाजिक प्रतिष्ठा पर कीचड उछाल दिया तो_? और मैं काप गई। तभी मैंने बडक की आवाज सुनी—

वार क्या प्रशसा की ह आपन ? भूमि पूजन स नारी निकेतन के निर्माण तक की सूचना ता आप लागों ने हम लागों का दा तक नहा। और आप कहते हैं कि_।

नहा नहा आप दुख नहा मनायें। दरअसल आपकी माताजी इस भवन निमाण का सूचना अत्यन्त गापनीय रखना चाहती थी_?

लकिन क्यों? किसके भय से भयभीत थी हमारी माताजी? छोटे का स्वर तीक्ष्ण हो गया।

इतन बर्ड भवन के निर्माण कार्य को गापनीय रखना क्या माताजी के मन में छुपे किसी छल कपट का व्यक्त नही करता? मझले ने सीधा प्रहार किया।

यह सुनकर व दोनों सज्जन मेरी ओर देखने लगे। मैंने उन्हें ढाढस बधाने के लिए कुछ कहना चाहा तब तक मझला पुन कहने लगा वैसे इस भवन निर्माण में आप दानों ने कितना रुपया बनाया है?

हम लोगों ने पैसा बनाया है। दानों की वाणी आश्चर्य और दुख में डूबी हुई थी।

हा हा आप दोनों न वरना केवल छ माह में नारी निकेतन जैसी विशाल इमारत का निर्माण कैसे हो गया?

शायद आप नही जानते कि छ माह में दो वर्ष का काम पूरा हा जाये इस लिए चार गुणा मजदूर अधिक रखे गये थे।

वाह क्या दलील दी है।

आप लोग जो भी समझे समझते रहें इससे हमारी प्रतिष्ठा पर कोई आच नही आने वाली है। फिर मेरी आर उन्मुख होकर बोले बहिनजी। हमने ता आपके स्वभाव को देखा था। बस आपकी सादगी आर लगन को देखकर हम

लोगों न आपकी मदद की थी। यदि हमें मालूम होता कि आप जैसी सहृदया महिला ऐसे पुत्रों की माँ है ता...?

अरे इससे क्या बातें करते हो। हिम्मत हो तो मेरे से बातें करो। मयले को यो गाली गलौच पर उतरते देख मेरा माथा शर्म से झुक गया। मैं कुछ कहती इससे पूर्व ही वे दोनों महानुभाव मुझे नमस्कार करके चले गये। तभी मैंने सुना छोटी कह रही थी—

मैंने कितनी बडी भूल की जो इसे मैंने मेरे घर से भेजा। अपनी चहारदीवारी में कैद करके तो कम से कम आज यह दिन तो नहीं देखना पडता। वही पड पडे मर जाती।

लेकिन मैंने उसके अनर्गल प्रलाप को अनसुना करते हुए अपने पुत्रों से कहा अरे तुम लोग यह अनर्थ क्यों कर बैठे? केवल अर्थ प्राप्ति के लिए संस्कारों के चिथडे चिथडे करके उडा दिये। यह क्या तुम लोगों ने मेरी प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिला दिया? उनके पिता के मरने के बाद से आज तक तुम लोग नहीं चाहते थे कि मैं तुम लोगों के घर पर रहू तो मैंने यहाँ अपने पति के घर में रहना शुरू कर दिया।लेकिन तुम लोगों को मेरा आराम मेरा चैन सहन नही हुआ। तुम लोग यहाँ आ आ कर मेरे खाने पीने के खर्चे पर पाबन्दी लगाते रहे। किन्तु तुम लोग इससे भी सन्तुष्ट नहीं हुए और तुम लोगों ने मकान को बेचने का निश्चय कर लिया था। लेकिन मैं पुन तुम लोगों के घरों का नर्क तुल्य जीवन नहीं जीना चाहती थी। बस उसी नर्क से बचने के लिए मैंने नारी निकेतन का निर्माण करवाया। यदि अपने ही पति की धन राशि का उपयोग करना अपराध है तो यह अपराध तो तुम लोगों की पत्नियाँ भी कर रही है फिर मैं ही क्यो दोषी हूँ? हे प्रभु! तुम बतलाओ मैंने क्या अपराध किया है। ओह माधव। मुझे लगा कि मेरे शब्द मुझसे छिनते जा रहे हैं और धीरे धीरे मेरी चेतना लुप्त होने लगी। *बस लेखक विक्षिप्तावस्था की स्थिति में पहुचते २ मैं निश्चेस्ट हो गई।*

आश्चर्य है। जो पीडा तुम्हें जीवन पर्यन्त सताती रही जिस पीडा को व्यक्त करवाने के लिए तुम मेरे पास आई हो उसी पीडा को व्यक्त करने के अन्तिम क्षण में तुम रंगमच से ही लुप्त हो गई।

हा लेखक । और अब मै चाहती हूँ कि मेरे बेटे बहुओं के निष्ठुर एव अमानवीय व्यवहार से उत्पन दु ख को तुम शब्द दो । बोलो लेखक । तुम मेरी व्यथा को अपनी लेखनी की नोक स सजाओग ना बोल लखक । मेरी पीडा को अपन शब्दों से मुखरित करोगे काष मेरे दु ख को शब्द दोगे ना ? यह क्या लेखक ? अब तक तुम एक वाचाल श्रोता की भाति मेरे साथ थे अब अचानक तुम मूक क्यों हो गये ? उठो लेखक । अपनी कुर्सी से क्यों चिपके बैठे हो । उठ कर मुझसे वादा करो कि तुम लिखोगे । अवश्य लिखोंगे । उठो लेखक । उठो ।

और मैनें उठने की मुद्रा अख्तियार कर ली ।

अभी कही बाहर जाने की तैयारी कर रहे हो ? पत्नी की आवाज से चौंकता हुआ मैं पुन कुर्सी पर बैठ गया ।

वाह ।यदि मै यह जानती होती कि तुम आज समय से पूर्व ही अपनी कुर्सी से उठ जाओगे तो मै तुम्हारे लिए यहाँ चाय लेकर नहा आती । पत्नी के मन की झुझलाहट शब्दों में उतर गई ।

आज तुम साध्य समाचार पत्र लाना भूल गई ? पत्नी की झुझलाहट से विचलित हुए बिना मेंनें उससे पूछा ।

अभी लाता हूँ। अपनी गलती स्वीकारती पत्नी उन्हीं पैरों वापस लौट गई ।

पत्नी के कमरे से बाहर जाते ही मैनें बायें कान की ओर देखा कोना रिक्त था । मेरी सखि । वह कथावाचक कहाँ लुप्त हो गया ? के प्रश्न के साथ मैनें पुन कोने की ओर देखा । वहाँ कोई नहा था । मैं आश्चर्य और चिन्ता में पड गया । उस कोन की आर देखते दखते मेरे मन में एक विचार उपजा और मैनें अपनी लखनी को मेज पर पडे पृष्ठ पर टिका बाय कोने की ओर देखा । किन्तु थोडी प्रतीभा क बाद भी वहाँ किसी अस्पष्ट आकृति का न देखकर मरा मन खिन्न हा गया । मैं विह्वल होकर सोचने लगा कुछ देर पहिले इसी कोने में खडी अपनी व्यथा कथा सुनाकर मुझसे उसे लिखने का वादा ले रही थी । वह मेरी लेखनी को अपने श्राप स मुक्त कर कहाँ चली गई ? और क्यों चली गई ? तभी किसी क आने की आहट सुनी । म प्रसन्न मन मे पीछे की ओर पलटा । किन्तु पत्नी का आते दखकर खिन्न हा गया ।

यह लो तुम्हारी चाय भूल से साथ ही ले गई थी और यह लो तुम्हारा साध्य समाचार पत्र। कहते हुए समाचार पत्र को टेबल पर पटक कर वह कमरे से बाहर जाने के लिए मुड गई।

पत्नी द्वारा अखबार पटक दिये जाने पर अखबार मुड गया। अखबार को सीधा करते समय मैं अचानक चौक गया माधव नारी निकेतन की सर्वेसर्वा श्रीमती माधव की आज दोपहर में हृदय गति रुक जाने से मृत्यु हो गई। उनके द्वारा किया गया__? आगे के शब्द मेरी डबडबाई आखो के धुधलके मे खो गये। अपने हृदय के खालीपन से दुखी मैंने भराई आवाज में बहुत धीरे से पुकारा सखि ।